

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
अघ	१	गत्याक्षेपे (अथवा) गतिनिन्दारभजनेषु	अघतेमृगः	इ-इ
अच	१	पूजने	अञ्जति (वा) अचते	अ-इ
अच	१	गतिपूजनयोः	अञ्जतिकृष्णम्	उ इ
अञ्ज	१०	व्यक्तायां वानि	अञ्जयति	क
अञ्ज	१	म्लेष्टोक्तौ	अञ्जति	उ
अञ्ज	१	गतिपूजनयोः	अञ्जति (वा) अञ्जते	अ उ
अञ्ज	१	विशेषणे	अञ्जयति	उ क
अञ्ज	१०	आयामे	अच्छति	इ
अञ्ज	१	गतौ (त) क्षेपे	अजति	अज.
अज	१	भासि	अञ्जयति	क इ
अज	१०	अक्षणाकान्तिगतिषु	व्यनक्तिविद्यांसाधुः-अ-	घ उ जि
अज	७		भ्यनक्ति तैलेनागं.	
अट	१	गतौ	अटति पर्यटनं	ह
अट्ट	१	अतिक्रमे	अट्टते विप्रं यवन.	क
अट्ट	१०	अनादरे	अट्टयति अट्टः	
अठ	१	गतौ	अठति	इ ह
अठ	१	गतौ	अण्ठते	न र
अड	५	व्यापने	अड्ढोति	
अड	१	उद्यमे	अडासि धनाय	
अड्ड	१	अभियोगे	अड्डति ज्ञानं मुनिः	

धातु.	गण	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
अण	१	शब्दे	अणति	-
अण	४	प्राणने	अण्यते	य ङ
अत	१	सातत्यगमने	अतति लोकं हरिः आत्मन् आत्मा	
अत	१	चन्धने	अन्तति द्रुष्टं राजा	इ
अद	२	भक्षणे	अत्ति (वाअदति १) मो- दकं कृष्णः	ल औ
अद	१	चन्धने	अन्दति द्रुष्टं राजा	इ
अन	४	प्राणने	अन्यते क्लेशेन भिक्षुः	य ङ
अन	२	प्राणने	अनिति प्राणः	ल घ
अन्ध	१०	दृक्क्षये	अन्धयति-अन्धः धा-धं.	क त
अव	१	शब्दे	अंवते शिशुः	ङ इ
अम्बर	११	संभरणे	अंवर्यतियोपितं प्रियः	ट
अभ	१	शब्दे	अम्मते अम्भः	ङ इ
अभ्र	१	गतौ	अभ्रति अभ्रं	
अम	१	गतिभजनशब्देषु.	अमति	
अम	१०	रोगे	अमयति	
अम्ब	१	गतौ	अम्बति	
अय	१	गतौ	अयते-अयस्	ङ
अरर	११	आराकर्मणि	अरर्यति रथकारो रथाय	ट
अर्क	१०	स्तवने	अर्कयति अर्कः	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
अर्घ {	१	हिंसायां (अथवा) मूल्ये	अर्घति	अर्घः
अर्च	१०	पूजायां	अर्चयते (तथा) अर्चयति	क ड
अर्च	१	पूजायां	अर्चते (तथा) अर्चति	क
अर्ज	१०	प्रयत्ने (त) सं- स्कारे	अर्जयति धनं उपार्जनं	क
अर्ज	१	अर्जने	अर्जति धनं उपार्जनं	
अर्ध	१०	याचने	अर्धयते याचकोऽर्थ- ना अर्थः	क त ड
अर्द	१	हिंसायां	अर्दति (वा) अर्दते अ- र्दयति अर्दते	अ
अर्द {	१	पीडागतियाचनेषु	रक्षःसहस्राणि चतुर्दशा- र्दत् अर्दति तीर्थं यतिः श- रद्वघनं नार्दति चातकोपि	
अर्द	१०	हिंसायां	अर्दयति (वा) अर्दयते	क अ
अर्व	१	हिंसायां गतौ च	अर्वयति	
अर्व	१	हिंसायां	अर्वति	
अर्ह	१	योग्यत्वपूजनयोः	अर्हति	
अर्ह	१०	पूजायां	अर्हयति-अर्हणा	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
अल	१	भूषणपर्याप्तिवार- णेषु	अलति (वा, अलते) के- शं माल्येन अलति कंसाय कृष्णः अलतिचोरं राजा	व
अव	१	पालने (त) प्री- णने	अवति	
अवधीर	१०	अवज्ञायां	अवधीरयति	क त
अश	९	व्यासौ (त) सं- हृतौ	अश्नुते विश्वं हरिः	न ङ ऊ
अश	९	भोजने	अश्नाति	ग
अंशः	१०	समाघाते	अंशयति द्रव्यं भ्रातृवर्गः अंश	क त
अप	१	दीप्तिगतिग्रहेषु	अपाति	
अस	१	दीप्त्यादानयोः	वासुदेवं परित्यज्य यो- ऽन्वदेवमुपासति (वा) उपासते	व
असू	११	उपतापे	असूयति	ट
अस्	११	उपतापे	अस्यति	ट
असू	११	उपतापे	अमूयति (वा) असूयते	व ट
अस	२	भुवि	अस्ति हरिः	ल
अस	४	क्षेपणे	अस्यति शरं शूरः अस्त्रं न्यासः	य ऊ इ र

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
अंस	१०	समाधाते	(यथांशः प्रथमागतः)	क त
अह	१०	भासे	अंहयति	क इ
अह	१	गतौ	अंहते	ड इ
आछ	१	आयामे	आछति चरणं वामनः	इ
आंदोल	१०	आंदोलने	आंदोलयति	क त
आप	१	लंभने	आपनि	लृ
आप	१०	लंभने	आपयति धनं जनः	क लृ
आप	९	व्याप्तौ	आप्नोति भुवनं विष्णुः	न लृ
आम	१०	रंगे	आमयति	क
आशास	२	इच्छायां	मोक्षमाशास्ते मुनिः	उ
आस	२	उपवेशने	आस्तेगृहे	ल ड नि
इ	२	गतौ	एति पथिकः आय	ल
इ	२	अध्ययने	वेदमधीते शिशुः	ल ड
इ	२	अधिउपसर्गे स्मरणे	अध्येति गोकुलं कृष्ण	ल
इ	१०	अधिउपसर्गे स्मृत्यां	अध्यापयति	क
इख	१	गतौ	एखति	
इख	१	गतौ	इंखति	इ
इग	१	गतौ	एगति	
इग	१	गतौ	इगति	इ
इट	१	गतौ	एटति	
इद	१	परमैश्वर्ये	इन्दति इन्दः इन्दुः	इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
इध	७	दीप्तौ	इधे वन्हिरिधनेन	य ड ई वि
इभ	१	संवाति	इभयते	क ड इ
इर	११	इर्ष्यायां	इर्ष्यति (वा) इर्ष्यते	अ ढ इ
इरज	११	इर्ष्यायां	इरज्यति	ट
इरस्	११	इर्ष्यायां	इरस्यति	ट
इल	१०	प्रेरणे	प्रेलयति	क
इल	६	गतौ (त) क्षये	इलति पांथः एलिप्यति	श
		क्षेपे	इला एला	
इला	११	विलासे	इलायति	ट
इव	१	व्याप्तौ	इवति विश्वं विष्णुः	इ
इप	४	गतौ	इप्यति	
इष	६	वाञ्छायां	हरिभक्तिमिच्छतिविप्रः	श
			इच्छा	
इष	९	आभिक्षये	इष्णात्पन्नं शिशुः अन्वे-	ग
			षणं	
इ	४	गतौ	इयते	ड
इ	२	कान्ति गतिव्याप्ति	इति (इत्यादि)	ल.
		तेषमजनसत्तादनेषु		
ईक्ष	१	दर्शने	न कामवृत्तिर्वचनीयमीक्ष- ते निरीक्षणं निरीक्षि- ष्यामि	ड

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
ईक्ष्य	१	ईर्ष्यायां	ईक्ष्याते	
ईख	१	गतौ	ईखति	इ
ईज	१	गतौ	ईजते ईर्जाचक्रे	इ
ईज	१	{ गतौ (तथा) कु- त्सायां	ईजति (वा) ईजते	ई व
ईड	१०	स्तवने	ईडयति	क
ईड	२	स्तुतौ	ईष्टेहरिप्रः	ल
ईत	१	बन्धने	ईन्तति	इ
ईर	२	गतौ कंपनेच	ईर्त्ते समीर.	ल
ईर	१०	प्रेरणे क्षेपेच	ईरयति गजं यन्ता	क
ईर	१	प्रेरणे	ईरति	
ईर्ष्य	१	ईर्ष्यार्थे	ईर्ष्यति साधुं पापी ईर्षा	
ईश	२	ऐश्वर्ये	ईष्टेराजा ईशः ईश्वर. ऐ- श्वर्य	ल इ
ईष	१	उञ्छे	ईषति	उ
ईष	१	गतिदर्शनहिंसा- दानेषु	ईषते पांथः	
ईह	१	चेष्टायां	समीहते धर्माय साधुः	इ
उ	१	शब्दे	अवते अविः	इ
उक्ष	१	सेचने	उक्षति उक्षा (उक्षन्)	
उत्त	१	शोषणालमर्थयोः	ओत्सति हिमेन वृक्षः	ऋ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
उख	१	गतौ	ओखति उखा	
उख	१	गतौ	उंखति	इ
उच	४	समवाये	उच्यति बंधुना बंधुः ओक	य
उछ	६	उछे	उंछति धान्यं	श इ
उछ	६	{ निवासे (अथवा) वर्जने बन्धने-समाप नेअतिक्रमे	उछति	श इ
उज्झ	६	त्यागे	उज्झति त्वचं सर्पः	श
उठ	१	उपधाते	ओठति	
उन्द	७	क्लेदने	उनत्ति गंगाजलेन गात्रं यतिः उदकः	ध ई
उड्ग	६	उत्सर्गे	उड्गति त्वचंसर्पः उड्गांच- कार उड्गः	
उध्रस्	१०	उञ्छे	उध्रासयति कणान्भिक्षुः	क
उब्ज	६	आर्जवे	उब्जति कुब्जां कृष्णः	श
उभ	६	पूरणे	उभति धनेनार्थिनं कर्णः उभयं	श
उंभ	६	पूरणे	उंभति	श प
उरी	६	उद्यमने	उरते	इ ई श
उरस्	११	बलार्थे	उरस्यति	ट

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
उर्णु	२	आछादने	उर्णोति (वा) उर्णुते	ल ड
उर्द	१	{ माने (तथा) क्री- डायां आस्वादे	उर्दतेस्वर्णं स्वर्णकारः	
उर्व	१	हिंसायां	उर्वति	इ
उप	१	दाहे (तथा) वधे	ओषति	
उपम्	११	प्रभातीभावे	उपस्यति	ट
उह	१	अर्दे	उंहति	इ
ऊठ	१	उपपत्ति	ऊठति	
ऊन	१०	परिहाणे	ऊनयति घृतं भोक्ता	क त
ऊय	१	{ तंतुसंताने (अथ- वा सेवेने	ऊयते वस्त्रं तंतुवाय. ऊनं	ड ई
ऊर्ज	१०	बलप्राणधारणयोः	ऊर्जयति धार्मिकः	क
ऊर्णु	२	आछादने	ऊर्णोति (तथा) ऊर्णुते	ब ल
ऊष	१	रुजायां	गगनं मेघः ऊपति रोगो देहं ऊषः ऊपरः	
ऊह	१	वितर्के	ऊहते शास्त्रे बुधः समूह अमुक्तमप्युहति पंडितो जनः	ड
ऊ	१	प्रापणे	अरति यतिर्विष्णुं आर-	
ऊ	३	गतौ	इयति	लि र

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कृ	१	हिंसायां	कृणोति	न र
कृक्ष	१	जिघांसायां	कृक्ष्णोति	न र
कृच	६	संवरणेनुत्यां	कृचति हरिं बुधःकृक् (वा)कृच्	श
कृच्छ	६	(गतोन्द्रियप्रलयमू- र्तिभावेषु	कृच्छतिवृद्धःकृच्छतिशी- तेनघृतं	श
कृच्छ	१	गतौ	कृच्छति	
कृज	१	(गतौ (अथवा) स्थैर्ये-उर्जने अर्जने	अर्जते	ङ
कृज	१	भ्रजे	कृजते	इ ङ
कृण	८	गतौ	कृणोति (वा) कृणुते कृतं	द ज उ
कृत	१	(स्पन्दनैश्वर्यवृणाग- तिषु	अर्त्तति	
कृत	२	(जुगुप्सायांरुपा- यानि	कृतीयते दुर्वले धनी सौत्रः	ल
कृध	१	वृद्धौ	कृध्नोति धर्मेण विप्रः कृ- द्धः धा धं	न उ
कृध	४	वृद्धौ.	कृध्यति अधिप्यति कृ- द्धः धा-धं	उ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
ऋफ	६	हिंसायां (अथवा) दानेच्छाघायांनिदा यां युद्धे	ऋफति	श
ऋंफ	६	हिंसायां	ऋंफति	श
ऋप	१	आदानसंवरणयो.	अर्पति, वा)अर्पते ऋपभ	
ऋप	६	गतौ	ऋपति ऋपि	श ई
ऋ	९	गतौ	ऋणाति	ग मि
एज	१	कम्पे	एजति	ऋ
एज	१	दीप्तौ	एजते	ऋ ह
एठ	१	बाधने	एठते	ह
एध	१	वृद्धौ	एधतेधर्मेणसाधु. एधः ऐ- धम्	ह
एला	११	विलासे	एलायति	ट
एष	१	गतौ	एषते	ऋ ह
ओख	१	शोषणालर्मययो.	ओखति	ऋ
ओज	१०	बलतेजसोः	ओजयति	क त
ओण	१	अपनयने	ओणाति धनं चौरः	
ओलड	१	उत्क्षेपे	ओलण्डति	इ
ओलड	१०	उत्क्षेपे	ओलण्डयति	क इ
कक	१	(लौल्ये (अथवा) इच्छागर्वचापले	करुते काकः	ह

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कक	१	गतौ	कङ्कते	इ इ
कक	१	हसने	ककति	
ककख	१	हसने	ककखति	ए
कक	१	हसने	ककति	
कख	१	हसने	कखति कखि:	
कग	१	संवरणे	कगति	ए
कच	१	बन्धने	कचते केशं नारी कचः विकचः	
कच	१	रवे	कचति	
कच	१	दीप्तौ	कच्चते	इ इ
कट	१	गत्यां	कटति	
कट	१	गतौ	कटति	
कट	१	कृच्छ्रजीवने	कटति	
कट	१	वर्षावरणे	कटति कटेन गात्रं गो- रक्षकः कटः	ए
कट	१	गतौ	कटति कण्टकं	
कठ	१	तंकने	कण्ठति	
कठ	१	शोके	कण्ठते	ऊ इ
कठ	१	शोके	कण्ठति	इ
कठ	१०	शोके	कंध्यति कण्ठः कण्ठं कण्ठा कण्ठी	क इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कड	१	मदे	कडति धनेन	
कड	१०	भेदे (तथा) रक्षणे	कण्डयति	क इ
कड	६	मदे (तथा) अदने	कडति धनेन मूर्खः	श
कड	१	मदे	कण्डते धनेन मूर्खः	इ इ
कड	१	तुषापकरणे	कण्डते तंदूलं स्त्रो	इ इ
कडू	१	कार्कश्ये	कडूति कृपणा	
कण्डू	११	गात्रविधर्षणे	कण्डूयति (वा) कण्डूयते गात्रं	अ ट
कण	१	गतौ	कणति काण कण	म
कण	१	शब्दे	कणति	ऋ
कण	१०	निमीलने	कणयति नेत्रं	क
कथ	१	श्लाघायां	कथते हरिकथां कवि	इ
कत्र	१०	शैथिल्ये	कत्रयति	क त
कथ	१	श्लाघाया	कथते हरिकथां कवि	इ
कथ	१०	वाक्यप्रबन्धे	कथयति काव्यं कथकः कथा	क त
कद	१	वैक्लव्ये	कदते	इ
कद	१	वैक्लव्ये	कन्दते	इ इ
कद	१	आह्वानरोदनयोः	कन्दति	इ
कन	१	दीप्तौ (त०) ग्री- तिगतयोः	कनति दीपः	इ नि

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबंध.
कप	१	चलने	कंपते	इ ड
कव		वर्णे	(इतिकव	
कम	१	कान्तौ	कमते	कामः उ ड
कम	१-१०	कान्तौ	कामयते	उ ड
कम्ब	१	गतौ	कम्बति	
कर्ष	१	गत्यां	कर्षति	
कर्ज	१	इयथने	कर्जति केशिनं कृष्णः	
कर्ण	१०	भेदे	कर्णयति	कर्णः क त
(आउप- सर्गे)		श्रवणे	आकर्णयति	
कर्त्त	१०	शोधिल्ये	कर्त्तयति	क त
कर्त्रे	१०	शोधिल्ये	कर्त्रयति हृदयग्रन्थि ज्ञानी	क त
कर्द		कुत्सिते शब्दे	कर्दति काकः	
कर्ष	१	इतिकर्ष	
कर्ष	१	दुर्षे-गतौच	कर्षति मुखः	
कल	१०	संख्याने (त०)रुतौ	कलते धने धनी	कालः ड
कल	१०	संख्याने-गतौच	कलयति	क त
कल	१	सेपे	कलयति	क
कल	१	अव्यक्तेशब्दे	कलनेस्वरः	ड

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कव	१	वर्णे	कवतेकविःकाव्येन हरि कवतेचित्रकारः	कृ ङ
कश	१	हिंसायां	कशति (वा) कशते काशः कशाः	ज
कप	१	हिंसायां	कशति समूलकाशं कष्टः टा टं	
कष	१०	हिंसायां	कशयति कष्टः टा टं	क
कस	१	गतौ	कसति विकस्वरः	ज
कस	२	गतिशासनयोः	कंस्ते कंसं हरिः	ल ई ड
काक्ष	१	कांक्षायां	कांक्षति कांक्षा	इ
काच	१	दोषविधननयोः	काञ्चते विभावसुः	इ ङ
काल	१०	कालोपदेशे	कालयति	क त
काश	१	दीप्तौ	काशते	कृ ङ
काश	४	दीप्तौ	काश्यते	य उ कृ ङ
कास	१	दीप्तौ	प्रकासते	कृ ह
कास	१	शब्दकुत्सायां	कासतेरोगी कासः(वा) काशः	कृ ङ
कि	३	ज्ञाने	चिकेति	लि र
किट	१	{ गतौ (त०) भय- भीषयोः	केटति किटं	लि र

धातु.	तण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कित	१	रोगापनयने	चिकित्मति रोगिणं वैद्यः चिकित्सा	
कित	३	ज्ञाने-निवासेच	चिकेत्ति	लि र
किल	६	शान्त्यक्रीडनयोः	किलति देहं चन्दनेन- किलन कौलः	श
किल	१०	क्षेपे	केलयति	क
कीट	१०	वन्धने (त) वर्णे	कीटयति	क
कील	१	वन्धे	कीलति कृष्णं माता कीलः-कीला	
कु	१	शब्दे	कवने	क
कु	२	शब्दे	कौति	ल टु
कु	६	आत्तिम्ये	कुयते	श क शि
कु	९	शब्दे	कुनाति	ग
कुक	१	आदाने	काकते	ए ट
कुन	१	(रोषसंपर्ककौटिल्य- विलेखनेषु	काचति	न
कुन	१	तारशब्दे	काचति कर्षा	
कुन	१	संकोचे	संकोचति चन्द्राक्षरं- संकोच	
कुन	६	संकोचे	संकुचति धनी राजभ- यान्	श शि

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कुञ्ज	१	कौटिल्याल्पीभाव	कुञ्जति खल-कुञ्जति	उ
कुज	१	योः	मनो योगी	
कुज	१	स्तेयकरणे	कोजति नवनीतं कृष्ण-	उ
कुज	१	अव्यक्तेशब्दे	कुञ्जति कुञ्जः (वा) नि	इ
कुट	१	वैकल्ये	कुण्टति	इ
कुट	६	कौटिल्ये	कुटति खलः कोटः	श शि
कुट	१०	प्रतापने छेदनेच	कौटयते	क इ
कुट्ट	१	प्रतापने	कुट्टति कुट्टयति	
कुट्ट	१०	छेदने (त०) कु-	कुट्टयति कुट्टनी	क
कुट्टम्ब	१०	त्सायां धृत्यां पूरणे	कुट्टम्बयते	क इ
कुठ	१	आलस्ये प्रतिवा	कुण्ठति कुण्ठः कुण्ठ.	इ
कुड	६	तेच चाल्ये (त०) अ-	हा ठं कुडति ज्ञानी	श शि
कुड	१०	दने रक्षणे अनृतपरि-	कुण्डयति	क इ
कुड	१	भाषणेवेष्टनेच.		
कुड	१	कैवल्ये	कुण्डति कुण्डं कुण्डं	इ
कुड	१	दाहे	कुण्डी कुडते कुण्डं कुंभकारः कुण्डं	इ इ

श्रानु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कुण	१०	अमन्त्रणे	कुणयति	क त
कुण	६	शब्दोपकरणयोः	कुणति काकः	श
कुत्स	१०	अवक्षेपणे	कुत्सयते कुत्स्य साधुः	क छ
कुथ	४	पूतीभावे	कुथ्यति मृतकः	य
			कुन्थति रावणं रामः	इ
कुथ	१	हिंसासंक्षेपयोः	रावणशरेण रामो न कुन्थति	
कुद्र	१०	अनृतभाषणे	कुन्द्रयति	क इ
कुन्थ	९	संक्षेपणे (त.)	कुन्थाति रोगी	ग
कुथ		श्लिषि		
कुप	१-१०	स्मृतौ (अथवा)	कुंपति (वा) कुंपयति	कि
		स्मृतौ		
कुप	४	रूपे	कुप्यति (अथवा) कु प्यते कोपः	य इ र
कुप	१०	भाषार्थे स्मृतौ	कोपयति	क
कुव	१	छादने	कुन्वति तृणेन गृहं कुंवा	इ
कुव	१०	छादने	कुंवयति	क इ
कुंभ	१०	छादने	कुंभयति	इ क
कुमार	१०	कीडायां	कुमारयति गोकुले कृष्णः कुमारः	क त

धातु	गण	वर्थ	उदाहरण	अनुबन्ध
कुमाल	१०	कलौ	कुमालयति	क त
कुर	६	शब्दे	कुरति चुकोर	श
कुर्द	१	क्रीडाया	कुर्दते	ड
कुल	१	बन्धुसहतो	कालनि कुल	
कुश	४	श्लिषि	कुशयति	य इ र
कुश	१-१०	द्युतौ	कुशति (वा) कुशयति	क कि इ
कुष	९	निष्कर्षे	टृष्णाति स्वर्णं स्वर्ण- कार कोष	ग
कुपुभ	११	क्षेपे	कुपुभ्यति कन्दुक विलासी	ट
कुस	४	श्लेषणे	कुस्यति कामिनी कान्त	य इ र
कुस	१०	{ भाषार्थे (अथवा) भासने	कुसयति क इ	इ कि
कुह	१०	{ विस्मारणे विस्मा पने	कुहयते कुहको मायया विश्व	क त ड
कू	६	{ शब्दे (तथा) आ र्त्तस्त्रे	कुवते काक	श शि ड
कूज	१	{ अव्यक्ते शब्दे (त०) हिकने	कूजति पक्षी	
कूट	१०	अप्रसादे परितोषे च	कूटयते खल	क ड
कूट	१०	दाहे	कूटयति	क त
कूट	१०	दाहमात्रे	कूटयति	क त

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कूड	६	वसने	कूडति वासं वृषः कूडः	श शि
कूण	१०	संकोचे	कूणयते नेत्रं रोगी कूणः	क त ड
कून	१०	संकोचे	कूनयते नेत्रं रोगी कूर्ना	क त ड
कूण				
कूप	१०	दौर्वल्ये	कूपयति	क त
कूर्द	१	क्रीडायां	कूर्दते	ड
कूल	१	आवरणे	कूलति धर्म साधुः कूलं	
कृ	५	हिंसायां	कृणोति (वा) कृणुते	न न
			कृतं युगं	
कृ	८	करणे	करोति (वा) कुरुते	द नं डु
			कटकं कारुकः	
कृज	१	भर्जने	कृज्जयते धान्यं	इ ड
कृड	६	घनत्वे	कृडति	श
कृन	६	छेदने	कृन्तति वृक्षं	श प ई
कृत	७	वेष्टने	कृणत्ति तरुं कंटकेन मा-	ध ई
			लाकारः कृत्तिः	
कृप	१	दयायां	कृपते हरिर्भक्तं	प म ड
कृप	१०	दौर्वल्ये	कृपयति	क त
कृप.कृ प.कृ	१	अवकलकने	कल्पति	

धातु	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कृप-कृ प लृट्	१	सामर्थ्ये	कल्पते मोक्षाय	ङ ऊ व लृ
कृप-कृ प लृट्	१०	अवकलने	कल्पयति कल्पना	क
कृष	५	कृतिहिंसयोः	कृणोति	
कृषि	५	जिघांसायां	कृविणोति	न
कृश	४	तनूकरणे	कृश्यति देहं रोगः कृश- शा-शं	या इ र
कृप	१	आकर्षणे	कृपति	औ
कृष	६	विलेखने	कृपति (वा) कृषते क्षेत्रं कृषकः	श ज औ
कृ	६	विक्षेपे	किरति कुमुमं वायुः सं- कीर्णः णा-णं	श
कृ	९	हिंसायां	कृणाति कीर्णः णा णं	ग ज गि
कृत	१०	संशब्दने	कीर्तयति परगुणं साधुः कीर्तिः	क
केत	१०	आमन्त्रणे श्राव- णचे	केतयति श्राद्धाय मुनि- गृही-केतनं	क त
केप	१	गत्यां कंपनेच	केपते	फ ड
केल	१	गतौ	केलति केलिः	ऊ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
केला	११	विलासे	केलायति विलासी कामात्	ट
केव	१	तेवने	केवते	क ड
कै	१	शब्दे	कायति	
क्रथ	१	हिंसायां	क्रथति	
क्रथ	१०	प्रातिहर्षे	क्रथयति	क म
क्रथ	१०	हिंसायां	क्राथयति	क म
क्रद	१	वैकुण्ठे	क्रन्दते	ड इ
क्रद	१	आन्धानरोदनयोः	क्रन्दति अक्रन्दीदृश- ग्रीवः	इ
क्रन्द	१०	आप्रत्यये आक्रं- दमातत्यरोदने	आक्रन्दयति शोकार्तः	क
क्रम	१	पादविक्षेपे	क्रमति	उ
क्रम	४	पादविक्षेपे	क्राम्यति (वा) क्राम्यते वामनोमर्ही	य उ
क्रस	१	शब्दे	क्रसति	
क्री	९	द्रव्यविनिमये	क्रीणाति (वा) क्रीणीति तिलं यवैर्जनः क्रीतः ता- तं-क्रयः-क्रयविक्रयौ	ग ज ड
क्रीड	१	विहारे	क्रीडति	क्र
वनूय	१	शब्दे उन्देच	वनूयते नरः	क इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कुञ्ज	१	कौटिल्याल्पो भा-	कुञ्जेति खलः कुञ्जति म-	.
		वयोः	नो योगी	
कुड	६	निमज्जने	कुडते	ड श
कुध	४	रोपे	कुध्यति क्रोधः कुद्धः	य ल औ
			धा धं	
कुन्थ	९	क्षिपि-क्षिपि	कुन्थाति	ग
कुश	१	आह्वाने	कोशति कोष्टा	ज औ
कु	६	गतौ	कुवते पान्थः	ड श
कुथ	१	शब्दे (अथवा)	कुंयते वायुना वृक्षः	इ ड
		दुर्गन्धार्दत्वयोः		
क्थ	१०	हिंसायां	क्थयति	क
क्थ	१	हिंसायां	क्थति	
क्मर	१	दृष्टेने	क्मरति खलः	
क्श	१	हृतिभासनयोः	क्शयति	उ म
क्श	१०	भासने	क्शति (वा) क्शयति	इ कि
क्	९	शब्दे	क्णाति (वा) क्णोति	अ ग
क्थ	१०	हिंसायां	क्थयति	क म
क्थ	१	हिंसायां	क्थति	म
क्द	१	वैक्लव्ये	क्न्दते	मि ड इ
क्द	१	आह्वानरोदनयोः	क्न्दति	इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
क्लिद	४	आर्द्राभावे	क्लिद्यति पयसा वटः-क्लि- न्नः-ना-नं क्लेदः	य ऊ इ र
क्लिद	१	परिवेदने	क्लिन्दति (वा) क्लिन्दते कामशोकेन रति :	इ व जि
क्लृप क्लिव क्लम	१०	व्यक्तायांवाचि	क्लृपयति अक्लृपत् (इति क्लिव)	क
क्लव क्लीव(वा) क्लीव	४ १ १	ग्यानौ भये अघ्राष्टर्चे	क्लाम्यति पान्थः क्लान्तः ता-तं-क्लन्तिः क्लवते शोकेन क्लीवने नरः क्लीवः क्लीवं	य उ भ जि इ र प म ल क्र ङ
क्लिश	४	उपतापे	क्लिश्यते पापी	य ङ उ
क्लिश	९	विवाधने	क्लिश्नाति धनिकं चोरः क्लेशः क्लुवते पान्थः	ग ङ र श
क्लृ क्लेश	६ १	गनौ वाधने (त.) वधे- अव्यक्तायांवाचि	क्लेशते पापिनं रोगः क्लेशः	
क्लण	१	शब्दे	क्लणति क्लणः क्लणः	
क्लथ	१	निष्पाके	क्लथतिर्वधः क्लथं	ए ज
क्लथ	१	गनौ	क्लथति	उ.
क्लज	१०	तंके क्लृज्ज्वाचि	क्लजयति	क इ

धातु.	गण.	अर्थ	उदाहरण.	अनुबन्ध.
क्षज	१	क्षाने गतौ	क्षजते	ई प म ड
क्षज	१	क्षानगत्योः	क्षजते	प म ड
क्षण	८	हिंसायां	क्षणोति (वा) क्षणुते वि प्रं सलः क्षतं क्षतर्ज	द ज उ
क्षप	१०	क्षांतौ (अथवा) शाक्तौ (वा) क्षांतौ	क्षपयति चन्द्रः	क इ
क्षप	१०.	प्रेरणे	क्षपयति	क इ
क्षम	१	सहने	क्षमतेऽपराधं क्षमा	ड जि प ऊ
क्षम	४	सहने	क्षाम्यति पुत्रापराधांषि ता-क्षमा	य उ इ र भ
क्षर	१	संचलेने	क्षरति नदी क्षारः	ज
क्षल	१	चलेने	क्षलति	ज
क्षल	१०	शौचे	क्षालयति गङ्गाजलेन गात्र	क
क्षि	१	क्षये (तथा) ऐ श्वर्ये	क्षयति (वा) क्षयते	ज
क्षि	९	हिंसायां	क्षिणोति	न
क्षि	६	निवासे (त०) गतौ	क्षियति	श
क्षि	९	हिंसायां	क्षिणाति	ग प
क्षिण	८	हिंसायां	क्षिणोति (वा) क्षिणुते	द ज उ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
क्षिद	४	मात्रेण (तथा) स्नेहे	क्षिद्यति गां बन्धाद्गोपः	य जि आ
क्षिद(वा)	१	मोक्षे स्नेहे	क्षेदते	ऋ आ ङ जि
क्षिद(वा)	१	अव्यक्ते शब्दे	क्षिदति क्षेदः	जा जि
क्षिद	४	प्रेरणे	क्षिप्यति वामनं वीरः	य ओ
क्षिप	६	प्रेरणे	क्षिपति (त०) क्षिपे	श ञ औ
क्षिच	—	—	(इति क्षिच)	
क्षिच	१	निरसने	क्षिचति	उ
क्षिच	४	निगमने	क्षिच्यति	य उ
क्षी	१	हिमायां	क्षीयति	
क्षीज	१	अव्यक्ते शब्दे (त)	क्षीजति पत्नी	
क्षीव	१	निगमने	क्षीवति	
क्षीव	१	मदे	क्षीयते धेनोः क्षीवः वा-प	ऋ उ
क्षु	२	जट्टे	क्षीति	ल ढ
क्षुद	७	संप्रपण	क्षुजति (त०) क्षुज्जे	भ ञ ञ औ
			रिद्रां जनः-शोदः	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
क्षुध	४	बुभुक्षायां	क्षुध्यति भिक्षु क्षुध् क्षुधा क्षुधित-ता तं	य ल औ
क्षुभ	१	मचलने	क्षोभते क्षोभः	ङ
क्षुभ	४	मचलने	क्षुभ्यति युद्धेन शूर क्षोभ क्षुब्ध धा-धं	य
क्षुभ	९	संचलने	क्षुभ्नाति	ग
क्षुर	६	छेदने (त०) वि- लेखे खननेच	क्षुरति क्षुरः	श
क्षेड	१०	भक्षणे	क्षेडयति	क त
क्षेव	१	निरसने	क्षेवति	उ
क्षे	१	क्षये	क्षायति	
क्षोट	१०	क्षेपे	क्षोटयति (वा) क्षोटयते	कि
क्षुण्	२	अपनयने	क्षुण्ते दोष	ल ङ
क्षुण्	२	तेजने	क्षुणौति शास्त्रं	ल
क्ष्माय	१	विघ्नने	क्ष्मायते वायुर्वृक्षं	ई ङ
क्ष्मील	१	निमेषणे	क्ष्मीलति	
क्ष्विड	१	स्नेहमोक्षयोः	क्ष्वेडति	
क्ष्वेल	१	स्नेहमोक्षयोः चल- नेच	क्ष्वेलति	ऊ
खक्व	१	हासे	खक्वति	
खच	१०	बन्धने	खचयति	क त

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
खच	६	भूतिपूत्योरुत्पत्तौ	खचति	श
खच	९	भूतप्रादुर्भावे	खच्चाति	ग
खञ	१	मन्थने	खजति जलं वराहः	
खज	१	गतिवैकल्ये	खज्जाति खञ्ज खञ्जनः	इ
खट	१	कांक्ष्ये	खटति धनं लुब्धः खट्वा	
खट्ट	१०	वृत्तौ	खट्टयति	क
खड	१	भेदे	खण्डति	इ
खड	१	मन्थे	खण्डं खण्डं खण्डते घटं	इ छ
			कृष्णः	
खड	१०	भेदे	खण्डयति खण्डः (वा)	क इ
			खण्डं	
खड	१०	भेदे	खाडयति	क
खद	१	हिंसायां (त०)	खदति रिपुं	
		स्थैर्ये		
खद	१०	संवरणे	खादयति	क
खन	१	अवदारणे	तृपितो जान्हवीतीरे कूपं	उ
			खनति दुर्मतिः (वा) ख-	
			नते खानिः खानी (वा)	
			खातिः खनित्रं	
खम्व	१	गतौ	खम्वति	
खर्घ	१	गत्यां	खर्घति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
खर्ज	१	मार्जने (त०) व्य याया	खर्जति गात्रं . खर्जूरः	
खर्द	१	दर्शने	खर्दति मूलकं बालः	
खर्व	१	गतौ	खर्वति खर्वं वा-वं	
खर्व	१	दर्पे	खर्वति मूर्खः खर्वं वा-वं	
खल	१	चलने संचयेच	खलति खलः	
खव	९	भूतप्रादुर्भावे	खौनातिजनः	ग
खप	१	वधे	खपति	
खाद	१	भक्षणे	खादति	क
खिद	४	दैन्ये	खिद्यते वेदः	य ड
खिद	६	परिधाते	खिदति साधुं दमो खेदः	श प औ
खिद	७	दैन्ये	खित्ते भिक्षुः	ध ड औ
खु	१	शब्दे	खवते	ह
खुज	१	स्तेयकरणे	खोजति नवनीतं कृष्णः	उ
खुड	१	भेदे	खोडति	
खुड	१	भेदे	खुण्डति	इ
खुड	६	संवरणे	खुडति धनं धनिकः	श
खुड	१	खल्ले	खुण्डते	इ ह
खुड	१०	खण्डने	खुण्डति (वा) खुण्डयति	कि इ
खुर-क्षुर	६	छिदने	खुराति घान्यं कृपकः खुरः क्षुरः	श

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
खुर्द, खूर्द	१	क्रीडायां	खूर्दते	ङ
खेट	१०	भक्षणे	खेटयति मांसं आंखेटः खेटः टा-टं.	क त
खेट-खि ट	१	उत्त्रासने	खेटति केशी गोष्ठं आखे- टकः खेट	.
खेड	१०	भक्षणे	खेडयति	क
खेल	१	गतौ	खेलति	उ
खेव	१	सेवने	खेवते	ऋ ङ
खै	१	खेदने	खायति धननाशेन लोकः	
खै	१	स्थैर्ये . खननहिं- सयोः	खायति	
खाट	१	गत्यावाते	खाटति	ऋ
खोट	१०	क्षेपे भक्षणेच	खोटयति शरं शूरः	क त
खोड	१	गति प्रतिघाते	खोडति खोडः-डा-डं	ऋ
खोड	१०	क्षेपे	खोडयति	क त
खोर	१	गतिप्रतिघाते	खोरति	ऋ
खोल	१	गतिप्रतिघाते	खोलति	ऋ
ख्या	२	प्रकथने	ख्याति गुणेन लोकः ख्यातिः	ल
गग्व	१	हसने	गग्वति	
गज	१	शब्दे-मदेच	गजति गजः	इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
गज	१	स्वने	गज्जति	ड
गड	१	मेचने	(डलयोरैक्यात्) गलति जलं गाडः गाल गडक.	म
गढ	१	वदनैरुदेशे	गण्डति गण्डः	इ
गण	१०	मंख्याने	गणयति गणको ग्रहणम्	क त
गद	१	व्यक्तायांवाचि	गदति	
गद	१०	मेघशब्दे	गदयति घनः	क त
गद्गद	११	वाक्स्वलने	गद्गद्यति	ट
गन्ध	१०	अर्दने	गन्धयते लुब्धो वदान्यं	क ङ
गम्ब	१	गतौ	गम्बति	
गम	१	गतौ	गच्छति	ल औ
गर्ध	१	गत्या	गर्धति गर्ध	
गज्ज	१	शब्दे	गज्जति	
गज्ज	१०	शब्दे अभिका-	गज्जयति	क
		क्षाग्राम्		
गर्ह	१	शब्दे	गर्हति सिंहः	
गर्ह	१०	शब्दे अभिकां-	गर्हयति सिंहः	क
		क्षायां		
गर्ध	१०	अभिकांक्षायां	गर्धयति भक्ष्यं भिक्षुः	क
गर्व	१	गतौ	गर्वति	
गर्व	१	दर्पे	गर्वति मूर्खः गर्वः	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
गर्व	१०	माने	धनैर्गर्वयते मूर्खः गर्वः	क त ड
गर्ह	१०	विनिन्दने	गर्हयति	क
गर्ह	१	विनिन्दने	गर्हति	
गर्ह	१	कुत्सने	गर्हते पापं गर्हा	ड
गल	१०	त्तावे	गलयते	क ड
गल	१	अदने (स्तावे)	गलति मूलकं गलति जलं	
ग्राम	१०	आमन्त्रणे	ग्रामयति	
गल्ह	१	कुत्सने	गल्हते गल्हः	क
गवेष	१०	अन्वेषणे	गवेषयति हरिणं नरः ग- वेषणा	ड क त
गह	१०	गहने	गहयति गहनः ना-नंग- हनं	
गा	३	स्तुतौ जन्मनि	जिगाति देवान् जिगाति मुन्नयुः	लि र
गा	१	गतौ	गाते	ड
गाध	१	प्रतिष्ठालिप्सयोः ग्रन्थे	गाधते धनं गाधिः गाधः	ऋ ङ
गाह	१	विलोडने	गाहते जलं वराहः	ड उ
गु	१	शब्दे	गवते	ड
गु	६	विद्योत्सर्गे	गुवति	श शि औ
गुज	१	कूजने	गोजति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
गुज	६	शब्दे	गुजति	श शि
गुज	१	अव्यक्ते शब्दे	गुञ्जति पक्षी	इ
गुठ	१०	वेष्टे	गुण्ठयते	क इ
गुड	६	रक्षायां	गुडति	गुडः
गुड	१०	वेष्टने (त०) रक्षणेचूर्णीकरणेच	गुण्डयति	क इ
गुण	१०	आमन्त्रणे	गुणयति	गुणः क त
गुद	१	क्रीडायां	गोदते शिशुः	ड
गुध	१	क्रीडे	गोधते	ड
गुध	४	परिवेष्टने	गुधयति	य
गुध	९	रोपे	गुध्नाति	ग
गुप	१	गोपने	गोपते पापं जुगुप्सा	ऊ
गुप	४	व्याकुलत्वे	गुप्यति लोकं कोपः	य इ रू
गुप	१	रक्षणे	गोपायति भुवं राजा	ऊ
गुप	१०	भाषार्थे (अथवा) भासि	गोपयति	क
गुफ	६	ग्रन्थे	गुफति माल्यं मालाकारः	श
गुंफ	६	ग्रन्थे	गुंफति माल्यं मालाकारः	श
गुर	१	उद्यमे	गोरति माता बद्धं हरिं	
गुर	६	उद्यमे	गुरते धनाय वैश्यः	श शि ऊ ई
गुर्द	१	निकेतने-क्रीडायां	गुर्दते	ऊ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
गेष	१	अन्वेष्टायां	गेषते मुक्तिं मुनिः	कृ ड
गें	१	शब्दे	गायति	
गोष्ट	१	संघाते	गोष्टेते धान्यं	ड
गोम	१०	उपलपने	गोमयति गोमयेन भूमि यज्वा	क त
ग्रथ	१	कोटिल्ये-संदर्भे	ग्रथते	ड
ग्रथ	१	कोटिल्ये	ग्रथते चित्तं खलः	इ ल
ग्रन्थ	९	संदर्भे	ग्रन्थनाति ग्रन्थं कविः	ग
ग्रन्थ	१	संदर्भे	ग्रन्थति	
ग्रन्थ	१०	संदर्भे-बन्धनेच	ग्रन्थयति	क
ग्रस	१	ग्रहणग्रासयोः	ग्रसति	
ग्रस	१	अदने	ग्रसते ग्रासं भिक्षुः	ड उ
ग्रस	१०	अदने ग्रासे	ग्रासयतिचन्द्र राहुः	क
ग्रह	१-१०	आदाने	ग्रहति (वा) ग्राहयति	कि उ
ग्रह	९	उपादाने	गृह्णाति (वा) गृह्णीते धर्म धार्मिकः गृहीत. ता ता तं.	ग उ
गुर्व	१	उद्यमने	गुर्वति फलार्थी फलाय	ई
गुच	१	चौर्ये	गुचति नवनीतं कृष्ण	उ इर
ग्लस	१	अदने	ग्लसते	ड उ
ग्लह	१-१०	आदाने	ग्लहति (वा) ग्लहयति	कि उ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
घु	१	शब्दे	खते	ड
घुट	१	परिवर्त्तने	गोटते प्रवासी	ड
घुट	६	प्रतिपाते	गुटति गज घोट	श शि
गुट	६	व्यापाते रक्षे	गुटति	श शि
घण	१	भ्रमणे	गणते तर्हि मुनि	ड
घृण	६	भ्रमणे	गृणाति भिक्षाय भिक्षु	श
			गृण	
घुण	१	ग्रहणे	गुणते	ड इ
गुर	६	भोषातिशब्दे	गुरानि भयेन शिशु घोर	श
			रा-र-घोर	
घुर घूर	४	हिमाज्ञानयो	गूर्यते	य ड इ
घुप	१	वधे	गोपति	इ र
घुप	१०	वधे	गोपयति	क इ र
घुप	१	शब्दे	माधुर्योपति गोविन्द घोष	इ र
गुप	१०	शब्दे	गोपयति नीति जनेषु	क इ र
			राजा घोषणा	
घुप	१	घृशे कान्तिहर- णेन	गुपते	इ ड
गूर्णे	१	भ्रमणे	निद्रया गूर्णानि क्षीव	
गूर्णे	६	भ्रमणे	गूर्णति भिक्षाय भिक्षु	श

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
घृ	३	क्षरणदीप्त्योः	जिर्वर्त्ति जलं जिर्वर्त्ति घृतं वरति	ल इ र्
घृ	१०	क्षरणदीप्त्योः प्र- सह्यकरणेच	वरयति	क
घृ	१	सेचने	वरति दग्धं पयसा	
घृण	१	ग्रहणे	घृणते	इ ङ
घृण	८	दीप्तौ	घृणोति (वा) घृणुते	द ज उ
घृप	१	संचर्षे	वर्षति काष्ठं मूर्खः	उ
घोर	१	गतिचातुर्ये	घोरत्वश्वः	
घ्रा	१	गन्धोपादाने	जिघ्रति पुष्पं भ्रमरः	
ङु	१	ध्वनौ	ङवते	ङ
चक	१	दीप्तौ प्रतिघात- तृप्त्योः	चकति (वा) चकते	व म
चक	१	दीप्तौ	चकते विद्यया विप्रः चाकः	ङ
चक्र	१०	व्यसने	चक्रयति	क
चकास	२	दीप्तौ	चकास्ति.	ल ऋ लु
चक्ष	२	व्यक्तायांवाचि	आचष्टे धर्मगुरुः	ल ङ
चव	५	वातने	चघ्नोति	न
चञ्च	१	गत्यां	चञ्चति	उ
चट	१०	भेदे (त०) वचे	चाटयति	क
चट	१	भेदे	चटाति	

धातु	गण	अर्थः	उदाहरण.	अनुबन्ध.
चड	१	कोपे	चण्डते चण्डे चण्डी	ड इ
चट	१०	कोपे	चण्डयते	क इ ङ
चण	१	राब्दे	चणाति	
चण	१	हिंसागत्योः	चणाति	मि
चण	१	दाने	चणाति चणकः	म
चत	१	याचने	चतते (वा) चतति चा- तकः	अ उ
चद	१	याचने	चदते (वा) चदति	ए अ
चद	१	आल्हादने दी- त्ता च	चन्दति-चन्द्रः-चन्द्र- चन्द्रोज्ज्वलचारुचितौ वि- दर्भराजो मिलने मुरारेः	इ
चन	१	हिंसायां-श्रद्धायांच	चनति	म
चन	१	राब्दे	चनति	
चप	१	मान्त्वने	चपाति शिष्यं	
चप	१०	कल्के	चपयति	क म
चप	१०	गत्यां	चपाति (वा) चपयति	इ कि
चम	१	अदने	चमाति (वा) आचमति	उ
चम	१	अदने	आचामयाति जलं पथिकं माधुः	उ
चम	५	अक्षे	चम्नोति	न उ र
चम्ब	१	गत्यां	चम्बति	

धातुः	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
चय	१	गतौ	चयते	ङ
चर	१	गतौ (त०) अ- दने	चरति चारः	
चर	१०	असंशये	विचारयति धर्मं पंडितः विचारणा	क
चर्व	१	गत्यां	चर्वति	
चर्व	१-१०	परिभाषणतर्जन- योः	चर्वते (वा) चर्वयते	ङ कि
चर्च्च	६	परिभाषणतर्ज- नयोः	चर्च्चति	श
चर्च्च	१०	अध्ययने	चर्च्चयते वेदं शिशुः च- र्च्चा.	क ङ
चर्व्व	१	गतौ	चर्व्वति	
चर्व्व	१	अदने	चर्व्वति (वा) चर्व्वयति- चर्व्वणं	कि
चल	१	कंपने	चलयति (वा) चालयति तरुं कपिः	म
चल	६	विलसने	चलति भर्त्रा नारी	श
चल	१०	मृत्यां	चलयति	क
चप	१	वधे	चपति	
चप	१	भक्षणे	चपति (वा) चपते चपकं	ञ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
चह	१	परिकल्कने	चहति तीर्थे लोकः	
चह	१०	परिकल्कने	चहयति कपटी	क त
चाय	१	पूजानिशामनयोः	चाययति (वा) चायते धर्मं	क अ
चि	१	हिंसायां	चयति	र इ र्ण
चि	१	चयने	चयति (वा) चयते	अ
चि	६	चयने	चिनोति (वा) चिनुते	न अ
			धान्यं कृपकः	
चि	१०	चयने	चययति	क मि
चिक्क	१	आर्त्तौ	चिक्कयति	क
चिट	१	प्रेष्ये	चेटति भृत्यं चेटः चेटी	
चिट	१०	प्रेष्ये	चेटयति	क
चित	१	संज्ञाने	चेतति प्रलये हरिश्चेतति	ई
			चिचेत रामस्तत्कलेशं	
चित	१०	स्पृत्यां	चिन्तयति चिन्ता	क इ
चित	१०	संवेदने	चेतयते	क ड
चित्र	१०	चित्राकरणे	चित्रयति पटं चित्रकारः	क त
			चित्रः त्रा-त्रं-चित्रं	
चिल	६	वसने	चिल्लति चैलेन मुखं बधुः	श
चिल्ल	१	शौथिल्ये (त०) हावकृतौ	चिल्लति साधुर्दययाचिल्लः	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
चीक	१-१०	आमर्यणे मर्षणे	चीकति (वा) चीकयति	कि
चीव	१	आदान संवरणयोः	चीवति (वा) चीवते	क्व अ
चीभ	१	कथने	चीभते	क्व ड
चीय	१	संवृत्यादानयोः	चीयति (वा) चीयते	क्व अ
चीव	१०	भाषार्थे-दीप्तौ	चीवयति	क
चीव	१	ग्रहसंवृत्योः	चीवते	क्व ड
चीव	१	आदान संवरणयोः	चीवति (वा) चीवते	क्व ड
चुक्क	१०	व्यसने	चुक्कयति	क
चुच्य	१	अभिषवे	चुच्यति	ई
चुट	६	छेदे	चुटति	श शि
चुट	१०	छेदने-भेदनेच	चाटयति धान्यं	क
चुट	१०	छेदने	चुटयति केशं शिशुः	क इ
चुट	१	अल्पीभावे	चोटति वेदः कलौ	
चुट	१	अल्पीभावे	चुण्टति	इ
चुट्ट	१०	अल्पीभावे (अ- थवा) संहतौ	चुट्टयति शोकेन देहः	क
चुड	१	अल्पीभावे	चुण्डति	इ
चुड	१०	छेदने	चुण्डयति	क इ
चुड	६	संवरणे	चुडति	श
चुड्ड	१	हावकरणे	चुड्डति नटी	
चुण	६	छेदे	चुणति शाकं भिक्षुः	श शि

धातु.	गण.	अर्थ	उदाहरण.	अनुबन्ध.
चुत	१	आसिधने	चोताति	इ र
चुद	१	निशाने	चुन्दति (वा) चुन्दते	उ इ र ज इ
चुद	१०	संचोदने	चोदयति चोदना	क
चुप	१	मंदायां गतो	चोपतिखलः	
चुव		वक्रसंयोगे	चुंवति (वा) चुंवयति	इ कि
चुर	१-१०	स्तेये	चोरति (वा) चोरयति	कि
			चोरः	
चुर	४	दाहे	चूर्यते	य ड ई
चुरण	११	चौर्ये	चुरणयति	ट
चुल	१०	निमज्जने समुच्छ्रा-	चोलयति गंगायां मुनिः	क
		येच	चोलः चोला	
चुछ	१	हावकरणे	चुछति प्रियेण नारी	
			चुछी	
चुलुम्प	१	लोपे	चुलुम्पति	
चूण	१०	संकोचे	चूणयति चूणः	क
चूर्ण	१०	पेषणे-संकोचेच	चूर्णयति	क
चूप	१	पाने	चूपति स्तनंशिशुः	
चृत	६	हिंसायां (त०)	चृतति चर्चते	श ई
		ग्रन्थे		
चृत	१-१०	संदीपने	चर्तति (वा) चर्तयति	कि
चृप	१०	संदीपने	चर्पयति	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
चेष्ट	१	चेष्टायां	चेष्टते पठितुं	चेष्टा ङ
चेल, चेल्ल	१	गतौ	चेलति	चेलं उ
च्यु	१	गतौ	च्यवते	ङ
च्यु	१०	हाससहनयोः	च्यावयति	क
च्युत	१	आसेचने	च्योतति वङ्गौ हविः, अ- च्युतः, च्योतः	इ र्
च्युस	१०	हानौ-सहनेच	च्योसयति	
छद	१	अपवारणे	छदति	
छद	१०	अपवारणे	छदयति	क
छद	१०	संवृत्तौ	छदयति	क त
छद	१०	उर्जने	छदयति पुत्रं धृतेन पिता	क इ र् म
छद	१०	संवरणे	छन्दति (वा) छन्दयति	कि इ
छप	१०	गतौ	छपयति	क इ
छम	१	अदने	छमति	उ
छद	१०	वमने	छर्दयत्यन्नं गेगी	क
छिद	७	द्वैधीकरणे	छिनत्ति (वा) छिन्ते तृणं- शिष्यः छेदः	धञ् इ र् औ
छिद्र	११	विभेदे	छिद्रयति कलशं जनः छिद्रं	क न
छुट	९	छेदे-संहतौ	छुटति	श शि
छुट	१०	छेदने-संहतौ	छोटयति	क
छुड	९	संवरणे	छुडति	श

धातु.	गण.	अर्थ.	वदाहरण.	अनुबन्ध
छुप	६	स्पर्श	छुपति	श औ
छुर	६	छेदे (त०) लोपे	छुरति	श शि
छृद	१	संदीपने	छर्दति	ई
छृद	१०	संदीपने	छर्दयति तेजो ऽर्जुनस्य हरिः	क कि ई
छृद	७	देवनयुतिवमनेपु	छृणत्ति (वा) छृन्ते	ध ञ उ इ र
छूप	१०	संदीपने	छर्षयति	क
छेद	१०	द्वैधाकरणे	छेदयति तरुं तक्षां	क त
छो	४	छेदने	छयति धान्यं कृषाणः	य
छयु	४	गतौ	छययते	ड
जक्ष	१	दानगत्योः	जक्षते	इ ड म
जक्ष	२	भक्षहसनयोः	जक्षिति मूलकं	ल क्ष लु थ
जज	१	युद्धे	जजति	
जज	१	युद्धे	जंजति	इ
जट	१	संहतौ	जटति जटा	
जन	३	जनने	जजन्ति बीजं सत्क्षेत्रे— जन-जन्मा	लि म र
जन	४	प्रादुर्भावे	बीजादंकुरो जायते	य म इ ड
जन	१०	जनने	जनयति विश्वं विष्णुः	
जप	१	मानसे	जपति—जपः—जापः—	
जप	१०	संवाते	जापयति	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुवन्त.
जभ	१	यमने	जभति	
जभ	१	यमने	जम्भति	इ
जभ	१	गात्रविनामे	जभते	इ
जभ	१	गात्रविनामे	जंभते	इ इ
जभ	१०	नाशने	जंभयति जंभं शक्तः	क
जभ	१	अदने	जमति	उ
जन्नी	६	परिभाषणतर्ज्ज- नयोः	नर्जति	श
जर्छे	६	परिभाषणतर्ज्ज- नयोः	नर्छेति	श
जर्ज्ज	६	परिभाषणतर्ज्ज- नयोः	नर्ज्जति	श
जर्मे	६	परिभाषणतर्ज्ज- नयोः	नर्मेति	श
जर्म्भ	१	परिभाषणतर्ज्ज- नयोः (न०) र्छे	नर्म्भति	
जल	१	अपवारणे	नलति	न
जल	१०	अपवारणे	नल्यति निमग्नं दान्तामने मालं	न
जल	१	दन्तामग्नानि	नल्यति	
जल	१	हिमलग्ना	नलयति (न) नलये	न

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
जस	४	मोक्षणे	जस्यति वत्सं गोपः	उ इ र य
जस	१०	हिंसायां (त) अनादरे	जासयति रिपुं राजा	क
जस	१०	रक्षणे	जंसयाति	क इ
जस्	१०	ताडने	जासयति (वा) जसति	उ कि
जागृ	२	निद्राक्षये	जागर्ति मुनिः	ल लु
जि	१	जये अभिभवेच	जयति कृष्णः जयः	
जिम	१	अदने	जिमति	उ
जिरि	५	हिंसायां	जिरिणोति	न र
जिव	१	प्राणने	जिवति	इ
जिवि	५	जिवांसायां	जिविनोति	न
जिप	१	सेचने	जिपति	उ
जीव	१	प्राणधारणे	जीवति हरिकथया साधुः जीवः	ऊ
जु	१	गतौ	जवते जवः	ढ
जु	१	अंहासि	जवति	र
जुग	१	त्यागे	जुंगति	इ
जुड	६	बन्धे	जुडति जनः सूत्रेण व. स्त्रं, जोडः, जोडनं	श शि
जुड	६	गतौ	जुडति जुजोड	श
जुड	१०	धरणे	जुण्डयति भृत्यं राजा	क इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
जुत	१	भासने	जोतते विद्यया नरः	ऋ ङ
जुन	६	गतौ	जुनति	श
जुल	१०	पिषि	जोलयति	कं
जुष	१-१०	परितर्कणे (त०)	जोपति (वा) जोषयति	किं
जुष	६	तृप्तौ	धूर्त्तचतुरः	
जुष	६	प्रीतिसेवनयोः	जुषते हरिभक्तः	श ङ ई नि
जूर	४	जीर्ण हिंसावयो-	जूर्यते वृद्धः	य ई
		हान्योः		
जूर्व	१	वधे	जूर्वति	ई
जूष	१	हिंसायां	जूषति (वा) जूषते	व
जू	१	न्यकारे	जरति	
जृभ	१	गात्रविनामे	जृभते	ङ ई
जृभ	१	गात्रविनामे	जृभते (त०) जृंभति-	इ ङ
			जृंभः-जृंभ जृंभं जृंभणं	
जू	४	वयोहानौ	जीर्यति-जीर्णः-णा-णं	य प म ई र
जू	९	वयोहानौ	जृणाति जरया जनः जी-	ग गि
			र्णः-णा-णं	
जू	१-१०	वयोहानौ	जरति (वा) जरयति	क कि
जेष	१	गतौ	जेपते	ऋ ङ
जेह	१	यत्ने	जेहते	ऋ ङ
जे	१	क्षये	जायति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
जि	१	अभिभवे	जयति धर्मं कलिः	
जी	९	ज्याने	जिणाति	ग गि
ज्ञा	९	अवबोधने	जानाति	ग
ज्ञा	१०	मारणतोपणनिशा- मनेषु (त०) स्तु- तोनिशाने च	ज्ञपयति रिपुं राजा ज्ञ- पयति मित्रं नरः ज्ञपय- ति पांडित्यं सभायां	क म
ज्ञा	१०	नियोजने	ज्ञापयति भृत्यं राजा	क
ज्ञप	१०	मारणतोपण नि- शामनेषु स्तुतौ च	ज्ञपयति	क म
ज्या	९	जराया	जिनाति	ग गि
ज्यु	१	गत्या	ज्यवते	ङ
ज्युत	१	भासने	ज्योतति	ङ र्
ज्युत	१	भासने	ज्योत्ते	क्रु ङ
ज्यो	१	नियमवृत्तादेशोपा- नीतिषु	ज्यवते	ङ
ज्वर	१	रोगे	ज्वरत्यजीर्णेन ज्वर.	म
ज्वल	१	दीप्तौ	ज्वलति वह्निः ज्वाला-	ज
ज्वल	१	दीप्तौ	ज्वलति (वा) ज्वाल- यति चित्तं क्रोधः प्रज्वा- लयति	
जट	१	सधाते	जटति केशः शटा	—

धातु.	राण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
झम	१	अदने	झमति	उ
झर्च	६	परिभाषणतर्जनयोः	झर्चति	श
झछ	६	परिभाषणतर्जनयोः	झछति	श
झझ	१	परिभाषणतर्जनयोः	झझति झझरः	श
झझ	६	परिभाषणतर्जनयोः	झझति	—
झप	१	ग्रहे	पिधाने—झपति (वा)	ज
झप	१	हिंसायां	झपति झपः	—
झु, झ्यु	१	गतौ	झवते	ङ
झूप्	१	हिंसायां	झूपति	—
झृ	४	वयोहानौ	झीर्यति—झीर्णः—णा—णं	य प
टक	१०	बन्धे	टण्कयति—टण्कः—विटण्कः	क इ
टल	१	विक्रमे	टलति	ज
टिक	१	गत्यां	टिकते	क उ
टिप	१०	क्षेपे	टिपयति	क
टीक	१	गत्यां	टीकते	क उ
टीक	१	गत्यां	टीकते	क उ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
डुल	१	विकृते	डुल्यति	ज
डप	१०	सहता	डपयते	क ड
डप	१०	संहता	डपयते	क इ ड
डब	१०	क्षेपे	डबयति	क इ
डिप	४	क्षेपे	डिप्यति	य इ
डिप	६	क्षेपे	डिपति शरं	श शि
डिप	१०	क्षेपे	डेपयति	क
डिप	१०	सहता	डेपयते	क ड
डिप	१०	संहता	डिपयते	क इ ड
डिब	१०	क्षेपे	डिबयति	क इ
डिभ	१०	संघाते	डिभयते	क इ ड
डो	४	गतौ	डोयते पक्षी	य ड
डो	१	विहायसागतौ	डयते गगने हंस, प्रडी- नं, संडीनं, उड्डीनं	
डुब	१०	अदने	डुबयति	क इ
डुभ	१०	संघाते	डुभयते	क इ ड
णक्ष	१	गतौ	नक्षति	
णख	१	गतौ	नखति	
णव	१	गतौ	नवति प्रयागात् काशीं	इ
णट(इ ति)नट	१	नृत्ये	नाटयति	म

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
णट	१	नृत्ये (त.) हि-	णटति	
नायां				
णद	१	म्लिष्टौक्तौ	नदति	नद
णद	१०	भाषार्थे (वा०)	नादयति	क
भामार्थे				
णभ	९	हिंसायां	नभ्राति	ग
णभ	१	हिंसायां	नभते	नाभिः लृ ङ
णभ	४	हिंसायां	नभ्यति	य
णम(वा)	१	प्रवृत्तशब्दे	नमति, प्रणमति	गुरुं शि-
नम			प्यः, प्रणामः	
णय	१	रक्षणे (त०) गतौ	नयते	ङ
णद्	१	"	(इति नर्दः)	
णल	१	बन्धे-गन्धे च	नलति	ज
णश	४	अदर्शने	नश्यति	कामः नाशः य ल उ
श्रम	१	कौटिल्ये	नमते	मूलः
णह	४	बन्धने	नध्यति (वा) नध्यते	य अ ओ
णाय	१	"	(इति नाथ)	
णाध	१	क्र	(इति नाध)	क
णाम	१	शब्दे	नामते	नामा क्र ङ
णिज	२	शाने	नेनेक्ति (वा) नेनिके ज-	नि. इर. अ. ओ
			लेन वस्त्रं निर्णेजनं	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
णिज	२	श्रुद्धौ	प्रणिक्ते जलैन गावं	ल इ ड
णिद	१	कुत्सायां (त.)	नेदति (वा) नेदते पापि-	ऋ ङ
		सन्निधौ	नं साधुः निद्यते	
णिद	१	कुत्सने	निन्दति इति निद	इ
णिल	६	गहने	निलति	श
णिव	१	मेके	निवति	इ
णिश	५	समाधौ	नेशतिमुनि. निशा	
णिप	१	मेके	नेपति	उ
णिस	२	चुंबने	निस्ते हरिमुखं नन्दः	ल ड इ
णी	१	प्रापणे	कृष्णं मथुरां नयते (वा)	अ
			नयत्यक्रूरः नयः नायः	
			नीति नायकः	
णील	१		(इतिनील)	
णीव	१		(इतिनीव)	
णु	२	स्तुतौ	नौति	ल
णुद	६	प्रेरणे	नुदति (वा) नुदते पठ-	श अ औ
			नाय पुत्रं पिता	
णू'अ.)	६	स्तवने	नुवति हरि मुनिः	श शि
णु-				
णेद-इ	१	कुत्सायां (त.)	नेदति (वा) नेदते	ऋ अ
ति णिद		सन्निधौ		

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
णेष	१	गतौ	नेपते	ऋ ङं
तक	१	सहनहामयोः	तकति	
तक	१	गतौ	तकते	ङ इ
तक	१	कृच्छ्रजीवने	तंकति	इ
तक्ष	१	तनूकरणे त्वचनेच	तक्षति वृक्षं तक्षा	ऊ
तग	१	गतिकंपस्खलनेषु	तगति	इ
तंच	७	संकुची	तनक्ति	ध
तंच	१	गतौ	तंचति	उ
तंज	७	संकोचे	तनक्ति	ध उ
तट	१	उच्छ्राये	तटति तटं	
तट	१०	आहतौ	तटयति	क
तड	१०	आघाते (त.)	ताडयति ताम्रं ताम्रकारः	क
		त्विपि		
तड	१	ताडने	तण्डतेरिपुं	ङ इ
तंतस्	११	दुःखे	तंतस्यति	ट
तद्	१	कल्याणे	तन्दते गृहे नरः	इ
तन	८	विस्तारे	तनोति (वा) तनुते तन्वं	द ज ऊ
			तन्तुवायः वितानः	
तन	१-१०	श्रद्धोपतापयोः (तथा) उपकृतौ	तनति (वा) तानयतिज्ञा	किं उ
		श्रद्धाघातेशब्देच	निवाक्यंजनः वितान- यति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
तप	१	संतापे	तपति तापः	औ
तप	४	ऐश्वर्य्ये	तप्यते सेनया राजा	य ड औ
तप	१-१०	दाहे	तपते (वा) तापयते	कि ड
तंत्र	१	गतौ	तंत्रति	
तम	४	ग्लानौ (त०)	ताम्यति दुराचारेण विप्रः	यभ इर उ
		इच्छायां		
तय	१	गतिरक्षयोः	तयते	ड
तरण	११	गतौ	तरण्यति	ट
तत्र	१०	कुटुंबभरणे	तन्त्रयतेकुतन्त्रेणकुमतिः	क इ ड
तर्क	१०	भाषार्थे दीप्तिर्तर्क	तर्कयति	क
		योश्च		
तर्ज	१	तर्जने	तर्जति तं ततर्जानिलात्मजं	
तर्ज	१०	तर्जने	तर्जयते	क ड
तर्द	१	हिमायां	तर्दति ततर्द	
तर्ब्ब	१	गतौ	तर्ब्बति	
तल	१-१०	प्रतिष्ठायां	तलति (वा) तालयति दे-	कि
			वालये राजा तलः तालुः	
तस	४	उत्क्षेपणे	तस्यति मल्लो मल्लं वि-	य उ इर
			तस्तिः	
तस	१-१०	अलंकारे	तंसति (वा) तंसयति उ	कि इ
			तंसः अवतंसः	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
तस्	४	उपक्षये	तस्यति	उ य
ताय	१	संताने पालने च	तायते धर्मं साधुः	ऋ ङ
तिक, ती	१	गतौ	तेकते	ऋ ङ
क				
तिक	५	जिवांसायां	तिक्रोति	न
तिग	५	जिवांसायां (त.)	तिग्नोति	न
		स्कन्दनेच		
तिथ	६	घातने	तिघ्नोति	न
तिज	१	निशाने क्षमार्यां च	तितिक्षते खलं साधुः	ङ
तिज	१०	निशाने	तेजयति शूलं भट्टः ते- जना	क
तिप	१	क्षरणे (त.) द्युति	तेपते जलं वटात्	उ ऋ ङ
तिम	४	आर्द्रभावे	तिम्यति तैलेन देहः	य
तिल	६	स्नेहने	तिलति तैलेन गात्रं तिलः	श
तिल	१०	स्नेहने	तेलयति तैलेन देहं जनः	क
तिल (वा)	१	गतौ	तेलति	
तिष्ठ				
तिरस्	११	अन्तर्द्धौ	तिरस्यति कुटिलो वार्त्ता छन्नना	ट
तीक	१	गतौ	तीकते	ङ ऋ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
तीम	४	आद्रिभावे	नीम्याति तैलेन देहः	य
तीर	१०	मयासां	तीरयति तीरं	क त
तोव	१	स्थौल्ये	तीवति	
तु	२	गतिवृद्धिवृत्तिहिंसापूर्त्तेषु	तौति	ल
तुज	१	हिंसायां	तोजति तुतोज	
तुज	१०	भाषार्थे	तुंजयति	क इ
तुंज	१०	हिंसायां	तुंजयति	क इ
तुज	१०	हिंसाबलादाननिकेतनेषु	तोजयति	क
तुंज	१	हिंसाबलवेष्टनप्राणनेषु	तुंजति तुंगः तुंगी	इ
तुट	६	कलहकर्माणि	तुटति खलः पित्रा सह	श शि
तुड	१	तोडने	तोडति जरासंधं भीमः	क
तुड	६	तोडने	तुडति बन्धनं हस्ती	श शि
तुड	१	तोडने(त.)वधे	तुंढते तृणं तुण्डं	इ ड
तुड	१	अनादरे	तुडति	
तुण	६	कौटिल्ये	तुणाति खलः	श
तुत्थ	१०	स्तूतौ	तूत्थयति	क त.

धातु.	संज्ञ.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
तुद	६	व्यथने	तुदति (वा) तुदते विधुं	श ञ औ
तुद(त.)	१	चेष्टायां	तुदो विधुं तोत्रं	इ
त्रद			तुन्दति सुखाय तुन्दं	
तुप	१	वधे	तोपति	
तुप	१०	तर्दने	तुंषयति	क इ
तुप	६	हिंसायां	तुपति	श प
तुंष	६	हिंसायां (त०)	तुपति	श
		क्लिशि		
तुंष	१	वधे	तुंषति	
तुफ	६	हिंसायां	तुफति	श
तुंफ	६	हिंसायां	तुंफति	
तुंफ	६	तृप्ति	तुंफति भोजने विप्रः	श
तुव	१-१०	अर्दने अदर्शने च	तुंवति (वा) तुंवयति-	कि इ
			तुंवी	
तुभ	१	हिंसायां	तोभते	ल ङ
तुभ	४	हिंसायां	तुभयति	य
तुभ	९	हिंसायां	तुभ्नाति	ग
तुर	३	त्वरणे	तुतोत्ति लुब्धो, धनाय	लि र
			तुरितं, तुरा, तुरगः, तुरंगः	
तुरण	११	त्तरायां	तुरण्यति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
तुर्व	१	हिंसायां	तुर्वति	ई
तुल	१०	पूरणे	तोलयते	क ड
तुल	१-१०	उन्माने	तोलति (वा) तोलयति कांचनं जनः तुला	कि
तुष	४	तुष्टौ	तुप्यति तुष्टः, टा, टं, तुष्टिः	य लृ औ वि
तुस	१	शब्दे	तोसति	
तुह	१	अर्दने	तोहति	इ र्
तूड	१	अनादरे, तोडनेच	तूडति	ऋ
तूण	१०	संकोचे	तूणयति	क त
तूण	१०	पूरणे	तूणयते, तूणः, तूणा, तूणी, तूणीरः	क ड
तूर	४	भरणे, हिंसायां	तूर्यते याचकः	य ड इ
तूल	१	निष्कर्षे	तूलतिकनकं तूलिका	
तूष	१	तुष्टौ	तूषति कृष्णः	
तृक्ष	१	गतौ	तृक्षति तृक्षः ताक्ष्य	
तृण	८	अर्दने	तृणोति (वा) तृणुते तृ- णं वृषः	द व उ
तृद	७	हिंसादनयोः (त.) अनादरे	तृणात्ति (वा) तृत्ते	घ न इर् औ

धातु.	संज्ञ.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
तृप	१-१०	प्रीणने (त.) सं- ज्ञीप्सेसंदीपे	तर्पति (वा) तर्पयति हविषा वह्निं विप्रः	कि
तृप	४	प्रीणने	तृप्यति पयसा बालः तृ- प्तिः तर्पणं	य वि उ
तृप	९	प्रीणने	तृप्नोति	न
तृप	६	प्रीणने	तृपति	श प
तृप	६	प्रीणने	तृपति	श
तृफ	६	तृप्तौ	तृफति भोजने विप्रः	श
तृप	४	पिपासायां	तृप्यति चातकः तृट् तृपा- तृप्णः णा-णं-तृप्णा	य इर वि श ऊ
तृह	७	हिंसायां	तृणेदि रिपुं जनः	ध ऊ
तृह	१	तृद्धौ	तृंहति	इ
तृह		हिंसायां	तृहति	श ऊ
तृ	१	तरणाभिभ— वप्लवनेषु	तरति गंगां धीवरः तर- णिः तरणी तरिः तरी	
तृ	९	हिंसायां	तृणाति	
तृ	९	हिंसायां	तृणाति (वा) तृणीते	ब ग
तेप	१	कम्पेक्षरणे श्रुत्यांच	तेपते	क ड
तेव	१	देवने	तेवते	क ड
तोड	१	अनादरे	तोडति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
तौक	१	गतौ	तौकते	कृ ड
त्रक	१	गतौ	त्रंकते	ड इ
त्रख	१	गतौ	त्रखति	
त्रख	१	गतौ	त्रंखति	इ
त्रग	१	गतौ	त्रंगति	इ
त्रद	१	चेष्टायां	त्रंदति	
त्रप	१	लज्जायां	त्रपते वधूः	त्रपा उ, ड, प, मि
त्रस	१	उद्वेगे	त्रसति	ई ण
त्रस	४	उद्वेगे	त्रस्यति खयात्साधु. त्रास	य
त्रस	१०	निवारणे(त) भेदे- निषेधेकृतौ	त्रासयति शत्रुं शूरः	क
त्रस	१-१०	भाषा (वा) भासि	त्रंसति (वा) त्रंसयति	कि इ
त्रुट	४	छेदने	त्रुटयति	य
त्रुट	६	छेदने	त्रुटति	श शि
त्रुट	१०	छेदने	त्रुटयते	क ड
त्रुप	१	वधे	त्रुपति	
त्रुप	१	वधे	त्रुपति	
त्रुफ	१	हिंसायां	त्रौफति तस्करो धनाय पाथं	
त्रै	१	पालने	त्रायते	ड
त्रौक	१	गतौ	त्रौकते	कृ ड

धातु.	गण	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
त्वक्ष	१	तनूकरणे	त्वक्षति वृक्षं	
त्वक्ष	१	त्वचोग्रहे	त्वक्षति	
त्वग	१	गतिकम्पयोः	त्वंगति	इ
त्वच	६	संवरणे	त्वचति दोषं दानेन दा- ता, त्वचं, त्वक्, त्वचा	श
त्वंच	१	गतौ	त्वंचति	उ
त्यज	१	हानौ	त्यजति गृहं यतिः त्यागः	औ
त्वर	१	सम्भ्रमे	त्वरते भोजनाय त्वरा	जि प म ड
त्सर	१	छद्मगतौ	त्सरति खलः त्सरः	औ ज
त्विष	१	भासे	त्वेपति (वा) त्वेषते	श शि
थुङ्	६	संवृत्तौ	थुङ्गति	ई
थुर्व	१	हिंसायां	थुर्वति	म ष ड
दक्ष	१	हिंसायां	दक्षते	ड
दक्ष	१	वृद्धौ(त.) स्यंदे	दक्षते धर्मेण दक्षः	इ
दद्य	१	दातने	दद्यति	न
दद्य	९	दातने—पालनेच	दद्यति	क त
दंड	१०	दंडनीपातने	दण्डयति दण्डयं राजा दंडः	
दद	१	दाने(त.) धृतौ	ददते	ड
दध	१	धारणे(त.) दाने	दधते	ड

धातु	गण	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
दध	१	पालने	दधति कृष्णं नन्दः	
दभ	१०	नादे	दभयति	क
दभ	१०	नोदे	दंभयति	क इ
दंभ	५	दभे	दभोति भूतः	न उ
दंभ	१०	सधाने	दंभयते	क ड
दम	४	उपशमे	दाम्यति मुनि, दम, दान्तिः, दान्तः, ता तं	य भ उ इ
दय	१	गतौ दाने हिंसायां	दयते	जि ड
दरिद्रा	२	दुर्गतौ	दरिद्राति दरिद्रः	ल लु क्ष
दल	१०	विदारणे	दालयति	क
दल	१	भेदे-विशरणे	दलति दलं	मि
दव	१	व्रजे	दंवति	इ
दश	१०	भाषार्थे-त्वयि	दंशयति	क इ
दश	१०	दंशने(त.) दर्शे	दशयते मूलं दंशः	क इ ड
दंश		दशने	दशति मूलं दंशः	औ
दस	४	उत्क्षेपे	दस्याति	य इर् औ
दस	१०	दंशने	दंसयते गात्रं	क इ ड
दस	१०	भाषि	दंसयति	क इ
दस	१०	दंशने-दर्शनेच	दसयते श्रीकृष्णं भक्तः	ड क
दस	४	उपसये	दस्यति	य उ
दह	१	भस्मीकरणे	दहति वनं वह्निःदाहः	औ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
दह दा	१० ३	दीप्तौ-दाहेच दाने	दहयति ददाति गां विप्राय (अ- थवा) दत्ते, आ उपसर्गे आदत्तः	क इ लिङ् डु
दा दाण्ड- तिदा दान	२ १ १	लवने दाने	दाति दात्रेण धान्यं यच्छति धनं विप्राय	ल प
दाय दाश	१ १	अवखण्डने(अथवा) आर्ज्जवे दाने	दीदांसति (वा) दीदां- सते काष्ठं वर्द्धकि दायते दाशति (वा) दाशते वि- प्राय वस्त्रं	उ ङ ऋ ङ ऋ व
दाश दाश दास	१० ५ १	दाने हिंसने दाने	दाशयते दाशनोति दासाति (वा) दासते दासः	क ऋ ङ न र . ऋ अ
दास दिप दिप दिभ	५ १० १ १०	जिघांसायां(त.)वधे संघाते संघाते नोदे	दास्नोति रिपुं दिपयते दिपति (वा) दिपते दिभयति	न र क ङ अ क इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
दिभ	१०	संघाते	दिभयते	क ड
दिव	१०	अर्द्धे	देवयति	क
दिव	१	प्रीतो	दिवाति	इ
दिव	४	कोडाविभिगीपा- व्यवहारद्युतिमोदम दस्वमकांतिगातिपु	दिव्यति—दिदेव—	य उ
दिव	१०	परिकूजने	परिदेवयतेप्रातः—पक्षी—	क ड
दिश	६	अतिसर्जने (अथ वा) शौचे	दिशते	श ड औ
दिप	१०	मर्दने	दिपयति (वा) देपाति कुचं कामिन्याः	उ कि
दिह	२	उपचये	देगिव (वा) दिग्धे देहो धृतेन	ल न औ
दी	४	क्षये	दीयते	य ड औ
दीक्ष	१	मौख्ये—उपनयने प्रेतादेशेच	दीक्षते. कार्तिकपूर्णिमा- यां यतिः दीक्षते पुत्रं पिता—दीक्षते शिष्यं दीक्षा	
दीधी	२	दीप्तिदेयनयोः	दीधीते गगने भानुः	ल, लृ, र, र, स
दीप	४	दीप्तौ-क्षरणेन	दीप्यते	प ई श्र क
दु	१	गतौ	द्वति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
दंफ	६	संक्लेशे	दृफति रिपुं राजा	श
दभ	६	ग्रंथे	दृभति माल्यं	श ई
दृभ	१-१०	भये संदर्भे	दर्भति (वा) दर्भयति	कि ई
दृश	१	प्रेक्षणे	पश्यति	इर् ओ
दृह	१	वृद्धौ	दर्हति	इ
दृह	१	वृद्धौ	दृहति	ग गि
दृह	९	भये	दृणाति	म
दृह	१	भये	दग्ति	ग गि
दृह	९	विदारणे	दृणाति	य
दृह	४	विदारणे	दृयति	न
दृह	९	हिंसायां	दृणोति	ह
दृह	१	पालने	दीनं दयते	ऋ
दृप	१	क्षरणे	देपति	श ऋ
देव	१	देवने—परिवेदनेच	देवने देवः स्वर्गे	प
देव	१	शोधने	दायति जलेन देहं	य
दी	४	अवखंडने	शिरः शत्रोरवद्यति	ल
द्यु	२	अभिगमने	द्यौति रामो जरासंधं	ल ऋ
द्युत	१	दीप्तौ	द्योतते	
द्यौ	१	न्यक्करणे	द्यायति तलं सायुः	
द्रम	१	गतौ	द्रमाति	ट
द्रवम्	११	परितापे	द्रवस्यति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
द्रा	२	कुत्सायां (त०)	द्राति निद्राया निद्रालुः	
द्राक्ष	१	घोरवासिते (त०)	द्राक्षति	ई
द्राक्ष	१	शोषणालमथर्योः	द्राक्षति हिमेन वृक्षः	कृ
द्राद्य	१	आयासे-सामर्थ्ये	द्राद्यते मोक्षे मुनिः श्र-	कृ ड
द्राड	१	विशरणे	मायामशक्तिषु	
द्राह	१	जागरे, निक्षेपे च	द्राडते पुष्पं	कृ ड
द्रु	१	गतौ	द्राहते	कृ ड
द्रु	१	अनुतापे	द्रवति लोहं द्रावः	
द्रुड	१	मञ्जने	द्रवति	र ण
द्रुड	१	मञ्जने	द्रोडति	
द्रुड	६	मञ्जने	द्रुडति	श शि
द्रुण	६	गतौ, जैह्वे, वधे	द्रुणति हयः द्रोणेः	श
द्रुह	४	जिघांसायां	द्रुह्यति रिपुं राजा द्राहः	य लृ ऊ
द्रू	९	हिंसायां-गतौ	द्रूणाति (वा) द्रूणाति	ग अ
द्रेक	१	शब्दोत्साहयोः	द्रेकते युद्धे वीरः	कृ ड
द्रै	१	स्वप्ने	द्रायति रात्रौ लोकः,	
द्रु	१	स्थगने	निद्रा, निद्रालुः	
द्रु	१		द्वरति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
द्विष	१	अप्रीतौ	द्वेषति (वा) द्वेषते द्वेष.	अ
द्विष	२	अप्रीतौ	द्विषन्ति मंदाधारितं म- हात्मनां (त०) द्विष्टे द्वेषः	ल औ अ
धक्क	१०	नाशने	धक्कयति	क
धण	१	ध्वाने	धणति	
धण	१	रवे	धणति	
धन	२	धान्ये	दधन्ति शालि भूमि धनं धान्यं	ल लि र
धर्ज	१	गतौ	धर्जति	
धव	१	व्रजे	धंवति	इ
धा	२	धारणपोषणयोः (त०) दाने	दधाति (वा) धत्ते	लि डु अ
धाव	१	गतौ—श्रुद्धौच	धावत्यश्वः धावति (वा) धावते कोष्टेन दन्तान्	उ अ
धि	५	प्राणने	धिनेति हव्येन हिर- ण्यरतसं	न
धि	६	वारणे	धियाति वेदं बालः	श
धिक्ष	१	मंदापने-जीवनेक्रे- शनेच	धिक्षते बान्हिः कोष्टेन	ड

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
धिव	९	प्रीणने (त०)	धिनोति हव्येन हिरण्य-	न इ
धिप	३	गतौ	रेतसं	लि र
धी	४	शब्दे	दिघेष्टि	य ङ औ
		अनादरे (त)	धीयते सायुं खलः	
		अधारे		
धु	९	कंपने	धुनोति (वा) धुनुतेशा	न ज
			लिंनं वातः	
धु	१	स्थैर्ये (तथा) स-	धुवति ध्रुवः	वि
		पिणे		
धु	६	स्थैर्ये-सर्पणेच	ध्रुवति	श शि
धुर, दूर	४	हिंसायां (त)	धूर्यते रिपुं बली	य ई व
		गतौ		
धुने	१	हिंसायां	धूर्वति	ई
धू	१	कंपने	धवाति (वा) धवते	व
धू	१	जवध्वंसने	धवते पत्रं वृक्षात्	ह
धू	९	कंपने	धूनोति (वा) धूनुते	न व
			शालिनं वातः	
धू	६	विधूनने	धुवति हस्तं नटः	श शि
धू	९	कंपने	धूनानि पल्लवं वातः धूनः	ग गि
			ना-नं	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
धू	१०	कपेन	धावयति (वा) धावय- ने धूनयति (यथा) वायुर्विधूनयति केसर- पूष्पंजातं.	क ज
धूक्ष	१	संदीपनेजीवने क्ले- शनेच	धूक्षते बान्धिः काष्ठेन	ङ
धूप	१	संतापे	धूपायति	
धूप	१०	भाषार्थे (त०) दीप्तौ	धूपयति	क
धूश	—	—	इति धूस (तथा) धूय	
धूप	१०	धूशे	(इतिधूस)	क
धूप	१०	संहतो हिसे	धूपति	उ
धूस	१०	कान्तिकरणे	धूसयत्यंगं कुंकुमे जनः	क
धृ	१	धारणे	धरति (वा) धरते, धुरं, धुर्यः धुरंधरः	ज
धृ	१०	धृतौ	धारयति	क
धृ	६	अवस्थाने	ध्रियते यावदेकोपि रिपुं	श ङ
धृ	१	दृष्टेने	धरति	
धृ	१	सेचने	धरति मेघो भूमिं	
धृ	१	अवध्वसे	धरते	ङ
धृज	१	गती	धर्जति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
धृज धृष	१ १-१०	गतौ प्रहसने-अमर्षेच	धृञ्जति धर्षति (वा) धर्षयति धृष्टो धार्मिकं	इ कि
धृष धृष	१० ९	शक्तिबन्धे प्रागल्भ्ये	धर्षयते धृष्णोति सभायां देवद- त्तः धृष्टः, दा टं:	क ङ न नि आ
धे धेक	१ १०	पाने दर्शने	धयति वत्सो धेनुं धेकयति कपर्द्दिनं शैवः	ट क
धोर ध्मा	१ १	गतिचातुर्ये शब्दाग्निसंयोगयोः	धोरत्यश्वः धमति शंखं कृष्णः— धमति लोहं लोहकारः	
ध्माक्षत- ध्वाक्ष ध्यै	१ १ १	योरवासिते (त०) कांक्षे चिंतायां	ध्मांक्षति ध्माक्षः ध्यायति हरिं यतिः ध्यानं	इ
ध्रज ध्रज	१ १	गतौ गतौ	ध्रजति ध्रञ्जति	इ
ध्रण, ध्रण	१	ध्वाने	ध्रणाति (तथा) ध्र- णाति	
ध्रस ध्रम	९ १०	उत्क्षेपे-उञ्छे उत्क्षेमे	ध्रस्त्राति ध्रासयति	ग उ क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
प्राक्ष		गोरवासिते (त०)	प्रांक्षति	इ
	१	काक्षे		क
प्राख	१	शोषणालमर्थयो.	प्राखति हिमेन वृक्ष.	क ड
प्राघ	१	शक्तौ	प्राघते	क ड
घाड	१	विशरणे	घाडते पुष्पं	
भिज		गतौ	भेजति	श
ध्रुव	६	गतिस्त्रैर्ययो.	ध्रुवति	श शि
ध्रू	६	गतिस्त्रैर्ये	ध्रुवति	ड क
ध्रुक	१	शब्देऽत्साहयो	ध्रुकते	
ध्रै	१	तृप्तौ	ध्रायति	
ध्वज	१	गतौ	ध्वजति	ध्वज
ध्वज	१	गतौ	ध्वजति	इ
ध्वण	१	वाने	(इतिध्वन)	
ध्वन	१	शब्दे	ध्वनति ध्वनि.	ध्वन मि
ध्वन	१०	शब्दे	ध्वनयति ध्वन	ध्वनि क त
ध्वन	१०	शब्दे कपे	ध्वनयति धनुर्द्धन्वी (वा)	
			ध्वानयति (यथा) ध्वा	क
			नयति वृक्ष वायुः	
ध्वस	१	गतौ चूर्णने भ्रं-	ध्वसते	उ ड ल
		शेच		
ध्वृ	१	यर्णे, कौटिल्येच	ध्वरति वशं	अध्वर

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
ध्वाक्ष	१	धोरवासिते	ध्वांक्षति	इ
नक्	१०	नाराने	नैक्यति	क
नख	१	सर्पणे	नखति	नखः
नज	१	चिह्ने	नंजते	इ ओ ङ
नट	१	नृत्ये (त०) हिंसायां	नटति नटः	
नट	१०	अवस्थ्यंदने, भ्रंशे, दीप्तौ च	नाटयति हस्तं नटी	क
नड	१०	भ्रंशे	नाडयति	क
नद	१	अव्यक्तेशब्दे	नदति नदी	
नद	१	समृद्धौ	नन्दति-ननन्द पारिलव- नेत्रया नृपः नन्देत चकु- लं पुंसां	इ टु
नन्व	१	गतौ	नन्वति	
नम	१०	नृत्यां	नामयति (वा) नमयति	
नम	१	प्रव्हेशब्दे	नमति, प्रणमति गुरुं शि- ष्यः, नमस्कारः	
नय	१	गतौ	नयते	ङ
नर्द	१	शब्दे	नर्दति ननर्दचासुरः सोपि	
नर्व्व	१	गतौ	नर्व्वति	
नल	१०	अपवारणे	नालयति (वा) नलति	कि

धातु	गण	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
नल.	१०	दीप्तौ	नालयाति	क
नह	४	बंधने	नह्यति (वा) नह्यते	य ज औ
नाथ	१	याञ्चोपतापैश्चर्या- मीः पु	नाथते (तथा) नाथति (यथा) नाथतिखल साधुं नाथति याचकां वदा न्यं नाथः	क्र
नाथ	१	याञ्चोपतापैश्चर्या- मीः पु	नाथते	क्र ड
निक्ष	१	चुंबने	निक्षति मुष्टं	
निद	१	कुत्साया	निन्दति निन्दा	इ
निष	१	मंचने	नेपति	उ
निष्क	१०	परिमाणे	निष्कयते निष्क	क ड
नील	१	वर्ण	नीलति पंठ नीलः नीली	
नीव	१	स्थाल्ये	नीवति	
नुड	६	वधे	नुडति	दा शि
नृत	४	गात्रविक्षेपे	नृत्यति नर्तकः	य
न	१	नये	नरति	म
पक्ष	९	नये	नृणाति नरं राजा	ग मि
पक्ष	१०	परिग्रहे	पक्षयति पक्षः	क क त

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पच	१	पाके	पचति (वा) पचते पचा पाकः पचनं पक्वः का क्वं	अ औ ष
पच	१	व्यक्तीकरणे	पचते गुणं कविः	ङ औ
पच	१	व्यक्तीकरणे	पंचते	इ ङ
पच	१०	विस्तारे	पञ्चयति पाञ्जिकां मिश्रः	क इ
पट	१०	ग्रंथे (त०) वेष्टने	पटयति माल्यं माल्यकारः	क त
पट	१०	भाषायां-त्वपि	पाटयति	क
पट	१	गतौ	पटति	
पठ	१	व्यक्तायां डाचि	पठति पाठं पाठकः	क
पड	१०	संहृतौ	पडयति	क इ
पड	१०	संहृतौ-नाशने च	पण्डयति	ङ इ
पड	१	गतौ	पण्डते पण्डा पण्डितः	ङ
पण	१	व्यवहारे (त०)	पणते वाणिगापणे पणः	
		स्तुतौ	पणायते हरिं विप्रः	
पण	१०	व्यवहारे	पणयत्यापणे उपसर्गप्र-	क. त
			पाणयति	
पत	१	गत्यां ऐश्वर्ये	पतति	ल ज
पत	४	ऐश्ये	पत्त्यते	य ङ
पत	१	गतौ (त०) ऐश्ये	पतयति पतं गोगगने	क त
पथ	१	गतौ	पथति	ए ज

धातु-	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पथ	१०	गतौ	पंथयति	पांय. क इ
पथ	१०	प्रक्षेपे	पाथयति	क
पद	१	स्थिर्ये	पदति	ए
पद	४	गतौ	पद्यते	य ड औ
पद	१०	गतौ	पदयते	क त ड
पन	१	व्यवहारे (त०)	पनते वणिगापणे इति	
		स्तुतौ	पण पनायति हरिं विप्र.	
पंपस्	११	दुःखे	पंपस्यति गदेनार्तः	ट
पंव	१	गतौ	पंवति	
पय	१	गतौ	पयते	ड
पयस्	११	प्रसूतौ	पयस्यति	ट
पर्ण	१०	हरितभावे	पर्णयति तरुपर्णं भेद	क त
			पर्ण, पर्णः	
पर्प	१	गतौ	पर्पति	
पर्द	१	कुत्सितेशब्दे	पर्दते गर्दभः	
		व्यवहारे, स्तुतौ च		
पर्व	१	गतौ	पर्वति	
पर्व	१	पूरणे	पर्वति	
पर्ष	१	स्नेहने	पर्षते पुत्रे पिता पर्षतू-स	अ
			स्पर्षते	
पल, पल्ल	१	गतौ	पलति (वा) पल्लति	ज

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पल	१०	रक्षणे	पालयति (वा) पलयति	क
पल्युल	१०	लूनिपूत्योः	पल्युलयति	क त
पल्यूल				
पश	९	वाधे—ग्रथेच	पशति (वा) पशते	ञ
पश	१०	बन्धे	पाशयति पाशेन पशुं गो- पः पाशः	क
पश	१०	बन्धवाधयोः— स्पर्शगत्योश्च	पाशयति पाशः	क त
पष	१	वाधनस्पर्शयोः बन्धे—स्पर्शने ग्रथे	पषति (वा) पषते	ञ
पप	१०	बन्धे—अनुपसर्गात्- गतौ	पपयति	क
पष	१०	बन्धवाधयोः स्पर्शगत्योश्च	पषयति	क त
पस	१	वधग्रंथयोः	पसति (वा) पसते	ञ
पस	१०	बन्धे	पसयति	क
पस	१०	नाशने	पंसयति पांसुः	क इ
पा	१	पाने	पिबति पाने	
पा	२	रक्षणे	पाति पुत्रं पिता	ल
पार	१०	समाप्तौ	पारयति राजसूयं युधि- ष्ठिरः पारणापारं	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पाल	१०	रक्षणे	पालयति	क
पि	६	गती	पियति	श
पिच्च	१०	कुट्टने	पिच्चयति सोमं सोमपाः	क
			पिच्चटं	
पिछ	६	बाधे	पिछति	श
पिछ	१०	कुट्टने	पिछयति	क
पिज	१०	निकेतने	पेजयति	क
पिज	२	वर्णे-वर्णपूजयोः	पिक्ते पिंजरः	ल इ ड
पिज	१०	हिंसायां-भाषट्कार्ये- पट्टवलादाननिकेत- नेषु	पिजयति	क इ
पिट	१	संहतौ (त०)	पेटति धान्यं	पेटकः
		ध्वनौ		
पिठ	१	हिंसायां (त०)	पेठति	
		क्लिशि		
पिड	१	संघाते	पिण्डते	पिण्ड ड इ
पिड	१०	संघाते	पिडयति	पिड. क इ
पिल	१०	क्षेपे	पेलयति	क
पिव	१	सेचने	पेवते	क ड
पिश	६	अवयवे	पिंशति	पेशी श प
पिष	७	संचूर्णे	यवंपिनष्टिचेटी	पेषः ध ल औ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पिष	१०	हिंसायां	पेपयति	क
पिष	१	गतौ	पेषति	
पिम	१	गत्यां	पेसति	क
पिस	१०	निकेतने हिंसावल- दानेषु गत्यां च	पेसयति	क
पिस	१०	भाषार्थे, त्विषि च	पिसयति	क इ
पिस	१-१०	त्विषि	पिसयति (वा) पिसति	कि इ
पिस	१०	नाशे	पिसयति	क इ
पी	४	पाने	पीयते पयः शिभुः	य इ
पीड	१०	अवगाहने (त०) वधे	पीडयति प्रजामवग्रहः पीडा	क क
पील	१	प्रतिष्ठे	पीलति बालः पीलुः	
पीव	१	स्थौल्ये	पीवति पीवरः	
पुच्छ	१	प्रमादे	पुच्छति कृत्ये मूढः पुच्छं	
पुट	१०	भाषार्थे-चूर्णे भा- सि च	पोटयति	क
पुट	६	संश्लेषणे	पुटति कामं रतिः पुपोट	श शि
पुट	१०	संसर्गे	पुटयति संपुटे पुष्पं जनः	क त
पुट	१०	दीप्तौ	पुंटति (वा) पुंटयति	इ कि
पुट्ट	१०	अल्पी भावे तौ- छये	पुट्टयति शोकेन देहः	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पुड	६	उपक्षेपे	पुडति	श
पुड	१	मर्द्दे-खण्डनेच	पुण्डति	इ
पुण	६	शुभे कर्मणि	पुणति स्नानेन जन पुण्य ण्या-ण्य निपुण णा-ण	श
पुथ	१०	भाषार्थे, त्विषिच	पोथयति	क
पुथ	४	हिंसाया	पुथ्यति रिपुं वातपोथ	य
पुथ	१	हिंसाया सकृदेशेच	पुथति	इ
पुर	६	अग्रगमने	पुरति कौरवान् भीष्म, पुपोर	श
पुर्व	१	पूरणे	पूर्वति जलेन कलशं	श
पुल	६	महत्वे	पुलति	ज
पुल	१	महत्वे	पोलति	क
पुल	१०	सघाते उच्छिन्नौ	पुलयति तृण कृपाण	
पुप	१	पुष्टौ	पोपति देह	य ऋ औ
पुप	४	पुष्टौ	पुप्यति	ग
पुप	९	पुष्टौ	पुष्णाति देह मूर्ख	क
पुप	१०	धारणे	पोपयति कवचं कुमार	य
पुप्प	४	विकसने	पुप्पयति कलिका प्रात	
			पुप्प	य इर्
पुस	४	विभागभ्रंशयो	पुम्यति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पुंस	१०	मर्दे—अभिवर्द्धनेच	पुंसयाति	क
पुस्त	१०	आदरानादरयोः	पुस्तयति धनं पुस्तकं	क
पू	९	यन्त्रे (त०) पवने	पुनाति (वा) पुनीते	ग अ गि
			विश्वं गंगा	
पू	१	पवने	पवते गंगा पवन	ङ
पू	४	पवने	पूयते	य ङ
पूय	१०	संघाते	पूप्पयति	क
पूज	१०	पूजायां	पूजयति गुरुं शिष्यः	क
			पूजा	
पूण	१०	संघाते	पूणयति	क
पूय	१	विशरेण दुर्गं धेच	पूयते मृतकः	ई ङ
पूर	४	आप्यायने	पूर्यते जलेन तरुः	य ई ङ
पूर	१०	आप्यायने	पूरयति धनैर्यात्रिकं कर्णः	क
पूर्व	१०	निकेतने	पूर्वयति	क
पूर्व	१०	निकेतने	पूर्वयतिगृही	क
पूल	१	संघाते	पूलति तृणानि	
पूष	१	वृद्धौ	प्रतिक्षणं पूषति यस्य	
			विक्रमः	
पृज	२	वर्णे	पृङ्के	इ ङ ल
पृ	९	प्रीतौ	पृणोति साधुरतिथीन्	न

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण	अनुबन्ध
पृ	६	व्यायामे	धर्मो व्याप्रियते साधु व्यापार	श ड
पृ	१०	पूरणे (त०) पा लेन	पारयति पयसा कलश	क
पृ	३	पालनपूरणयो	पिपतिं पुत्र धनेन पिता	लि
पृच	१ १०	सयमने (त०) स पर्के	पर्चति (वा) पर्चयति	वि
पृच	२	सपके	सपृक्त साधुभि साधु	उ इ ड
पृच	७	सपके	सपृणक्ति न केनापि यति	ध इ ड
पृज	२	सपके	पृक्ते	ल ड ड
प्रेष	१	गतौ	प्रेषते	ऊ ड
पृड	६	मुखे	पृडति धर्मो लोक	श
पृण	६	प्रीणने	पृणति हरि भक्त्या बुध पपण	श
पृथ	१०	प्रक्षेपे	पृथयति	क
पृप	१	सेके	पृपति	उ
पृ	९	पालनपूरणयो	पृणाति विश्व जलेन शक्र	ग गि जि
पृ	३	पालनपूर्यो	पिपतिं	लि
पृ	१०	पूर्यो	पारयति	क
पेण	१	पेयणगातिश्छेपेषु	पेणति	ऊ
पेल	१	गतौ	पेलति	ऊ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पेव	१	सेवने	पेवते	ऊ ड
पेस	१	गतौ	पेसति	ऊ
पै	१	शोषणे	पायति हिमेन वृक्षः	
प्यै	१	वृद्धौ	प्यायते	ड
प्याय	१	वृद्धौ	प्यायते	इ औ ड
प्युप	४	भागे-दाहे	प्युप्यति	य इर्
प्युप	१०	उत्सृजे	प्युपयति	क
प्रच्छ	६	जिज्ञासायां	पृच्छति गुरुं शिष्यः	श औ
प्रथ	१	प्रख्याने	प्रथते विद्यया कविः प्रया	म प ड
प्रथ	१०	प्रक्षेपणे (त०)	प्राथयति	क
		ख्यातौ		
प्रस	१	विस्तारे, प्रसवु	प्रसते परगुणं साधुः	ड
प्रा	२	पूरणे	प्राति जलेन घटं	ल
प्री	९	तर्पणे-कान्तौ च	प्रीणाति (वा) प्रीणीते	ग ड
			पितरं पुत्रः प्रीतः ता,	
			तं प्रीतिः	
प्री	४	प्रीतौ	प्रीयते धर्मसाधुः प्रीतः,	य छ
			ता, तं, प्रीतिः	
प्री	१०	तर्पणे	प्राययति (वा) प्रायय-	क ज
			ति देवतां हविषा यज्वा	
			प्रीणयति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
प्री	१	तर्पणे	प्रयति (वा) प्रयते	ज
प्रु	१	गतौ	प्रवते	ह
प्रुप	१	दाहे	प्रोपति	उ
प्रुप	९	स्नेहनमोचनपूरणे	प्रुष्णाति पृत्रं पिता-विप्रु	ग
		दाहेच	पविप्रुप्	
प्रोथ	१	पर्याप्तौ	प्रोथति (वा) प्रोथते	झ ङ
प्रुक्ष	१	मक्षणे	प्रुक्षति (वा) प्रुक्षते	ञ
			प्रुक्षः	
प्रुव	१	गतौ	प्रुवते	प्रुव ह
प्रुी	९	गतौ	प्रुीनाति	ग
प्रुिह	१	गतौ	प्रुिहते	ङ
प्रुु	१	गतौ	प्रुवते	प्रुव ङ
प्रुप	१	दाहे	प्रोपति	ऊ
प्रुप	४	दाहे	प्रुप्यति गात्रं ज्वरेण	य लृ
			प्रुष्ट , टा, टं, प्रोप	
प्रुप	९	स्नेहनमोचनपूरणे	प्रुष्णाति	प्रुप् ग
		पृ दाहेच		
प्रुप्त	४	दाहविमागयोः	प्रुप्त्यति	य इर्
प्रुव	१	सेवने	प्रुवते	झ ङ
प्सा	२	मक्षणे	प्साति	ल

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
फक्क	१	नीचैर्गतौ	फक्कति खलः	ण मिण
फण	१	निःस्नेहे	फणति	
फण	१	गतौ	फणति (वा) फणयति सर्प्य सर्प्य वैद्यः फाणय- ति दुग्धं	
फर्व	१	पूरणे	फर्वति तमसा निशा ब्रह्मांडं	क ज
फल	१०	संघाते	फालयति	
फल	१	गतौ संघातेच	फलति	
फल	१	निष्पत्तौ	फलति धर्मः	नि आ
फल	१	विशरणे	फलति फालः	
फुल्ल	१	विकसने	फुल्लति कलिका फुल्लं	
फेल	१	गतौ	फेलति फेला	क्क म
फूल	१	जीवने	फवलति	
वक्क	१	गतौ	वंकते	
वक्क	१	कौटिल्ये	वंकते चित्तं खलः वंकः	इ ल इ ल क
वज	१०	मार्मणसंस्कारे	वाजयतियोद्धा वाजः वाजिनः	
वट	१०	वंटने	वंटयति धनं भ्राता	
वट	१०	पैल्ये	वटति	क इ
वण	१	शब्दे	वणाति	

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण	अनुबन्ध
बद	१	म्यर्थे	बदति	
बध	१	बन्धने, निद्रायाच	बधते बीभत्सते पापसाधु बिभत्सा	इ
बा	१०	सयमने	बाधयति न केशान् द्रौपदी	क
बन	८	याचने	बनुने	द उ ङ
बन्ध	९	बधने	बध्नाति कृष्ण माता	ग औ
बन्ध	१०	बन्धने	बन्धयति	क
बभ्र	१	गतौ	बभ्रति	
बम्ब	१	गत्या	बम्बति	
बब्ब	१	गत्या	बब्बति	
बर्ह	१	बधौ दीप्तौ च	बर्हति	
बर्ह	१	स्मृतिहिंसा दान	बर्हते	इ
बर्ह	१	वाक्षु	बर्हते	इ
बल	१	श्रेष्ठे	बलते	इ
बल	१	दानबधनिरूपेषु	बलति	ज
बल	१	धान्यावरोधे जी	बलति	
बल	१०	वनेषु		
बल	१०	भृतौ प्राणनेच	बलयति बालपिता	क
बल	१०	निरूपणे	बलयते	व ङ
बल्ह	१	श्रेष्ठे	बल्हते	इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
बल्ह	१	स्मृतिहिंसा दान-बल्हते		ड
		वाक्षु		
बल्ह	१०	त्विषि(त०)भाषार्थे	बल्हयति	क
वस्त	१०	अनादृत्यादृत्योः अर्दनेच	वस्तयति	वस्त क
बह	१	वृद्धौ	बहते	ड इ
बाध	१	विलोडने	बाधते	ऋ ड
विद	१	अवयवे	विंदति	इ
विल	६-१०	भेदने-क्षेपचे	विलति (वा) वेलयति	श क
विस	४	क्षेपे	विस्यति	य इरू
बीज	१	गतौ	बीजते	बीजं ड
बुक्क	१-१०	भषणे	बुक्कति (वा) बुक्कयति	कि
		भ्रा बुक्कं		
बुक्क	१०	व्यसने	बुक्कयति	क
बुट	१-१०	हिंसे	बोटति (वा) बोटयति	कि
बुड	६	संवरणे (त०) उत्सर्गे	बुडति	श शि
बुद	१	निशामने	बोदति (त०) बोदते	इरू उ अ
बोध	१	बोधने	बोधति (वा) बोधते शास्त्रं	इरू ज अ
बुध	१	अवबोधने	बोधति शास्त्रं बालः प्र- बोधः	औ

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण.	अनुबन्ध
बुध	४	अवगमने बुभु-	बुध्यते (अथवा) बुध्यति	य औ
बुन्द	१	क्षयाच्च निशामने	बुदति (वा) बुंदते	इर उ न
बुन्ध	१	निशामने	बुन्धति (वा) बुन्धते	इर उ न
बुन्ध	१०	बन्धे	बुन्धयति	क
बुल	१०	मज्जने	बोलयति	क
बृह	६	उद्यमे	बृहति वैश्य बृहती बर्हि (इति बृ)	श उ
बृ	—	—	ब्युस्पति	य इर
ब्युस	४	हानौ	ब्रणति	ल न
ब्रण	१	शब्दे	ब्रवीति (वा) ब्रूते	क
ब्रू	२	यक्ताया वाचि	ब्रूसयति व्याघ्रश्चौर	न
ब्रूस	१०	हिंसाया	भक्षति (वा) भक्षते	क
भक्ष	१	भक्षणे	भक्षयति	न औ
भक्ष	१०	अदने	भजति (वा) भजते वि	क
भज	१	सेवाया	प्युबुध भाग , भक्ति	क इ
भज	१०	विश्राणने पाकेच	भाजयति मात्रिणे राज्य राजा	ध ओ औ
भज	१०	भापार्थे—भासि	भजयति	म
भञ्ज	७	आमर्द्दने	भनक्ति पादप दन्ती भग	
भट	१	परिभाषणे	भटति	

श्रातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
भट	१	भृतो	भटति भृत्यं	भटः
भट	१०	प्रतारणे	भंटयति बालं भंटकः	क इ
भड	१	परिहासे	भंडते	इ ड
भड	१०	शिवे	भंडयति	क इ
भण	१	शब्दे	भणति	ऋ
भद	१	मुत्प्रीत्योः शुभे क-	भन्दते	इ ड
		ल्याणे सुखे च		
भद्	१०	शुभे	भंदयति	क इ
भर्भ	१	हिंसायां	भर्भति	
भर्व	१	हिंसायां	भर्वति	
भर्त्स	१०	तर्जने	भर्त्सयते	क ड
भल	१०	निरूपे—आभंडने च	भलयते	क ड
भल	१	परिभाषणे—हिंसा-	भलते	भालं ड
		यां—दाने च		
भल्ल	१	परिभाषणे—हिंसा-	भल्लते	भल्लः ड
		यां—दाने च		
भप	१	भर्त्सने	भपति श्वा भपकः	
भस	३	भर्त्सनादीप्त्योः	वभस्ति दुर्वलं दुष्टः	लि र
भा	२	दीप्तौ	भाति सूर्यः	भानुः ल ष
भाज	१०	पृथक्कर्मणि	भाजयति धनं आता वि-	क त
			भागः	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
भाम	१	क्रोधे	भामते मूर्खः भामिनी	ङ
भाम	१०	क्रोधे	भामयति	क क त
भाप	१	व्यक्तायांवाचि	भापते भाषा	ऋ ङ
भास	१	दासौ	भासते विद्यया विप्रः	ऋ ङ
भिक्ष	१	याज्ञायां	भिक्षतेऽन्नं भिक्षुः भिक्षा	ङ
			भिक्षुः	
भिद	७	विदारणे	भिनति (वा) भिन्ते द-धन इर् औ	
			धिमाङं कृष्णः, भेदः	
भिल	१०	भेदने	भिलयति	क
भिषज्	११	चिकित्सायां	भिषज्यति भिषक्	ट
भिष्णज्	११	उपसेवायां	भिष्णज्यति	ट
भी	३	भये	बिभेति पापात् भयः	लि
भीम	१	गतौ-शब्देच	भीमति	ऋ
भुज	६	कौटिल्ये	भुजति भुजं	र ओ औ
भुज	७	पालनाभ्यवहारयो	भुनाक्ति भुक्तं हरिः भुंक्ते	घ ज औ
			पिलु फलं कृष्णः भोगः	
भुङ्	१	परणे	भुङ्गते कपटं	इ ङ
भू	१	सत्तायां	गमःस्थिरो भवति	
भू	१-१०	प्राप्तौ	भवते (वा) भावयते	कि ङ
			मोक्षं ज्ञानौ	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
भू	१०	अवकल्कनेशुद्धिम्	भावयति वेदार्थं वैदिकः	क
भूष	१-१०	श्रणयोः अलंकारे	भावना भूषति (वा) भूषयति भूषणं	कि
भृ	१	भरणे	भरति (वा) भरते भि- क्षुरुदरं	ब टु डु
भृ	३	धारणपोषणयोः	विभृते धरां वासुकिः (त०) विभर्ति	लि डु टु ज
भृज	१	भर्जने	भर्जते	ङ ई
भृड	६	निमज्जने	भृडति गंगायां यात्रिकः	श
भृश	१०	दीप्तौ	भृशति (वा) भृशयति	इ कि
भृश	४	अधःपतने	भृश्यति वभर्श	य इर् उ
भृ	९	भर्त्सने भृतौ भृजि	भृणाति कुपुत्रं पिता	ग गि
भेष	१	भये	भेषति (वा) भेषते पा- पात्साधुः	ऋ व
भ्यस	१	भये	भ्यसते	ह
भ्रक्ष	१	अदने	भ्रक्षति	
भ्रण	१	शब्दे	भ्रणति	
भ्रम	१	चलेन	भ्रमति तीर्थं मुनिः	ज ण उ
भ्रम	४	अनवस्थाने	भ्राम्यति लुब्धः भ्रमः भ्रान्तः ता-तं भ्रान्तिः	य भ ज ण उ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
भ्रंश	१	अवसंसने	भ्रंशते भ्रष्टः-ष्टा-ष्टं	उ ड ल
भ्रंश	४	अघापतने	भ्रंशयति वृक्षात्पत्रं बभ्रंश	उ इरू उ
भ्रस्ज	६	पाके	भृज्जति (वा) भृज्जते भृष्टं	श न औ
भ्रंस	१	अवसंसने	भ्रंसते	ङ
भ्रान	१	दीप्तौ	भ्रानते	ङ
भ्रान	१	दीप्तौ	भ्रानते	भ्रानथुः ङ ण ऋ ॢ
भ्राश	१	दीप्तौ	भ्राशते	ऋ ण ॢ ॣ
भ्रास	—	—	(इतिभ्राश)	—
भ्री	९	भरणे (त.) भये	भ्रीणाति नारीं भर्त्ता	ग गि
भ्रुड	६	संवृत्तिसंहत्योः	भ्रुडति	श शि
भ्रुण इ-	१०	आशायां (त.)	भ्रुणयते पुत्रं बंध्या	क ड
ति भ्रूण	—	विशकायां	—	—
भ्रेज	१	दीप्तौ	भ्रेजते	ऋ ङ
भ्रेष	१	चले भये	भ्रेषति (वा) भ्रेषते	ऋ न
भ्रुक्ष	१	अदने	भ्रुक्षति	—
भ्रुश	१	दीप्तौ	भ्रुशते	ऋ ण ॢ ॣ
भ्रुस	—	—	(इतिभ्रुश)	—
भ्रुष	१	गती	भ्रुषति	ऋ
भ्रुक	१	मंडने	भ्रुकते स्तनं कुंकुमेन	ङ इ
भ्रक	१	गती	भ्रुकते	ङ इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मक्क	१	गतौ	मक्कते	ङ
मक्ष	१	संवाते	मक्षति जलेनान्नं मक्षिका	
मख	१	गतौ	मखति	
मख	१	गतौ	मंखति	इ
मग	१	सर्पणे, गतौच	मङ्गति	इ
मगध	११	परिवेष्टने नीचदा स्येच	मगध्यति नीचः	ट
मघ	१	भूषे	मंघति	इ
मघ	१	कैतवे गतौ आ- क्षेपेच	मंघते कितवो द्यूतेन	ङ इ
मच	१	कल्कने	मचते मूर्खः	ङ
मच	१	धारणे उच्छ्रायधृ- त्यर्चाभाःसु	मच्चते माल्यं कंठे मन्त्रः	इ ङ
मञ्ज	१	गत्यां	मन्त्रति	
मञ्ज	१०	मृजाध्वनयोः	मञ्जयति	
मठ	१	निवासे, मदेच	मठति मठः	
मठ	१	शोके	मंठने	इ ङ
मड	१०	सुखे	मंडयति (वा) मंडति मङ्गाति	कि ग इ
मड	१	वेष्टने (त०) वि- भागे	मंडते	इ ङ

धातु.	गण.	वर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
मड	१-१०	मूपायां, हर्षेच	मंडति (वा) मंडयति मंडनं	कि इ
मण	१	शब्दे	मणति	
मंतु	११	अपराधे रोपेच	मंतूयति	ट
मंतु	११	अपराधे रोपेच	मंतूयते	अ ट
मथ	१	विलोडने	मथति	ए ज
मथ	१	कुथे	मंथति	इ
मद	१	स्तुतिमोदमदस्वप्न कान्तिगतिषु जा- ज्येच	मन्दते मुनिर्माधवं मन्द- दाः दं.	इ ड
मद	१०	तृप्तियोगे	मनो मदयते द्रव्यं	क ड
मद	४	हर्षे	माद्यति धनेन भिक्षु. मद- सत्त. ता तं	य,अ,ज,दंइ
मद	१०	हर्षमुपनयो.	मदयति मनो मित्रागम- मदयति रिपु बली	क
मन	८	बोधने	मनुते मुनिः	द ड उ
मन	४	ज्ञाने	धर्म न मन्यते भूदः	य ड औ
मन	१०	स्तंभे	मातयते सेनां दुर्गः	क ड
मन्य	१	विलोडने (त०) कुन्थे	मन्यति रथं ममन्य स- हयं	
मन्य	९	विलोडने	मन्नाति	ग

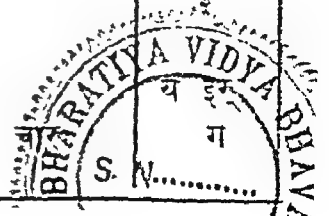
धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मम्ब	१	गत्यां	मम्बति	
मय	१	गतौ	मयति	ङ
मर्व	१	गत्यां	मर्वति	
मर्च	१०	शब्दे	मर्चयति	क
मर्व्व	१	गत्यां हिंसायां च	मर्व्वति	
मर्व्व	१	पूरणे (त०) गतौ	मर्व्वति	
मत्र	१०	गुप्तभाषणे	मंत्रयते मंत्रिणा राजा	क ई ङ
मभ्र	१	गतौ	मभ्रति	
मल	१	धारणे	मलते माल्यं—मलः	
मल	१०	धारणे	मलयति	क त
मल्ल	१	धारणे	मल्लते मल्लः	
मव	१	बन्धने	मवति रज्ज्वा पाटञ्चरं	
मव्य	१	बन्धने	मव्यति चौरं राजा	
मश	१	शब्दे (त०) कोपे	मशति मशकः	
मष	१	हिंसायां	मषति	
मष्क, मस्क	१	गतौ	मष्कते (वा) मस्कते	ङ
मस	४	परिमाणे (त०) परिणामे	मस्यति स्वर्णं स्वर्णकारः मसूरः मासः—मापः—मापकः	य इर् ई
मस्ज	६	शुद्धौ (वा) स्थाने	मस्जनि मृनयः मर्व्वे	ज ट ञे

धातु	गण.	अर्थ	उदाहरण	अनुबन्ध
मह	१	पूजाया	महति	
मह	१०	त्विपि	महयति	क इ
मह	१	वृद्धौ	महते	इ ङ
मह	१०	पूजाया	महयति	क त
मा	२	माने	माति दडेन भूमि— प्रमाण	ल
मा	३	माने शब्दे च	धर्म मिमीते मुनि	लि ड
मा	४	माने	मायते	य ङ
माक्ष	१	काक्षाया	माक्षति	इ
माड	१	माने	माडति (वा) माडते स्वर्ण—माड	ऋ ञ
माथ	१	मुथे	माथति	इ
मान	१	पूजाया जिज्ञासा या च	मीमासते शास्त्र ब्रूय — मीमासा	
मान	१०	पूजाया	मानयति	क
मान	१	पूजाया	मानति	
मार्ग	१०	मस्कारसर्पयो	मार्गयति	क
मार्ग	१ १०	अन्वेषणे	मार्गति (वा) मार्गयति	कि
माज्ज	१०	शब्दे (तथा) पूजाया	माज्जयति—माज्जार	क
माह	१	माने	माहति (वा) माहते	ऋ ऌ ऒ

धातु.	गण.	अर्थ	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मि	९	प्रक्षेपणे	मिनुति (वा) मिनुतेतृण- वायुः	न ज डु
मिञ्	६	वाधे, उत्क्षेपे च	मिच्छति	श
मिज	१०	दीप्ता	मिजति (वा) मिजयति	इ कि
मिथ	१	वधे, मेधायां च	मेथति	ऋ ज
मिद	१०	स्नेहने	मिदति (वा) मिदयति.	इ कि
मिद	१	गर्वे	मेदयते मेदति	
मिद	४	स्नेहने	मेद्यति, मेदं, मेदः मेदस्	य लृ
मिद	१	स्नेहने	मेदते पुत्रे पिता	आ जि ङ
मिद	१०	स्नेहने	मेदयति	क
मिद	१	मेधाहिसयोः	मेदते (वा) मेदति वेदं बालः	ऋ ज
मिध	१	मेधाहिसयोः	मेधति (वा) मेधते	ज ऋ
मिश्र	१०	संपर्के.	मिश्रयति घृतेनान्नं जनः	क त
मिल	६	श्लेषणे	मिलति (वा) मिलते साधुं साधुः मेळकः	श ज
मिव	१	सेके	मिवाति	इ
मिश	१	शब्दे	मेशति	
मिष	१	सेचने	मेषति	उ
मिप	६	स्पर्द्धायां	मिपति कृष्णं शिशुपालः	श

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण	अनुबन्ध
मिह	१	सेचने	मेहति मेह — प्रमेह — मेहन	ओं
मी	१ १०	गतौ मत्स्या च	मयति (वा) माययति	कि
मी	४	हिंसाया	मीयते मान	य ड टु
मी	९	हिंसाया	मीनाति (व) मीनाते रिपु	ग ज
मीम	१	गतौ	मीमति	रु
मील	१	निमेषणे	निमीलति भिया नेत्र	रु
मीव	१	स्थौल्ये	मीवति	
मुच	१०	प्रमोचने मोदने च	मोचयति कचुरु सर्प	क
मुच	६	मोचने	मुञ्चति (वा) त्वामुचते देह	श प ज लृ आ
			निरक्त	
मुच	१	कल्वने	मोचते	ड
मुच	१	कल्वने	मुञ्चते	इ ड
मुच	१	गत्या	मुचनि	
मुज	१०	मृजाञ्चनयो	मोजयति	क
मुज	१	शब्दे—मृजा ञ्चनयो	मुजति मुज	क इ
मुट	१	मर्द्दने	मोटति तरु गज	
मुट	१	मर्द्दने	मुटति	इ
मुट	६	आक्षेपप्रमर्द्दनयो	मुटति कालीयस्य दम्प कृष्ण	श शि

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मुट्	१-१०	संचूर्णने	मोटयति (वा) मोटयति- धानाःशिलया	कि
मुठ्	१	पलायने	मुंठते	इ ङ
मुंड	१	मुंडने	मुंडते मुंडं जलेन नापितः	इ ङ
मुड	१	खंडने	मुंडति मुंडं मुंडी	इ ङ
मुड	१	मग्ने	मुंडते	इ ङ
मुड	१०	मर्द्दने	मोडयति	क
मुण	६	प्रतिज्ञाने	मुणति नियमं मौनी	श
मुथ	१	कुंथे	मुंथति	इ
मुद्	१	हर्षे	मोदते यशसा कविः— आमोदः	जि ङ
मुद	१०	संसर्गे	मोदयति गुडेन धान्यं नारी, मोदकः	क
मुर	६	संवेष्टने	मुरति कंठकेन वार्दो कृ- पकः. मुरः मुरा	श
मुञ्छे	१	मोहसमुच्च्छाययोः	मृञ्छति मुमृञ्छ सख्यं रा- मस्य	आ
मुव्वे	१	वन्धने	मुव्वति	इ
मुष	१	वधे	मापति	इ
मुष	४	स्तेये—छिदि	मुप्यति	य इ
मुष	९	स्तेये	मुष्णाति वनं वा	ग



धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
मुप, मूष	१	स्तेये	मोषति-यो मूषति परद्रव्यं	
मुप्त	४	खंडने	मुत्पति शंकुलया क्रमुकं	य
मुस्त	१०	संपाते	मुस्तयति मुस्ता	क
मुह	४	वैचित्ये	मूढो मुह्यति मोहेन	य उ ल जि
मू	१	बंधने	भवते चारं राजा	ह
मूत्र	१०	प्रस्रवणे	मूत्रयति बालस्तल्पे-मूत्र	क त
मूल, मुल	१०	रोहणे	मूलयति जलेन वृक्षं मा- लाकारः-मूलं	उ क
मूल	१	प्रतिष्ठायां संपाते च	मूलति (वा) मूलते यशः कृष्णस्य मूलं	ज
मृ	६	प्राणत्यागे	म्रियते पोषेन जन्तुः	श ह
मृग	४	अन्वेषणे	मृग्यति घनं भिक्षुः	य
मृग	१०	अन्वेषणे	मृगयते मृगं व्याधः मृ- गया	क त ह
मृज	१	शब्दे	मर्जति	
मृज	१-१०	शौचालंकारयोः	मार्जति (वा) मार्जयति नेदनेन ललाटे नारी, मार्जयति जलेनात्मानं मुनिः	कि ऊ प
मृज	२	गुड्डी	मार्ष्टिज्ञानेनात्मानं	ल उ प
मृड	६	मुले	मृडति धर्मो लोकं	श

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मृड	९	मुखे	मृड्नाति गिरा शुकः	ग
मृण	६	हिंसायां	मृणाति रिपुं मृणालं	श
मृद	९	क्षोदे	मृदनाति नलिनीं गजः- विमर्दः	ग
मृध	१	उंदे	मर्द्धते (वा) मर्द्धति मृधं	
मृश	६	आमर्शने	मृशाति गुरुवचनं साधुः- परामर्शः	श औ
मृष	१	सेचने	मर्षति	उ
मृष	१	सहने	मर्षते दोषं हरिः	ङ
मृष	१-१०	तितिक्षायां	मर्षते (वा) मर्षयेत	कि ङ
मृष	४	क्षमायां	मृष्यति (वा) मृष्यते	य ञ
मृष	१०	क्षांतौ, सहने च	मर्षयति	क त
मृ	९	वधे	मृणाति	ग गि
मे	१	प्रतिदाने	मयते-तिलैर्धान्यं-विनि- मयः नैमेयः निमया वै- मयः विमयः	ङ
मेट	१	उन्मादे	मेटाति धनेन नीचः	
मेड	१	उन्मादे	मेडाति	कृ
मेथ	१	संगे मेधायां वधे च	मेथाति	कृ ञ
मेद	१	मेधाहिसयोः	मेदाति (वा) मेदते मेदः	कृ ञ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
मेघ	१	संगमे वधे	मेघति (वा) मेघते स- खासखायं मेघा, मेघः	कृ ज
मेधा	११	आशुग्रहणे	मेधायति	ट
मेप	१	गत्यां	मेपने	ड कृ
मेव	१	मेवने	मेवते	कृ ड
मोक्ष	१-२०	असने	मोक्षति (वा) मोक्ष यतिशरंगारः	किं
म्रा	१	अभ्यासे	मनति वेदं शिशुः आ- न्नायः	
म्रक्ष	१	संघाते	म्रक्षतिजलेनान्नं	
म्रक्ष	१०	म्रक्षणे म्लेछने च	म्रक्षयतिरजसादेहेकृष्णः	क
म्रच	१	गतौ	म्रचति	
म्रड	१	उन्मादे	म्रडति	कृ
म्रद	१	मर्दने-क्षोदे च	म्रदते बलं बली	ड
म्रुच	१	गत्यां	म्रुचति	इर उ
म्रुन	१	गतौ	म्रुचति	
म्रेट	१	उन्मादे	म्रेटति धनेन नीचः	कृ
म्रुंच	१	गतौ	म्रुंचति	
मुच	१	गतौ	मुचति	इर उ
मुच	१-१०	अव्यक्तायांवाचिदे शोक्तौ च	मुचति (वा) मुचयति मुचः	किं

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मुह	१	उन्मादे	मुहति धनेन नीचः	क
मुड	१	उन्मादे	मुडति	क
मुव	१	सेवने	मुवते	क ड
मु	१	कान्तिसंक्षये	मुपयति, उपम्लापयति, प्रम्लापयति	
मु	१	गात्रविनामे	मुयति पुष्पंवातेन म्लानिः	
यक्ष	१०	पूजायां	यक्षयते	क ड
यज	१	देवपूजासंगतिकरः णदनेषु	यजति हरिं—यजतिताप- सं साधुः पशुना शिवं यजते	ए औ ज
यत	१	प्रयत्ने	यततेमूकायनरः	इ ड
यत	१०	निकारोपस्कारयोः	यातयतिशत्रुं वली—यात- यति ज्ञानेन देहं यतिः	क
यत्न	१	मैथुने	यत्नति	
यम	१	मैथुने	यमति	औ
यम	१	उपरमे	यच्छतिपापात्साधुः	औ उ
यम	१	परिवेषणवेष्टने	यामयत्यन्नंविप्रायसाधुः— यमयति विमार्गात्प्रजां- राजा	क
यत्र	१०	संकोचने	यंत्रयति यंत्रेण खलं रा- जा—यंत्रं	क इ

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण	अनुबन्ध
यस	४	प्रयत्ने	यस्यति धनाय नर प्र	य उ इर
या	२	प्रापणे, गतौ च	यास	ल
याच	१	याञ्जाया	याचति (वा) याचते	क टु डु न
यु	२	मिश्रण, मिश्रणयो	धन याचक	ल
यु	९	बधे	यौति घृतेनान्न यौति ख	ग न
यु	१०	जुगुप्साया	येभ्य साधु यव याव	क ङ
युग	१	वर्जने	युनाति (वा) युनीते	इ
युछ	१	प्रसादे	यावयते वृद्ध युवति	कि
युज	१ १०	सयमने	यौति	र न इर औ
युज	७	योगे	युगति	य ङ औ
युज	४	समार्था	युछति	क ङ
युज	१०	नन्दे	योजति (वा) योजय	य ङ औ
युत	१	भासने	ति हले वृष गोष	क ङ
युध	४	सप्रहारे	युनक्ति (वा) युक्ते यो	य ङ औ
युप	४	व्यापुर्त्वे	गयोगी योग	य इर
			युज्यते गुहाया योगी	
			योजयते	
			योतते	
			युध्यत योध — युद्ध	
			युप्यति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
यूष	१	हिंसायां	यूषयते	क इ
येष	१	प्रयत्ने	येषते	ऋ ङ
यौट, यौ-	१	संक्लेशे	यौटति (वा) यौटति	ऋ
ट, यौड			रुक्मणीं कृष्णः	
रक	१०	आस्त्रादने (त था) आपने	राकयति मोदकं बालः	क
रक्ष	१	पालने	रक्षति, रक्षा	ञि
रग्व	१	गत्यां	रग्वति	
रग्व	१	गत्यां	रग्वति	इ
राव	१	शोषणाद्यमर्थयोः	रावति हिमेन वृक्षः	ऋ
रग	१०	स्वादे आसौ च	रगयति	क
रग	१	शंकायां	रगति साधुः—त्रुलेभ्यः	म ए
रग	१	गतीं	रगति	इ
रघ	१०	भासि	रघयति	क इ
रघ	१	गतीं	रघते रघुः	ङ इ
रघ	१०	आस्त्रादने	राघयति लेहं करेण कुमारः	क
रच	१०	प्रतियत्ने, कृत्यां	रचयति	क त
रञ	१	रागे	रञति (वा) रञतयु- वायुवर्ता (यथा) रज- कः-रागः-रक्तः-तानं	म ओ ञ

धातु.	गण.	वर्थ.	उदाहरण.	अनुव
रज	४	रागे	रज्यति (वा) रज्यते- वस्त्रं रंगकारः	य ज ओ म
रट	१	वाचि	रटतिकाक.	
रट	१०	परिभाषणे	रटयति विराटः	क
रठ	१	भाषणे	रठति	
रण	१	गतौ	रणति रणः	म
रण	१	शब्दे	रणति	
रद	१	विलेखने	रदतिभूवनंवराहः रदन	
रघ.	४	हिंसायां (त०) पाकेसराद्धौ च	रघ्यति पाशंडी वैदिकं- विराधः	य लृ उ
रप	१	व्यक्तायांवाचि	रपति	
रफ	१	गत्यां (त.) वधे	रफति	
रफ	१	गत्यां (त.) वधे	रफ्फति	इ
रव	१	शब्दे	रंवते	इ ड
रव	१	गतां	रंवति	इ
रभ	१	राभस्थ	रभने ब्रजेकृष्णः सुरभि (आउपसर्गे) आरभते पठितुं	औ रु
रभ	१	शब्दे	रंभते	इ ड
रम	१	क्रोडायां	रमते	उ ड ज औ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
रम	१०	क्रीडायां	रमयति (विउपसर्गे) विरामयति	
रग्य	१	गतौ	रग्यते रग्यः	ङ
रर्क	१	गतिवधयोः	रर्कति	
रव	१	व्रजे	रंवति	इ
रस	१	शब्दे	रसति	
रस	१०	आस्वादनेस्तेहनेच	रसयति रसनयाद्राक्षार- सिकः	क त
रह	१	त्यागे	रहतिगृहं विरक्तः, वि- रहः, रहरहम्	
रह	१०	त्यागे	रहयति गेहं विरागी	क त
रह	१	गतौ	रंहयतिवायुः, रंहः, रं- हम्. रंहसा	इ
रंह	१०	गतौ-त्विपि च	रंहयति	क त
रा	२	दाने (त.) आदाने	राति धनं विप्राय	ल
रात्र	१	मामर्थ्ये	रात्रतेयुध्वायवीरः	क्र ञ
राज	१	दीप्तां	राजते (वा) राजति राजा	क्र ञ
राध	४	संसिद्धौ	राध्यति ज्ञानेन यनिः	य औ
राध	५	संसिद्धौ	राधोति योगेन मुनिः	न औ

धातु.	गण	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
राश	४	शब्दे	राश्यते पक्षी	य ड ऋ
रास	१	शब्दे	रासते	ऋ ड
रि	९	हिंसायां	रिणाति मलिम्लुचः पाथं	न
रि	६	गतौ	रियति	श
रिग	१	गतौ	रिंगति रिंगणं	इ
रिच	१-१०	वियोजनसंपर्चन- योः	रेचाति (वा) रेचयति राज्यं रिपोः रेचयति ह- रितक्यारोगी	कि
रिच	७	विरेचने	रिणाक्ति (वा) रिक्ते- रोगी-विरेकः	धजइरू औ
रिज	१	ऋज्यर्थे	रेजते	ड
रिफ	६	कत्थनयुद्धनिंदा- हिंसादानेषु	रिफति रिपुंभूरः-रेफः- फा-फं	श
रिम्फ	६	वधे	रिम्फति	श प
रिव	१	व्रजे	रिवाति	इ
रिश	६	हिंसायां	रिशति	श औ
रिप	१	हिंसायां	रेपाति	
रिप	९	विप्रयोगे	रिप्णाति संन्यासी संव- धिम्यः-	ग
रिह	६	कत्थनयुद्धनिंदा- हिंसादानेषु	रिहति दुर्जनः साधुं	श

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
री	४	लवणे	रीयते जलं वटात्	य ड औ
री	६	रेपणे वधे गतौ च	रीणाति	ग मि
री	२	प्रजनने	रेति नारी	ल
रु	२	शब्दे	रंति	ल टु
रु	१	रोपे, वधे, गत्यां च	रवते चौरायराजा—रवः रविः	ड
रुक्ष (वा)	१०	मारुप्ये	रुक्षयतिदुष्टः रुक्षः—क्षा-	क त
रुक्ष			क्षं	
रुच	१	वृत्तौ प्रीतिप्रका- शयोः	रुचते गोरोचना	ल ङ
रुज	६	रोगे, भंगे, मंगे च	रुजति रोगेन हस्तः	श ओ औ
रुज	१०	हिंसे	रुजयति	क
रुट	१	प्रतिवाते (त)	रुटने	ल ङ
रुट	१०	दीर्घां	रुटयति	क
रुट, रुडच	१	रूपि घृत्तौ च	रुटति धनं	इ
रुट	१	स्तेये	रुटति कलिधर्मं	
रुट	१	उपवाते	रुटने	चट ङ
रुट	१	प्रतिवाते	रुटति	इ
रुट	१	गत्यान्त्यास्तेय- योऽपि	रुटति	
रुद	२	अश्रुविमोचने	रुदीति रुदनं	ल व इर

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण	अनुबन्ध
रुद रुध	१ ४	चेष्टाया अभिलाषे	रुदति सुखाय (अनुउपसर्गे) अनुरध्य ते कृष्ण गाप्य (यथा) अनुरुध्यति	इ य ङ औ
रुध	७	आवरणे (त) रुन्धे	रुणधि गोपां गा गोष्टे	[र, औ ध, झ, जि, इ
रुप	४	न्यामुल्लेखे	रुप्यति	य इ र
रुश	६	हिंसाया	रुपति	श औ
रुश	१०	दीप्ता	रुशयति (वा) रुशति	इ कि
रुप	१	हिंसाया	रोपति	
रुप	४	रोपे प्रतिघाते च	रुप्यति रोप	य इ रू जि
रुप	१०	रोपे	रोपयति रोप	क
रुह	१	जन्मप्रादुर्भावयो	रोहति मृत्तिकाया घट रो हति विष्णुर्मेमाया	जि ज आ
रूप	१०	रूपक्रियाया	रूपयति गात्रविगर्सीणी रूप, निरूपण	क त
रूप	१	भूषाया	रूपति शरीरमन्त्ररणेन मृगया प्रियायं	
रेक	१	शकाया	रेकते	क ङ
रेगा	११	क्षयापानादनयो	रिषायति याचत स्वार्थं गनिन	ट

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
रुद	१	चेष्टायां	रुंदति सुखाय	इ
रुध	४	अभिलाषे	(अनुउपसर्गे) अनुरुध्य- ते कृष्णं गोप्यः (यथा) अनुरुध्यति	य ङ औ [र, औ
रुध	७	आवरणे (त) रुन्धे	रुणाधि गोपां गां गोष्टे	ध, ज, जि, इ
रुप	४	व्याकुलत्वे	रुप्यति	य इ र
रुश	६	हिंसायां	रुपति	श औ
रुश	१०	दीप्तौ	रुंशयति (वा) रुंशति	इ कि
रुप	१	हिंसाया	रोपति	
रुप	४	रोपे प्रतिघाते च	रुप्यति रोपः	य इ र् जि
रुप	१०	रोपे	रोपयति रोपः	क
रुह	१	जन्मप्रादुर्भावयोः	रोहति मृत्तिकाया घटः रो- हति विष्णुर्देवक्या	जि ज आ
रूप	१०	रूपाक्रियायां	रूपयति गात्रं विलासीनी- रूपं, निरूपणं	क त
रूप	१	भूषायां	रूपति शरीरमलंकरणेन- मुग्धा प्रियायं	
रेक	१	शंकायां	रेकते	क ङ
रेखा	११	स्त्रावासादनयोः	रेखायति याचकः स्वार्थ- दानेन	ट

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
रेज	१	दीप्तौ	रेजते	ऋ ङ
रेट	१	परिभाषणे, याचनेच	रेटति (वा) रेटते	ऋ ङ
रेप	१	शब्दे, गमनेच	रेपते	ऋ ङ
रेभ	१	शब्दे	रेभते	ऋ ङ
रेव	१	लुवेगतौच	रेवते रेवा रेवती	ऋ ङ
रेष	१	अव्यक्ते शब्दे	रेषते रेषा	ऋ ङ
रै	१	शब्दे	रायति	.
रोड	१	अनादरे उन्मादेच	रोडति खलः साधुं	ऋ
रौट	१	अनादरे	रौटति	ऋ
रौड	१	अनादरे	रौडति	ऋ
लक	१०	आस्वाद्यने (त.) आपने	लाकयति	क
लक्ष	१-१०	दर्शनांकनयोः	लक्षयति (वा) लक्षय- ते-लक्षणं	क इ
लक्ष	१०	आलोचने	लक्षयते	क ङ
लख	१		लखति	
लख	१		लंखति	इ
लग	१	संगे	लगाति धर्मं विप्रः लग्नं	म ए
लग	१०	स्वादापने	लगयति	क
लग	१	गतिखंजयोः	लंगति	इ
लघ	१	गतौ अभुगत्याः	लघते	इ ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
लघ	१	शोषणे-गतौ	लंघति मर्यादां लंघति पापी	इ
लभ	१०	मापार्थे-त्विषि	लंघयति	क इ
लु	१	लक्षणे	लुङति चक्रेण गृहं	
लज	१०	अन्तर्द्धौ	लजयति	क
लज	१०	भानिकेतनहिंसाव- लदानेषु	लजयति	क इ
लज	१०	प्रकाशने	लजयति विद्यां विप्रः न्याजा	क त
लज	१	भर्त्सने	लजति	
लज	१	भर्त्सने	लंजनि	इ
लज	६	व्रीडे	लजति (वा) लजते वधुः	श ज इ ओ
लंज	१०	भासने	लंजयति	फ त
लट	१	वाह्ये वाह्योक्तौ	लटति स्वार्थे लोकाः	
लट	१	विलासे	लटति	
लट	१	जिह्वोन्मपने	लटयति रसनां परद्रव्ये चोरः	म
लट	१०	उपसेवायां	लटयति शिशुं माता	क
लट	१०	सोप्सायां	लटयते	क च
लट	१-१०	भाषणे भासनेच	लंडति (वा) लंडयति	कि इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
लड	१-१०	उत्क्षेपे	लंडाति (वा) लंडयति.	क्रि इ औ
लड	१०	आक्षेपे	लडयति	क त
लप	१	व्यक्तायांवाचि	लपति विलापः प्रलाप आलापः अनुलापः वि- प्रलापः संलापः सुप्रलापः अपलापः	क
लव	१	अवसंसेने अवलंब- ने शब्देच	लवते शस्त्रायां	इ ड
लभ	१	शब्दे	लभते	ई ङ
लभ	१	प्राप्तौ	लभते भिक्षां लाभः सु- लभः भा भं लभति पुन- रुत्थानं	इ ष डु औ
लय	१	गतौ	लयते	इ
लर्व	१	गतौ	लर्वति शकटेन गोकु- लात् मयुरानंदः	
लल	१०	ईप्सायां	लालयते मृतं बाला	क ङ
लश	१०		(इतिलस)	
लप	१	क्रान्तौ	लपति (वा) लपते धर्मं साधुः	अ
लप	४	क्रान्तौ	लप्यति (वा) लप्यते	अ न
लप	१०		(इतिलस)	

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण	अनुबन्ध
लस	१	श्लेषणविलसयो	लपति विलसति विरास	
लस	१०	शिल्पयोगे	लासयति नटो बाला	क
लज्ज	६	व्रीडे	लज्जते वधु लज्जा लज्जि त—ता—त	श ड इ ओ
ला	२	दाने आदानेच	लाति	ल
लास	१	शोषणालमर्षयो	लासति हिमेन वृक्ष	ऋ
लाघ	१	सामर्थ्ये	लाघते	ऋ ड
लाछ	१	लक्षणे	लाछति	इ
लान	१	भर्त्सने भर्गेच	लानते	इ ड
लान	१	भर्त्सने भर्गेच	लानति	
लाट	११	जीवने	लाट्यति जीवनातमधसा	ट
लाड	१०	आक्षेपे	लाडयति	क त
लाभ	१०	प्रेरणे	लाभयति लाभाय मृत वैश्य लाभ	क त
लिख	१	गतौ	लेखाति	
लिख	६	लेखने	लिखति लेखरो ग्रथ ले खन लिखन लेखा लेखनी	श
लिंग	१	गतौ	लिंगति	इ
लिंग	१	निरोकरणे	लिंगयति पट रगकार	क इ
लिट	११	अलङ्कृतसंयोगे	लित्यति पितरिपुत्र	ट

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
लिप	६	उपदेहे	लिपति (वा) लिपते देहं चंदनेन जनः	श प व जि औ
लिश	६	गतौ	लिशति	श औ
लिश	४	अरूपीभावे	लिश्यते देहो रोगेन, ले- शः, लिष्टः, टा टं	य ङ औ
लिह	२	आस्त्रादने	लेढि (त.) लीढे गुंडं वालः	ल व औ
ली	१-१०	द्रवीकरणे	लयति (वा) लाययति- बन्दिनाघृतं होता	कि
ली	४	श्लेषणे	लीयते लज्जया भूमिनारी	य ङ
ली	९	श्लेषणे	लीनाति पतिनारी	ग गि
लीड	१	उन्मादने	लीडति	क
लुंच	१	अपनयने	लुंचति	
लुज	१०	भानिकेतनहिंसाव- लदानेपु	लुंजयति	क इ
लुट	१	विलोडने	लोटति भूमौ	
लुट	४	विलाडने	लुत्थनि रावणः पुत्रशो- केन	य ल ऋ
लुट	१	प्रतिघाते	लोटते विरहेण भूमौ रामः	ङ ल
लुट	६	संश्लेषणे	लुटति	श शि
लुट	१०	भापार्थे भासार्थेच	लोटयति	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
लुट् लुंठ	१ १-१०	स्तेये स्तेये (त०) अ- वज्ञायांच	लुंठति धनं लुंठयति (वा) लुंठयति	इ कि
लुठ	१	उपधाते	लोठति कर्लिर्घर्म	
लुठ	१	प्रातिधाते	लोठते विरहेण भूमौ रामः	लृ ङ
लुठ	१	लोठे	लुठति	श शि
लुठ	१०	चौर्ये	लोठयति	क
लुठ	१	आलस्ये (त.) गत्यालस्यस्तेयलो- टेणु	लुंठाते	इ
लुड	१	मन्यने	लोडति	
लुड	६	संवृतौ, भ्रिपे	लुडति	श शि
लुण्ड, लुढ	१०	चौर्ये	लुण्डयति	क
लुथ	१	हिंसासंक्रेशयोः	लुन्थति रावणं रामः रा- वणशरेण रामो न लुन्थति	इ
लुप	४	व्याकुलत्वे	लुप्यति	य ई र
लुप	६	छेदने	लुंपति (वा) लुंपते का- ष्ट वर्द्धकैः लोपः लुप्तः ना तं	श ष न ञ ल औ
लुष	१-१०	अदने-अदर्शने	लुंषति (वा) लुंषयति	कि इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
लुम	४	गार्ध्वे	लुम्यति - पुत्रवंध्या लो- मः लुब्धः घा घं	य
लुम	६	विमोहने	लुभति मूढं मायिकः	श
लुप, लूप	१०	हिंसायां (त०) स्तेये	लोषयति	क
लुप, लूप	१	स्तेये, मूपायांच	लोपते	उ
लुह	१	गार्ध्वे	लोहति	ओ
लू	९	छेदने	लुनाति (वा) लुनीते	ग नि न
लृञ्च	१	अपनयने	लृञ्चति	
लेख	११	विलासेस्वलनेच	लेख्याति धूर्तो मनसि	ट
लेखा	११	विलासे स्वलनेच	लेखायति द्विजोऽतिमो- जने	ट
लेट	११	धौर्त्ये-पूर्वभावेस्व- नेच—	लेटयति कामुकः प्रिय- याक्षपायां	ट
लेप	१	गमने शङ्केच	लेपते	उ
लेला	११	दीप्तौ	लेलायति	ट
लोक	१	दर्शने	लोकते	ऊ उ
लोक	१०	भाषार्थे दीप्तौच	लोकयते	क उ ऊ
लोच	१	दर्शने	लोचते	ऊ उ
लोच	१०	भाषार्थे त्विषि	लोचयति	क ऊ
लोट	१	उन्मादे	लोटति	ऊ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
लोट	११	धौत्ये-पूर्वभावे	लोत्यति धूर्तः	ट
लोष्ट	१	संघाते	लोष्टते धान्यं लोष्टः	ड
लौड	१	उन्मादने	लौडति	ण
ल्यी	९	श्लेषणे	ल्यीनाति	ग मि
ल्वी	९	गत्यां	ल्वीनाति	ग मि
वक्त	१	कौटिल्ये	वंक्ते वंकः	इ ङ
वक्क	१	गतौ	वक्कते	ङ
वक्ष	१	रोषे (त०) सं हतौ.	वक्षनि शिशु वक्षः	
वख	१	गतौ	वखति	
वख	१	गतौ	वंखति	इ
वग	१	गतौ-खञेच	वंगति	इ
वघ	१	गतौ-गत्याक्षेपेच	वघने	इ ङ
वच	१	वाचि	वचति	औ
वच	२	परिभाषणे	वक्ति	छ औ
वच	१०	संदेशने	वाचयति पत्रं कृष्णाय रुक्मिणीवाचिकः	क
वच	१	एकचर्यायां	वंचते	इ ङ
वंच	१	गत्यां	वंचति	उ
वंच	१०	प्रलम्बने वंचनेच	वंचयते वंचना	क ङ
वज	१	गतौ	वजति	

धातु.	गण	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वट	१	परिभाषणे	वटति	म
वट	१	वेष्टने	वटति कंटकने वार्टी	
वट	१०	अंथे	वटयति माल्यं मालाकारः वेष्टनं वाटयति	क त
वट	१०	विभाजने	वटयति भूमिं ग्रामिकः	क त
वट	१-१०	विभाजने	वंटति (वा.) वंटय- ति धनं	क इ
वंट	१०	भागे	वंटयति	क त
वठ, वठ	१	स्थौल्ये	वठति	
वठ	१	एकचर्यायां	वठते	इ ङ
वड	१०	विभागे	वंडयति	क इ
वड	१	वेष्टने (त.) वि- भागे	वंडते कंटकैर्वार्टी	इ ङ
वण	१	शब्दे	वणाति	ऊ
वद्	१	व्यक्तायांवाचि	वदति संवत्	ऐ
वद्	१-१०	भाषणे संदेशव- चने	वदते (वा) वादयते	कि ङ
वद्	१	स्थैर्ये	वदति मेरुः	
वद्	१	अभिवादनस्तुत्योः	वन्दते हरिं वन्दना	इ ङ
वध	१	हिंसायां	वधति	
वन	१	हिंसायां	वनति	उ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वन	१	संभक्तौ (त.)	वनति	
वन	१-१०	शब्दे उपकृतौ श्रद्धा यति शब्दे उपधा- नेच	वनति (वा) वनयति	कि
वन	१	व्यापृतौ	वनयति-परिउपसर्गे प-	म उ
वन	८	याचने	रिवानयति	
वप	१	वीनतंतुसंताने	वनुते मिश्रुः	द ड उ
		(तथा) मुण्डे	वपनि बीजं सत्सेत्रे पटं-	दृ ऐ औ
			वपते तन्तुवायः उत्तः	अ
			ता तं	
वम	१	उद्गिरणे	वमति शोणितं	दृ उ ज
वय	१	गतौ	वयते	ह
वर	१०	इप्सायां	वरयति वरं स्वयंवरं	क त
			वराः	
वरण	११	गतौ	वरण्याति	ट
वर्ध	१	गत्यां	वर्धते	
वर्च	१	दीप्तौ	वर्चते	रु
वर्ष	१०	त्रिदनपूरणयोः	वर्षयति	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वर्ण	१०	वर्णक्रिया विस्तार- गुणवर्णने वचने प्रे- रणेच	वर्णयति वर्णः	क त
वद्ध	१०	पूतिछेदोः	वद्धयति	क
वर्ह-वर्ह	१.१०	भाषार्थे त्विषि	वर्हति (वा) वर्हयति	कि
वर्ह-वर्ह	१	श्रैष्ठ्ये	वर्हते	इ
वर्ह-वर्ह	१०	हिंसायां (त.) दीप्तौ	वर्हयति वर्हं	क
वभ्रं	१	गतौ	वभ्राति	
वल	१	संवरणे	वलते धनं	इ
वल्ल	१	संवरणे	वल्लते वालिः वल्लभः	
वलभ				
वन्भ	१	भोजने	वरुभते	इ
वल्क	१०	भाषणे	वल्कयति वल्कः वल्कः	क
वला, वला	१	व्रजे	वल्गाति	क त
वल्गु	११	पूजामाधुर्ययोः	वल्गूयति द्विजोऽतिवै- भवेन	ट
वल्गुल				
वल्गूल	१०	लूनिपूत्योः	वल्गुलयाति	
वल्ह, वल्ह	१	त्वि.षि	वरुहयति	क
वल्ह, वल्ह	१	श्रैष्ठ्ये	वरुहते	इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वश	२	कान्तौ	वशि वशः तस्य वशे वशा	ल
वष	१	हिंसाया	वषति	
वष्क(वा) वस्क	१	गती	वस्कते	ङ
वस	१०	स्नेहनछेदनहन- नेषु	वासयति पुत्रं पिता वा- सयति वृक्षं तक्षां वास यति चोरं रामा	क
वस	१	निवासे	निवसति (वा) वसते चित्ते हरिः, निवास.	ऐ व औ
वस	१०	निवासे	वसयति	क त
वस	२	आछादने	वस्ते मुखं हस्तेन वस्त्रं	ल ङ
वस	४	स्तम्भे	वस्यति मनो मुनि	य उ इ र
वस्त	१	अर्दने	वस्तयते	क ङ
वह	१	प्रापणे	वहाति मानं शकटमुवा- ह वृषः वहते प्रवाहः प्र वहः	ऐ व औ
वह, वह	१	वृद्धौ	वंहते	इ ङ
वह	१०	वृत्तौ	वंहयति	क इ
वा	१०	मुखासंगतिसेवासु	वापयति	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वा	२	गतिगंधनयोः गमनहिसयोः	वातिवायुः	ल
वाक्ष	१	कांक्षायां	वांक्षति वांक्षा	इ
वाञ्छ	१	इच्छायां	वाञ्छति वाञ्छा	इ
वाड	१	आप्लावे प्रीतौ च	वाडते गंगायां मुनिः च- क्रवालं	ऋ ङ
वात	१०	सुखसेवनयोः गतौ	वातयति व्यजनेन पतिं पतिव्रता	क त
वाध, वाध	१	विलोडने	वाधते साधुं खलः वाधा	ऋ ङ
वाश	४	शब्दे	वाश्यते	य ऋ ङ
वास	१०	उपसेवायां	वासयति गृहं धूपः	क त
वाह	१	प्रयत्ने	वाहते वाहं	ऋ ङ
विच	७	पृथग्भावे	विनक्ति (वा) विक्ते धनं भ्राता विवेकः	ध लि अ इर औ
विछ	६	गतौ	विछति	श
विछ	१०	भाषार्थे, त्विषिच	विछयति	क
विज	३	पृथग्भावे	विवेक्ति देहादात्मानं वि- वेकने	लि इर् औ
विज	६	भयचलनयोः	उद्विजते खलात्साधुः, वे- गः, उद्वेगः	श ङ ई औ
विज	७	भयचलनयोः	विनक्ति लोकः	ध ई ओ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
विट	१	शब्दे (त.) आक्रोशे	वेद्यति	
विट	१०	क्षित्यां	विटयति	क इ
विड, विड	१	आक्रोशे	वेडति विडालः	
वित्त	१०	त्यागे	वित्तयति वित्तं	क त
विथ	१	याचने	वेथते धानिनं भिक्षुः	क इ
विद	२	ज्ञाने	वेत्ति विष्णुं बुधः वेदः	ल
विद	७	विचारणे	विन्ते ब्रह्म विवेकी	ध इ औ
विद	४	सत्तायां	विद्यते	य इ ओ
विद	६	लाभे	विन्दति (वा) विन्दते पु- ण्यं दाता	श, प, म, ल, औ
विद	१०	वेदनाख्यानविवा- सेषु	वेदयते दुःखं भिक्षुः	क इ
विध	६	विधाने	विधाति विश्वं वेशाः विधिः	श
विष	१०	क्षेपे	वेपयति	क
विल	६	वेदने (त.) स्तूतौ	विलति तरुं हस्तौ विलं (इति विलः)	श
विश	६	प्रवेशे	विशति विवेश	श औ
विष	१	सिचने	वेपाति वेपः	उ
विष	३	व्याप्तौ	वेवोष्टि (वा) वेविष्टे विश्वं विष्णुः	लि इरू औ ब ल
विष	९	विप्रयोगे	विष्णाति	ग औ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
विष्क	१०	हिंसायां	विष्कयति	क
विस	४	प्रेरणे	विस्यति विसं विशं	य उ
वी	२	क्रांतिगतिव्याप्ति- क्षेपप्रजननसादनेषु	विषं वेति	ल
बीज	१०	व्यजने	बीजयति	क त
बीभ	१	कथने कथन- श्लाघा	बीभते	ऋ ङ
बीर	१०	विक्रांती	बीरयति बीरः	क त ङ
बुग	१	त्यागे	बुंगति खलं साधुः	इ
बुट, बुट	१-१०	हिंसे	वाटति (वा) बोटयति	कि
बुस, बुस	४	उत्सर्गे	बुस्यति कंचुकं सर्पः बुसं	य
वृ	९	वरणे	वृणोति (वा) वृणुते व- रंकन्या	न ञ
वृ	९	वरणे	वृणाति	ग
वृ	९	संमत्तौ	वृणीते विष्णुं विवेकी	ग ङ
वृ	१	आवरणे	वरति (वा) वरते	ञ
वृ	१०	आवरणे	वारयति	क
वृक	१	आदाने	वृकते वृकः	ङ
वृक्ष	१	वरणे संवातेच	वृक्षते कन्या वरं वृक्षः	ङ
वृच	७	वृत्तौ	वृणक्ति	घ ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वृज	१-१०	वर्जने	वर्जति (वा) वर्जयति	कि
वृज	२	वर्जने	वृक्ते कपटं साधुः	ल ड इ
वृज	७	वर्जने (त.) वृत्तौ	वृणाक्ति स्त्रलं शिष्टः	घ ई
वृड	९	मुखे	वृङ्णाति	ग
वृण	६	प्रोणने	वृणति	श
वृण	८	भक्षे	वृणोति (वा) वृणूते	द ज उ
वृत्	१	वर्त्तने	वर्त्तते वार्त्ता	व उ ङ ल
वृत्	४	सम्भक्तौ	वरणे वृत्यते	य ङ उ
वृत्	१०	भाषार्थे चित्रपि	वर्त्तयति	क उ
वृध	१०	भाषार्थे दीप्तौ	वर्द्धयति	क
वृध	१	वृद्धौ	वर्द्धते धर्मण	य ङ ष ल
वृप	१	सेचने (त०) प-	वर्पति वृषः	उ
		जनैश्चर्ययोः		
वृष	१०	शक्तिबंधने सेचने-	वर्पयते सपं मंत्री	क ङ
		प्रजने ऐश्वर्ये च		
वृह	१-१०	भाषार्थे-द्युतौ	वृंहति (वा) वृंहयति	कि इ
वृह	१	वृद्धौ ध्वनौ	वृंहति वृंहितं	इ
वृह	६	उद्यमे	वृहति वृश्यः	श ङ
वृह	१	वृद्धौ	वर्हति	
वृह	१	अनदत्तौः	वर्हति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वृ	९	वरणे (अथवा) भरणे	वृणाति (वा) वृणति	ग ज
व	१	तंतु संताने	वयति (वा) वयते वस्त्रं तंतु- वायः	ए ज
वेण	१	ज्ञानचिंतानिशाम- नेषु	वेणाति (वा) वेणते	ऋ ज
वेथ	१	याचने	वेथते वेथितः-वेथः	ऋ ङ
वेद	११	धौर्त्ये, स्वप्ने च	वेद्यति ज्ञानी विषयेषु	२
वेन	१	गतिज्ञानचिंतानि- शामनवादित्रग्रहण- चलनेषु	वनति तपस्व्यत्यभ्यासेन	ऋ
वेप	१	चलने	वेपते वातेन वृक्षः	ऋ टु ङ
वेल	१०	कालोपदेशे	वेलयति दिनं गणकः-वेला	क त
वेल	१	गतौ	वेलति वेला	ऊ
वेळ	१	गतौ	वेळति	
वेळ्ळ	१	चाले	वेळ्ळति	ङ
वेवी	१	कांतिगतिव्याप्ति- क्षेपप्रजनखादनेषु	वेवीते	लु ङ र क्ष
वेष्ट	१	वेष्टने	वेष्टते	ङ
वेस	१	गतौ	वेसति	इ र
वेह	१	प्रयत्ने	वेहते वेहत्	ऋ ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वृज	१-१०	वर्जने	वर्जति (वा) वर्जयति	कि
वृज	२	वर्जने	वृक्ते कपटं साधुः	ल ङ इ
वृज	७	वर्जने (त.) वृत्तौ	वृणक्ति स्त्रल शिष्टः	घ ई
वृड	९	मुखे	वृड्णाति	ग
वृण	६	मोचने	वृणति	श
वृण	८	मक्षे	वृणोति (वा) वृणते	द व उ
वृत्	१	वर्त्तने	वर्त्तते वार्त्ता	व उ ङ ल
वृत्	४	सम्भक्तौ	वरणे वृत्त्यते	य ङ उ
वृत्	१०	भाषार्थे त्विपि	वर्त्तयति	क उ
वृध	१०	भाषार्थे दीप्तौ	वर्द्धयति	क
वृध	१	वृद्धौ	वर्द्धते धर्मेण	य ङ व ल
वृष	१	सेचने (त०) प	वर्षति वृष	उ
		मनैश्वर्ययोः		
वृष	१०	शक्तिवधने सेचने—	वर्षयते मर्ष मंत्री	क ङ
		प्रजने ऐश्येच		
वृह	१-१०	भाषार्थे—श्रुतौ	वृंहति (वा) वृंहयति	कि इ
वृह	१	वृद्धौ ध्वनौ	वृहति वृंहितं	इ
वृह	६	उद्यमे	वृहति वैश्यः	श ऊ
वृह	१	वृद्धौ	वर्हति	
वृह	१	ध्वनद्वयोः	वर्हति	इ र

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वृ	९	वरणे (अथवा) भरणे	वृणाति (वा) वृणीते	ग ज
वे	१	तंतु संताने	वयति (वा) वयते वयं तंतु- वायः	ए ज
वेण	१	ज्ञानचिंतानिशाम- नेषु	वेणाति (वा) वेणते	ऋ ज
वेथ	१	याचेने	वेथते वेथितः-वेथः	ऋ ङ
वेद्	११	धौर्त्ये, स्वप्ने च	वेद्यति ज्ञानी विषयेषु	२
वेन	१	गतिज्ञानचिंतानि- शामनवादित्रग्रहण चलनेषु	वनति तपस्व्यत्यभ्यासेन	ऋ
वेप	१	चलने	वेपते वातेन वृक्षः	ऋ टु ङ
वेल	१०	कालोपदेशे	वेलयति दिनं गणकः-वेला	क त
वेल	१	गतौ	वेलति वेला	ऊ
वेल्ल	१	गतौ	वेल्लति	
वेह्ल	१	चाले	वेह्लति	ङ
वेवी	१	कांतिगतिव्याप्ति- क्षेपप्रजनखादनेषु	वेवीते	लु ङ र क्ष
वेष्ट	१	वेष्टने	वेष्टते	ङ
वेस	१	गतौ	वेसाति	इ र
वेह	१	प्रयत्ने	वेहते वेहत्	ऋ ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
वै	१	शोषणे	वायति	औ
व्यच	६	व्याजीकरणे (त.) मम्भवे	व्यचति साधुं धूर्तः	श शि
व्यथ	१	दुःस्वभयचलने	व्यथते पापात्साधुः व्यथा	थ म रु
व्यध	४	ताडने	विध्यति व्याधो मृगं	य औ
व्यप	१०	क्षेपे	व्यपयति	क
व्यय	१	गतौ	व्ययति (वा) व्ययते	व
व्यय	१०	क्षेपे	व्याययति	क
व्यय	१०	वित्तसमुत्सर्गे	व्ययति धनं व्ययशोलः	क त
व्युप	१०	उत्सर्गे	व्योपयति रोगवानोषधं	क
व्युस	४	हानौ-दाहेच	व्युस्यति	य ईर्
व्युस	४	विभागे	व्युस्यति	य
व्ये	१	संवरणे	संव्ययति (वा) संव्ययते मननं वस्त्रेण नारी	न
व्रज	१	गतौ	व्रजति व्रजः	
व्रज	१०	संकृतौ गतौ त्यागेच	व्रजयति	क
व्रण, व्रण	१	शब्दे	व्रणति	
व्रण, व्रण	१०	शास्त्रविचूर्णने	व्रणयति भोष्मं शरीरं नः, व्रणः, व्रण	क त
व्रक्ष	६	उद्दने	वृक्षति मूलं पापी	श औ ऊ
व्रि	४	वरणे	व्रिष्यते वरं नारी	ऊ व

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
व्री	९	वरणे	व्रीणाति रणं शूरः	ग गि
व्रीड	४	लज्जायां (त०) क्षिपि	व्रीड्यति वधूः व्रीडा	य नि
व्रीस	१-१०	वधे	व्रीसति (वा) व्रीसयति	कि
वृड	६	संवृत्ति संहति मा- र्जनेषु	व्रडति	श शि
वृड	६	निमज्जने	व्रडति	श
वृस	१-१०	वधे	व्रसति (वा) व्रसयति	कि
वृी	९	वारणं-गत्यां-वृत्त्यां	वृीनाति भुवं शेषः (त०) व्रेपयति	ग गि
वृक्ष	१०	दृशि	वृक्षयति	क त
शक	४	क्षमायां	शक्यति (वा) शक्यते शिष्यापराधं गुरुः	य न
शक	९	शक्तौ	शक्नोति कंसं जेतुं कृष्णः	न इर ल
शक	१	त्रासशंकयोः	शंकति	इ ड
शव	१	हिंसायां	शर्घति शर्घः	
शच	१	व्यक्तायांवाचि	शचते कविः	ड
शच	१	गतौ	शंचते	इ ड
शट	१	रुजाविशरण गत्य- वसादनेषु	शटति	
शट	१०	श्लाघे	शटयते	क ड

धातु.	गण.	अर्थ	उदाहरण.	अनुबन्ध.
शठ	१	कैवले (त०) वधे हेशे च	शठति शठः	-
शठ	१०	श्लाघायां	शठयते	क इ
शठ	१०	संस्कारगत्योः आ- नस्ये-गतौ असं- स्कृतसंस्कृते	शठयति	क
शठ	१०	सम्यग्भाषणे दु- र्वार्त्ति	शठयति शठेन धर्मं	क त
शड	१	रुनायां (त०) संवे	शंडते शंडः	इ इ
शण	१	दाने	शणति	म
शद	१	आ उपसर्गे (आ) गतौ	आशदति	औ
शद	१	शावने	शीयेत वृक्षात् पत्रं	ल न औ
शंख	१	कथने (त०) हि- मायां स्तुतौ	शंसति स्वकुलं साधुः	उ
शप	१	आक्रोशे	शपति (वा) शपते दृ- र्वासाः शत्रूय शपः	न
शप	४	आक्रोशे	शप्यति (वा) शप्यते प्रापिनं साधुः	य न औ
शंन	१	गतौ	शंनति	

धातु.	शृण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
शंव	१०	संवंधे	शंवति धनं यतिः, शंवः, सवुः, शंवुकः शंवुकःशं- वुका शंवुकः	क
शब्द	१०	शब्दकृतौ (अथ- ना) उपसर्ग आ- विष्कारे	शब्दयते प्रशब्दयति प्रियशिष्याय गूढमर्थं गुरुः	क
शम	१	अदर्शने (त०) दर्शने	शमयति जलधरो जलै- स्तापं निशामयति रूपं वेद्या	
शम	४	उपशमे	शाम्यति मुनिः	य उ भ इ र
शम	१०	आलोचने	शामयति कार्यं मंत्री	क ङ
शर्ध	१०	अभिराक्षायां	शर्धयति	क
शर्व, श- र्व	१	हिंसायां—गतौ	शर्वति	
शर्व	१	हिंसायां	शर्वति	
शल	१	चलने (त०) स्तृवौ	शलते पथिकः	ङ
शल	१	वेगे	शलति	
शल	१०	श्लाघे	शलयति	क ङ
शलभ	१	कत्थने	शलभते	ङ
शव	१	गतौ (त०) वि- कारे	शवति शवः शवं	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
शश	१	ध्रुतगतौ	शशति शशः	
शष	१	वधे	शषति	
शस	१	हिंसायां	शसति वंसं हरिः	उ
शस	२	स्वप्ने	शसति	ल लु
शंस	१	आउपसर्गे इच्छा- यां	आशंसते मोक्षं मुनिः	इ व
शंस	१	स्तुतौ दुर्गतावपि	शंसति	उ
शस्त	२	स्वप्ने	शंस्ति	ल लु इ
शाख	१	व्याप्तौ	शाखति शाखा गगनं	क
शाड	१	क्षयायां	शाडते गुणिनं जनः	क व
शान	१	तेजने	शीशांसति (वा) शीशां- सते शूलं	व
शार	१०	दौर्बल्ये	शारयति	क त
शाल	१	कथने	शालते	क व
शास	२	आउपसर्गे आशि- षि	आशास्ते	ल क व
शास	१	आउपसर्गे आशि- षि	आशास्ते	उ व
शास	२	अनुशिष्टौ	शास्ति शासनं	ल लु उ व

धातुः	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
शि	९	निशाने	शिनोति (वा) शिनुते गूलं	न व
शिक्ष	१	विद्योपादाने	शिक्षते शिक्षा	ङ
शिक्ष	१	गतौ	शिखति	
शिक्ष	१	गतौ	शिखाति	इ
शिव	१	आघ्राणे	शियति कुसुमं कृष्णः शिषानं	इ
शिज	२	अव्यक्ते शब्दे	शिकतेरसना शिजितं	ल
शिज	१-१०	अव्यक्ते शब्दे	शिजते (वा) शिजयते	कि ङ
शिष्ट	१	अनादरे	शेष्टति साधुं भंडः	ऋ
शिल	६	उंचे	शिलति ध्यानं विप्रः	श
शिष	१	हिंसायां	शेषति शेषः	
शिष	१०	परिशेषीकरणे	शेषयाति धनं पुत्रायपिता शेषं	क
शिष	७	विशेषणे	विशिनष्टि गुणैर्विष्णुं	घनिल्ल औ
शी	२	स्वप्ने	शेते सुखं शयालुः (अथ वा) मंडले शयामि	ल ङञि
शीक	१-१०	आमर्षणे स्पर्श-से- के-दीप्तौ	शीकति (वा) शीकयति	कि
शीक	१	सेचने-स्पर्शे	शीकते मेघो भूमि	फ ङ
शीभ	१	कथने	शीभते	फ ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
शील	१	समाधौ	शीलति सुशील	जि
शील	१०	उपधारणे— अ भ्यासे—अतिशयने	शीलयति नीलमिचोल शीलं	क त
शुक्	१	गतौ—स्पर्श	शुक्कति	
शुच	१	प्रतिघाते	शुचति शोचना शोक	
शुच	१	शोके	शुचति शोकः शुचि.	
शुच	४	पूतिभावे—विशरणे	शुच्यति (वा) शुच्यते	य न इरू ई
		हृदे	तपसा विप्रः	
शुच्य	१	अभिषेपे	शुच्यति	ई
शुठ	१	शोषणे	शुठति शुठा	इ
शुठ	१०	शोषणे	शुठयति शुठा जन. शुठा	क इ
शुठ	१	खोटने प्रतिघातेच	शुठति	
शुठ	१	खोटने	शुठति	इ
शुठ	१०	आलस्ये	शुठयति	क
शुठ	१०	संस्कारगत्याः	शुठयति	क इ
शुध	४	शौचे	नर शुद्धयति सत्संगात्	य ल औ
शुध	१	शुद्धौ	योग. शुधति सत्त्वेन शुधः	
शुध	१-१०	शुद्धौ	शुधेत (वा) शुधयते	कि क
शुन	६	गतौ	शुनति शुनकः	श
शुभ	१	मासने	शुभाति न शुभाति स- मामध्ये	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
शुभ	१	दीप्तौ	शोभते शोभा	लृ ङ
शुभ	६	शोभायां	शुभति विद्यया विप्रः	श
शुभ	६	दीप्तौ	शुभति	श प
शुभ	६	शोभायां	शुभते	श
शुभ	१	भासने	शुभति	
शुल्क	१०	भाषणे-संवाते-स- र्जने-वर्जने-अति- स्पर्शने	शुल्कयति	क
शुल्ब	१०	माने-सर्गेच	शुल्बयति	क
शुल्ब	१०	सर्जने	शुल्बयति विश्वं विधाता	क
शुप	४	शोषणे	शुप्यन्ति मस्या नविनां ब्रुवाहं शोषः (त०) शुष्कः का कं	य औ लृ
शूर	१०	विक्रान्तौ	शूरयते शूरः	क त ङ
शूर्	४	स्तम्भे हिंसायांच	शूर्चते	य ङ ई
शूप	१०	माने	शूपयति शूर्पेण धान्यं नारी शूर्पेणखा	क
शूल	१	रुजायां	शूलति चोरं शूलं	
शूप	१	प्रसवे	शूपति	
शृष	१	शब्दकुत्सायां	शृद्धतेसरः	उ लृ ङ व

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
श्रण	१०	ज्ञाने	श्राणयति गां राजा— विश्राणनं	क
श्रथ	१-१०	वञ्चने-मोक्षे-वधे	श्रथति (वा) श्रययति- कुमुमैः केशं नारी	कि
श्रथ	१	वधे	श्रथति	म
श्रथ	१०	दौर्वल्ये	श्रथयति	क त
श्रथ	१०	प्रातिहर्षमोक्षयन्न- योः	श्रथयति	क
श्रथ	१	शैथिल्ये	श्रथते नर्वि	इ ङ
श्रंथ	१-१०	संदर्भे (त०) वधे	श्रंथति (वा) श्रंथयति	कि
श्रंथ	९	मोचन प्रातिहर्षयोः संदर्भे	श्रथ्नातिमुपलुं हरिःश्रथा ति	ग
श्रंम	१	प्रमादे	श्रंमति	उ
श्रम	४	स्वेदे तपसि	श्राम्यति मार्गे पथिकः श्रमः श्रान्तः—ता-तं— श्रान्तिः	य म उ ङि इ
श्रा	२	स्वेदे	श्राति	ङ
श्रा	१	पाके	श्राति-श्रपयति यवागूं- भिक्षुः	
श्रा	२	पाके	श्राति शाकं	ङ म
श्रा	९	पाके	श्राणाति (वा) श्राणीते	ग ङ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
शृघ	१	उंदे	शर्द्धति (वा) शर्द्धते जेलन शिरः	उ ब
शृघ	१०	प्रहसने	शर्षयति मूर्खं बुधः	क उ
शृ	९	हिंसायां	शृणाति शीर्णः—णा—णं	ग गि
शेल	१	गतौ	शेलति शेलुः	ऊ
शेव	१	सेवने	शेवते	ऋ
शै	१	गतौ पाके च	शायते	
शो	४	निशाने	श्यति शित.—ता—तं	य
शो	४	तनूकरणे	श्यति काष्ठं वर्द्धकिः	य
शोण	१	वर्णगत्योः	शोणति पद्मं शोण शोणितं	ऋ
शौट	१	गर्वे	शौटति मूर्खः	ऋ
शौढ	१	गर्वे	शौढति	ऋ
श्रुन	१	क्षरणे	श्रोतति	इर
श्रुत	१	क्षरणे	श्रुतोतति जलं श्रुतोतः	इर
श्मील	१	निमेषणे	श्मीलति नेत्रं	
श्मील	१	निमेषणे	श्मीलति	
श्यै	१	गतौ	श्यायते	ऌ
श्रक	१	गतौ	श्रंक्ते	इ क
श्रग	१	व्रजे	श्रंगति	इ
श्रण	१	दाने	श्रणति	स

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
श्रण	१०	दाने	श्राणयति गां राजा— विश्राणनं	क
श्रथ	१-१०	बंधने-मोक्षे—वधे	श्रथति (वा) श्रथयति— कुमुदैः केशं नारी	कि
श्रथ	१	बंध	श्रथति	म
श्रथ	१०	दौर्वल्ये	श्रथयति	क त
श्रथ	१०	प्रातिहर्षमोक्षयन्न- योः	श्रथयति	क
श्रथ	१	शैथिल्ये	श्रथते नीर्वी	इ ङ
श्रंथ	१-१०	संदर्भे (त०) वधे	श्रंथति (वा) श्रंथयति	कि
श्रंथ	९	मोचन प्रातिहर्षयोः, संदर्भे	श्रंथनातिमुमुक्षुं हरिःश्रमा ति	ग
श्रंम	१	प्रमादे	श्रंमति	उ
श्रम	४	स्वेदे तपसि	श्राम्यति मार्गे पथिकः श्रमः श्रान्तः—ता-तं— श्रान्तिः	य म उ नि इ
श्रा	२	स्वेदे	श्राति	ङ
श्रा	१	पाके	श्राति—श्रपयति यवागूं- भिक्षुः	
श्रा	२	पाके	श्राति शाकं	ल म
श्रा	९	पाके	श्राणाति (वा) श्राणीते	ग न

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
आम	१०	आमंत्रणे	आमयति विश्रामः	क त
अि	१	सिवने	अयति (वा) अयते	ज
			विष्णुं बुधः श्रयणं श्रायः	
			आश्रयः	
अिप	१	दाहे	अ्रेपति	उ
श्री	१	तर्पणे	अयति (वा) अयते	ज
श्री	९	पचि	श्रीणाति (वा) श्रीणीते	ग ज
श्री	१०	तर्पणे	श्राययति (वा) श्रायय-	क ज
			ते देवतां हविषा यज्वा	
श्रु	१	श्रवणे	श्रवत्यामघटाज्जलं	
श्रु	५	श्रवणे गतौ	शृणोति	न
श्रै	१	पाके	श्रायति दुग्धं	म
श्रै	१	स्वादे	श्रायति	
श्रोण	१	संघाते	श्रोणति श्रोणी श्रोणिः	क
श्लक	१	गतौ	श्लंकते	इ ङ
श्लग	१	व्रजे	श्लंगति	इ
श्लथ	१	हिंसायां	श्लथति	
श्लथ	१०	दौर्बल्ये	श्लथयति	क त
श्लाख	१	व्याप्तौ	श्लाखति	कृ
श्लाघ	१	कृत्येन	श्लाघतेगुणिनं गुणोऽश्लाघा	कृ
श्लिष	१	दाहे	श्लेषति	उ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
श्लिष	४	आलिंगने	श्लिष्यति सीता रामं	य लृ ङि औ
श्लिष	१०	श्लेषणे	श्लेषः श्लेषयति	क
श्लोक	१	संघाते, सर्जने, व- र्जने	श्लोकते कविः श्लोकः	कृ ङ
श्लोण	१	संघाते	श्लोणति	कृ
श्वक	१	गतौ	श्वंकते	इ ङ
श्वग	१	व्रजे	श्वंगति	इ
श्वच	१	गत्यां	श्वचते	ङ
श्वच	१	गत्यां	श्वचते	इ ङ
श्वज	१	गतौ	श्वजते	ङ
श्वज	१	गतौ	श्वजते	इ ङ
श्वठ	१०	गतौ-असंस्कृतसं- स्कृते	श्वठयति	क
श्वठ	१०	गतौ असंस्कृत- संस्कृते	श्वठयति	क इ
श्वठ	१०	सम्यभाषणे दु- र्वाचि	श्वठयति	क त
श्वभ्र	१०	विले, गतौ, तंके	श्वभ्रयति	क
श्वर्त्त	१०	गत्यां	श्वर्त्तयति	क
श्वल, श्वल्ल	१	वेगे	श्वलति (वा) श्वल्लति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
श्वल्क	१०	भाषे	श्वल्कयति	क
श्वस	२	प्राणने	श्वसिति-विश्वास-श्व- सनं	छ लु व
श्वि	१	गतिवृद्धोः	श्वयाति धर्मेण राजा	टु औ ऐ इर
श्वित	१	वर्णे	श्विततेगेहं-श्वतः-ता-तं	लृ आ क
श्विद्	१	शौक्ल्ये	श्विन्दते ज्ञानेन जन;	इ उ
श्वग	१	संवरणे	सगति	म ए
षघ	५	हिंसाया	सघोति	न
षच	१	समवाये	सचति साधुः	
षच	१	सैचने	सैचते नलेन भूमि	क
षच	१	गतौ	सचति	
षंज	१	सगे	सजति तरुण्यां तरुणः आसक्त-त-तं.	औ जि
षट	१	अवयवे	सटति सटा	
षट्	१०	निकेतनहिंसाद- लदानेषु	सट्टयति	क
षण	१	सम्भक्तौ	सनति	
षण	<	दाने	सनोति (वा) सनुते- विप्राय गां	द न उ
षद्	१-१०	गतौ-आ उपसर्गे	आसादति (वा) आ- सादयति	कि

श्रातु.	गण.	सर्घ.	उदाहरण.	मनुबन्ध.
पद	१-६	विशरणगत्य वसादः	मोदति विरहेण पांथः	श ल न औ
		नेषु	विपादः	
पथ	६	जिवांमायां	मघ्नोति	न
पन	१	संमक्तौ	मनति	
पन	८	दाने	मनोति (वा) सनुते	द न उ
पप	१	संबन्धे	सपति	
पंच	१	सर्पणे	संचति	
पम	१	वैकल्ये	समति	
पम	१०	वैकल्ये आलोचन	समयति	क न
		ने च		
पर्ज	१	अर्जने	मर्जति	मर्जः
पर्व	१	गर्वां	नर्जति	
पर्व	१	सर्पणे हिमायां च	मर्जति	
पठ	१	गतौ	मलति	मलितं
पम	२	मर्जने	मम्लि मिमौ हरिः	ल ल र
पन्म	१	गतौ	मज्जति (वा) मज्जते	न उ
पान	२	मर्जने	माम्निनि	ल ल र
पह	१-१०	मर्जने	नरति (वा) माहवति	कि
			न एषामं नागः	
पह	१	मर्जने	तापं न मर्हते राता	न र
पह	४	मर्जने, पनर्गणे	मम्लति	य

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
पाथ			(इति साध)	
पान्त्व	१०	सामयोगे	मान्त्वयति	क
पि	६	बंधने	सिनोति (न) सिनुते कृष्ण यशोदा विषय	न ज
पि	९	बंधने	सिनाति (वा) सिनाते चौर राजा	ग ज
पिच	६	सरणे	सिंचति (वा) सिंचने	श प औ न
पिट	१	अनादरे	सिंगति साधु भइ	
पिध	१	गत्या	सेधति मयुरा कृष्ण	उ
पिध	१	शास्त्रे मागल्ये च	सेवातिशिष्यगुरु सिद्धो य मुनि	ऊ
पिध	४	मराद्धौ	मिध्यति मुनिर्योगिन	य उँ औँ
पिम	१	दीप्तौ हिंसने	सिभति	उ
पिल	६	उछे	मिगति	श
पिच	४	तनुसंताने	सोव्यति कथा योगी-सोवन	य उ
पु	६	अभिषेके मन्यने च	सुनोति (वा) सुनुते सोमलता विप्र.	न व
पु	१	प्रसवे गतौ	प्रसवति पुत्रनारी-प्रसवः	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पु	२	प्रसेवे, ऐश्वर्ये	प्रसोति पुत्रं प्रसवः प्र-	ल
पुष्ट	१०	तौच्छे, अनादरे	मुनिः	
पुंभ	६	दीप्ता हिंसने	मुदयति	क
पुर	६	धैर्ययोः	मुभति	
पृह	४	वृत्ता, शक्तेन	मुनि	श
पृ	२	प्राणि गर्भविमो-	मुयति	य ल
		चने	प्रसुने देवकी कृष्णं	ल उ ओ
पू	४	प्रसेवे	मुयते सुखं धर्मः	य उ ओ
पू	६	क्षेपे	मुयति	श
पृह	१	क्षणने निगमे	मुदने चोरं राजा मुदः	
पृष्ट	१०	आश्रुतिहत्याः नि-	मुदयति	क
		रामेन		
पर	४	रत्नेन—हिमे	मुयते	य उ इ
पृते	१	अनादरे	मुजेति	
पृथ्वी	१	इष्याये	मुयति (वा) मुयति	
पृथ	१	प्रसेवे	मुयति पुत्रं माधवी	
पेक	१	प्रसेवे	मुयते	ल क
पेक	१	नाशक्याः	मुयति	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
पेव	१	सेवने	नीचं समृद्धमपि सेवति (वा) सेवते नीचः	कृ ड ज
पे	१	क्षये	सायति	
पो	४	अन्तकरणे	रयति कालो लोकं	य
एक	१	प्रतिपाते	स्तकति	म
ष्टुग	१-१०	संवरणे	स्तगति (वा) स्तगयति	ए मि
ष्टन	१	शब्दे	स्तनति	मि
ष्टभ	१	प्रतिबन्धे	स्तंभने पापात्पुत्रं पिता स्तंभः	इ ड
ष्टम	१	वेकृव्ये	स्तमति	
ष्टम	१०	वेकृव्ये	स्तमयति	क त
ष्टल	१	स्थितौ	स्थलति	ज
ष्टक्ष	१	गतौ	स्तृक्षति	
ष्टह	६	वधे	स्तृहति	श ऊ
ष्टह	६	वधे	स्तृहति	श ऊ
ष्टिघ	५	आस्कंदने	स्तिघ्रुते पथिकं वृष्टिः	न ड
ष्टिप	१	क्षरणे	स्तेपते जलं घटात्	ड ऋ
ष्टिम	४	आद्री भावे	स्तिम्यति तैलेन देहः	य
ष्टीव	१	निरसने	ष्टीवति	उ
ष्टिमि	४	आद्री भावे	स्तीम्यति तैलेन देहः	य

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
ष्टु	२	स्तुतौ	स्तौवि (वा) स्तुते स्वः स्तुतिः	ज ल
ष्टुच	१	प्रसदे	स्ताचते ज्ञानेन मनः	ङ
ष्टुप	१०	उच्चाये	स्तोपयति	क
ष्टुभ	१	स्तोभे	स्तोभते नीचो विद्यया स्तोभते वृद्धशीतम्	
ष्टूप	४	उच्चाये	स्तूप्यति	य.ङ्
ष्टेप	१	क्षरणे	स्तेपते जलं घटात्	ङ क
ष्टेव	१	निरसने	ष्टेवति	
ष्टै	१	वेष्टे	स्तायति	
ष्टैच	१	वेष्टणे	स्त्यायति	
ष्टैच	१	शब्दसंघाते	ष्ट्यायति लोकः	
ष्टग	१	संवरणे	स्थगति	म ए
ष्टस	४	निवासे	स्थयति	य लृ मि उ
ष्टा	१	गतिनिवृत्तौ	तिष्ठतिविरलेमुनिः— स्थानं	जि
ष्टिव	१	निरसने	ष्टेवति	
ष्टिव	४	निरसने	ष्टीव्यति भुक्तमन्नंवालकः	य उ
ष्टीव	१	निरसने	ष्टीवति	
ष्णस	४	निरसने	स्नस्यति	उ य
ष्णा	२	शौचे	स्नाति गंगायां स्नानं	ल

धातु.	संज्ञ.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध
प्णिह	४	प्रीतौ	स्त्रिय तिशिष्ये गुरुः स्नेहः	य
प्णिह	१०	स्नेहने	स्नेहयति	क
प्णु	२	प्रमृशणे	स्त्रोति जलं घटात्	ल
प्णुस	४	भक्षे, निवासेच	स्नम्यति	उ य
प्णुह	४	उद्गारे	स्नुवति	य उ ल
प्मि	१	रक्षदसने	स्मयते स्मयः स्मित	ङ
प्मि	१०	अनादरे	स्मययते	ङ
प्वक्र	१	मर्षणे	स्मकते	ङ
प्वज	१	परिष्वगे	स्वजते पुत्र पिता परि- ष्वजति पात्राणि मध्यम	औ नि ङ
प्वद	१०	स्वादे छेदे	पादुनंदन स्वदयति	
प्वद	१	आम्वादे प्रीतौलि हेच	स्वदते	ङ
प्वप	२	शये	स्वपति सिधौ हरि स्वाप स्वप्न.	ल लु, नि, घ औ
प्वर्त्त	१०	गत्यातकयो	स्वर्त्तयति	क
प्विद	१	मोचने, मोहे स्नेहे	स्वेदते पापं तपसा जन	ङ नि आ लृ
प्विद	४	गात्रप्ररक्षणे	स्विद्यति (वा) स्विद्यते धर्मण प्रस्वेद स्वेद	य न ल आ औ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
संकेत	१०	आमंत्रणे	संकेतयति रतये कामिनी कामुकं	क
सग	१	संवरणे	सगति	म ए
संग्राम	१०	युद्धे	संग्रामयते—संग्रामः	क त ङ
सव	५	हिंसायां	सन्नोति	न
संज	१	सर्पणे	संजति	
सट	१०	प्रकाशने	सटयति	क त
सट्ट	१०	हिंसायां	सट्टयति	क
सठ, स्वठ	१०	—————	(इति शठ—श्वठ	
सत्र	१०	सन्तानक्रियायां— संवन्धे—सन्ततौ	सत्रयते पथिकेभ्यो धार्मि- कः, सत्री, सत्रं	क त ङ
सप	१	संवन्धे	सपति	
संवर	११	संभरणे—लज्जायां च	संवर्त्यति गुरुदर्शनाद्वधूः	ट
सभाज	१०	प्रीतिसेवायां दर्श- ने च	सभाजयति गुरुं शिष्यः स- भाजना	क त
संभूयस्	११	प्रभूतभावे	संभूयस्याति पयोवारिणा	ट
सम्ब	१	सर्पणे	सम्बति	
सम्ब	१०	सम्बन्धे	सम्बयति	क
सर्ज	१	अर्जने	सर्जति	
सर्व	१	सर्पणे	सर्वति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
सह	४	शक्तौ	सह्यति भूवहने वामुकिः (इतिपह)	य
साट	१०	प्रकाशने	साटयति	क त
सांत्व	१०	सामप्रयोगे	सांत्वयति शोकाकुलं- ज्ञानी	क त
साध	४	संसिद्धौ	साध्यति ज्ञानेन यतिः सिद्धः	य उ न औ
साध	५	संसिद्धौ	साधोति योगेन मुनिः	
साम	१०	सांत्वने, प्रयाणे	सामयति बालं पयसापिता सामः	क त क
साम्ब	१०	सम्बन्धे	साम्बयति	क
सार	१०	दौर्बल्ये	सारयति सारः	क त
सिच	६	क्षरणे	सिंचति (वा) सिंचते जलेन गेहं विलासी-सेकः- अभिषेकः	श प ज औ
सिभ	१	हिंसायां	सेभति कुमन्त्री राजानं	उ
सीक	१	मेके गत्यां	सीकते	ड ऋ
सीक	१-१०	आमर्षे	सीकाति (वा) सीकय- यति	कि
सु	१	गतां ऐश्वर्ये प्रसेवे	सुवति	
सु	५	संधाक्रेदपीढामंघेषु	मुनोति (वा) मुनुते	न ज

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
सुख	१०	तत्क्रियायां	सुखयति	क त
सुख	११	तत्क्रियायां	सुखयति धनी संसारे	ट
सुष्ट	१०	अनादरे	सुष्टयति	क
मुम्भ	१	द्युतो हिंसायां	मुम्भति	
सुर	६	ऐश्वर्य्य दीप्तयोः	सुरति राजा सुरः असुरः (इतिपू)	श
सू				
सूक्ष	१	अनादरे आदरेच	सूक्षति	
सूच	१०	पेशून्ये	सूचयति परदोषं खलः सूचकः	क त
सूत्र	१०	अवमोचने वेष्टनेच	सूत्रयति सूत्रेण कलशं पूरोधाः सूत्रं	क त
सूर	४	हिंसास्तंभनयोः	सूर्यते रविर्विव योगी	ळ य
सूर्य्य	१	अनादरे ईर्ष्याया	सूर्य्यति	
सूप	१	प्रसवे	सूपति	
सृ	१	गतौ	सरति तीर्थं मुनिः	
सृ	३	गतौ	समर्त्ति .	लि र
सृ	१०	स्तुतौ	सरयति	क
लृज	६	विमर्गे	सृजति विश्वंवेधा	श ओ
लृज	४	विमर्गे—उत्पादने	संसृज्यते पिता पुत्रं सृ- ज्यते विश्वंविधाता सृष्टिः	
सृष	१	गतौ	सर्षति सर्पः	ल ओ

धातु	गण	अर्थ	उदाहरण	अनुग्रन्थ
सृभ	१	हिसे	सर्भात	उ
सेरु	१	गते	सेकते	ड ऋ
सेल	१	चालगत्यो	सलति	ऋ
मेव	१	सेवने	सेवते सेवा	ऋ ड
से	१	सित्या	सायति	
स्कद	१	उत्प्लुत्यगमने, आ पवेउद्धृते	स्कन्दते वानर शाखा	इ ड
स्कद	१	शोषणं गतो	स्कदति हिमेन तरु	इर् आ
म्बम	१	प्रतिबधे	म्बम्भते	इ ड
स्कु	२	आवरणे	स्कुनाति कर्ण—बाणरे उज्जुन	ग अ ड
स्कुद	१	आप्रवणे	स्कुदते शाखा मृगोवृथा दृष्टातर	इ वि
स्खद	१	स्वदने विदारे	म्बदते मूलरू पाथ	ड म प
स्खल	१	चथचलयो	स्खलति	मि
स्तक	१	प्रतिधाते	स्तकति	म
स्तन	१	शब्दे	स्तनति	मि
स्तन	१०	मयशब्दे	स्तनयति धन	क त
स्तम	१	स्तम्भे	स्तम्भते	इ ड
स्तूप	१०	समुच्छ्राये	स्तूपयति गोधूम—वेद्य स्तूप	क

धानु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
स्तूप	४	समुच्छ्राये	स्तूप्यति धान्यं—स्तूपः	य इ
स्तृ	९	आच्छादने (त.)	स्तृणाति (वा) स्तृणु-	न ज
		प्रीतिरक्षाप्राणनेषु	तेया ससा देहं	
स्तृ	९	आच्छादने	विस्तृतः—ता—तं	
			स्तृणानि (वा) स्तृणी-	ग ज गि
			ते गगनं मेघः स्तूर्णः	
			णा—णं	
स्तृक्ष	१	गतौ	स्तृक्षति	
स्तृह	६	वधे	स्तृहति	श उ
स्तृ	९	छादने—वधेच	स्तृणाति	ग गि
स्तृ	६	वधे	स्तृहति	श उ
स्तेन	१०	चौर्ये	स्तेनयानि धनं स्तेनः	क त
स्तेप	१०	क्षेपे	स्तेपयति	क
स्त्ये	१	शब्दसंवाते	स्त्यायनि लोकः	
स्तोम	१०	श्लाघायां	स्तोमयति स्तोमः	क त
स्थग	१	संवरणे	स्थगति	म ए
स्थल	१	संचयं—स्थाने	स्थलति धर्मं मुनिः स्थल	ज
			स्थली	
स्थूल	१०	परिवृंहणे	स्थूलयति स्थूलः ला लं	क त ड
स्निह	१०		(इति णिह)	क
स्पद	१	किञ्चिच्चलने	स्पदनिवातन	इ

धातु.	गण	अर्थ	उदाहरण.	अनुबन्ध.
स्पृद्ध	१	परपराभवेच्छायां	स्पृद्धते कर्णोर्जुनं स्पृद्धा	ड
स्पर्श	१०	संघर्षे	स्पर्शयते	क ड
स्पश	१	ग्रहणे लेपे	स्पशति (वा) स्पशते	अ
		बाधने ग्रंथेच	स्पशः	
स्पृ	९	प्रीतिरक्षाप्राणनेषु	स्पृणोति	म
स्पृश	६	संस्पर्शे	स्पृशति पुत्रं पिता	श ओ
स्पृह	१०	ईप्सायां	स्पृहयति गंगायै मुनिः	क त
			स्पृहा	
स्फट	१	भेदे	स्फटति	इ
स्फट	१०	भेदे	स्फटयति	क
स्फर	६	स्फुर्त्तो चले	स्फरति	
स्फल	६	स्फुर्त्तो-चाले.	स्फलति	श
स्फाय	१	वृद्धौ	स्फायते स्फाय स्फा- ति (वा) स्फायति	ई अ
			स्फातः स्फातवान्	
स्फिट	१०	वृत्त्यां-अनादरेहिसे	स्फेटयति	
स्फुट	१	विकसने	स्फोटते (वा) स्फोटति	अ
			कुसुमं	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
स्फिट्	१०	हिंसायां	स्फिटयति नकुलः सर्पं वने	क
स्फुट	६	विकशने	स्फुटति पुष्पं स्फुट टा टं	श शि
स्फुट	१	विसरणे	स्फोटति पुष्पं	इरू
स्फुट	१०	विसरणे	स्फोटयति	क त
स्फुट	१०	भेदे	स्फोटयति	क
स्फुट	१०	परिहासे	स्फुटयति भगिनी पतिं- श्यालः	क इ
स्फुट्	१०	अनादरे	स्फुटयति	क
स्फुट	१	विकशने	स्फुटयति	इ
		विशरणेच		
स्फुड	६	संवृत्तौ	स्फुडति	श
स्फुड	१०	परिहासे अनृतभा- षणेच	स्फुडति (वा) स्फुड- यति	इ कि
स्फुर्	६	स्फुरणे—संचलनेच	स्फुरतिनेत्रं	श शि
स्फुञ्	१	विस्मृतौ	स्फुञ्जति विष्णुं भोगी	आ
स्फुज्	१	वज्रनिर्घोषे	स्फुज्जति वज्रः	टु औ आ
स्फुल	६	स्फूर्त्तौ चये चले	स्फुल्यति	श शि
स्मि	१	ईषद्भासे	स्मयते स्मयः स्मितं	ङ
स्मि	१०	अनादरे	स्मययति	क

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
स्मिट	१०	अनादरे स्नेहे	स्मेट्याति	क
स्मील	१	निमेषणे	स्मीलति	
स्मृ	१	आध्याने	स्मरति सपितृगृहं	
स्मृ	१	चिताया	स्मरति अपम्मार.	म
स्पद	१	किञ्चिच्चलने	स्पदतेलांचने	इ ड
स्पन्द	१	स्त्रवणे	स्पन्दते जल कलशात्	उ व ड लृ
स्यम	६	वनने	स्यमति	प ण उ
स्यभ	१०	वितर्के	स्यामयति (वा) म्याम यते विप्र	क ज
स्यम	१०	वाने	स्यमयति	क त
स्यल	१०	वितर्के	स्यालयति	क
स्त्रक	१	गत्या	स्त्रकते	क इ
स्त्रह	१	विश्वासे	स्त्रहते	ड उ लृ औ
स्त्रभ	१	विश्वासे	स्त्रभते मित्रेनर	ड उ लृ
स्त्रभ	१	प्रमादे	स्त्रभते विद्यायै मूर्ख	ड उ
स्त्रंस	१	प्रमादे	स्त्रंसते स्वार्थे लोक	ड उ
स्त्रस	१	भवत्प्रसने	स्त्रंसते वृक्षात्पत्र स्वस्त ता त	उ ड लृ
स्त्रिभ	१	हिंसे	स्त्रिभति	उ
स्त्रिम्भ	१	हिंसे	स्त्रिम्भति	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
स्त्रि	४	गतिशोषणयोः	स्त्रीव्यति रविः पयः स्त्री- व्यतियात्रायै गंगा सि- ष्णामुः	उ य
सु	१	श्रुतौ—गतौ	सुवति	
स्रक्	१	गतौ	स्रक्ते	ऋ ङ
स्रै	१	पाके	स्रायति दुग्धं	
स्रिट्	१	स्नेहे	स्रिटति	
स्वग	१	मपणे	स्वंगति	इ
स्वञ	१	आलिङ्गने	स्वञते	ङ ओं व
स्वद्	१	आस्वादने	स्वदते	ङ
स्वद्	१०	आस्वादने	(आ उपसर्गे) आस्वाद- यति पयोयतिः	क
स्वन	१	शब्दे	स्वनति	ण
स्वन	१०	शब्दे	स्वनयति	क त
स्वन	१	शब्दे	स्वनयति (वा) स्वान- यति भेरीं नटः	मि
स्वन	१	अवतंसने	स्वनयति केशं कुंकुमेने नारी	क
स्वव	१०	आक्षेपे	स्ववयत्यर्जुनं कर्णः	क त
स्वर	१०	आक्षेपे	स्वरयति	क त
स्वर्द	१	आस्वादने	स्वर्दते गुडं बालः	

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
स्वर्त्त	१०	गतौ आतके	स्वर्त्तयते	क
स्वस्क	१	गत्या	स्वस्कते	ड
स्वाद	१	आस्वादे	स्वादते स्वादु	
स्वृ	१	शब्दोपतापयो	स्वरति	
स्वृ	९	हिंसने	स्वृणाति (वा) स्वृणीते	ग गि ज
स्वेक	१	गत्या	स्वेकते	ड ऋ
हट	१	त्विष्टि	हटतिचद्र. हाटक	
हट	१	बलात्कारे (वा)	हटतिराजा	
		फीलमन्धे, पुतौ		
हद	१	पूरीपोत्सर्गे	हदतेरोगी	ड
हन	२	हिंसागत्यो	हन्ति हनति अहनत्	ल
			जवान कंसकिलवासुदेवः	
हम्म	१	गतौ	हम्मति	
हय	१	गतौ क्रमे	हयति हयः हायनं	
हर्ष्य	१	कलमे-गतौ	हर्ष्यति	
हल	१	विलेखे	हलति	
हस	१	हसने	हसति हसः हासः हास्यं	ए
हा	३	गतौ	जिहीते	लि ड ओ
हा	३	त्यागे	जहाति गेहं यतिः	लि क ओ
हि	५	गतौ वर्द्धने	हिनोति	न
हिक	१	अव्यक्तेशब्दे	हिकति (वा) हिकते	ज

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
हिक्र	१०	हिंसायां	हिक्रयते.	हिक्रा क ड
हिड	१	अनादर-गतौ	हिडते	ऋ ड इ
हिढ	१	आक्रोशे	हेढति चोर भयान्नरः	
हिढ	९	भूतप्रादुर्भावे	हेङ्णाति	ग
हिल	६	हावकरणे	हिलति	हेला श
हिल्लोल	१०	दोलने	हिल्लोलयति	क त
हिव	१	प्रीतौ	हिवति	इ
हिस	१-१०	हिंसायां	हिंसति (वा) हिंसयति	कि इ
हिस	७	हिंसायां	हिनस्तिरिपुं हिंसा	ध इ
हु	३	दानादनयोः प्रीण- नेच	जुहोति पायसं विष्णवे जटाधरः सन्जुहुधीहपा- वकं जुहोति सवर्ष- ल्याग्निः	लि
हुड	१	संघाते, वर्णेच	हुडते	इ ड
हुड	६	संघाते मग्ने	हुडति धान्यं	श शि
हुडे	१	गतौ	होडति	ऋ
हुल	१	गतौ छदि	होलति	ज
हूर्छ	१	कौटिल्ये	हूर्छति मलः	आ
हूड	१	गतौ	हूडते	ऋ ड
हू	१	हरणे	हरति (वा) हरते गंधं वायुः	व

धातु	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
हृ	३	प्रसह्यकरणे	महर्त्ति परनारीं दुष्टः	लि र
हृप	१	अलोके	हृषति खलः सार्धुं	उ मि
हृप	४	तुष्टौ	दृश्यति दृष्ट. टा टं दृष्टिः	य उ मि इ
हेट	१	बाधायां	हेटति	
हेठ	१	बाधायां	हेठतेरिपुं बली हेठः	ङ ऋ
हेड	१	वेष्टने	हेडति	म
हेड	१	अनादरे, गतौ	हेडते	ऋ ङ
हेप	१	गतौ	हेपते	ऋ ङ
हेप	१	अव्यक्तेशब्दे	हेपते हयः हेपा	ङ
होड	१	अनादरे, गतौ	होडते	ऋ ङ
होड	१	गतौ	होडते	ऋ ङ
न्हु	२	अपनयने	हुतेदुर्जनं सुजनः	ल ङ
ह्रल	१	चलने	ह्रलनि	म
न्हग	१	संवरणे	न्हगति	म ऐ
न्हणी	११	रोषे लज्जायां च	न्हणीयंतकलहांतरिताप- रासक्ताय	ङ ट
न्हप	१	गतौ (अथवा) हय- शब्दे	न्हपते न्हपति	ऋ ङ
न्हस	१	शब्दे	न्हसति	
न्हाद	१	अव्यक्तेशब्दे	न्ह्यादतेमेषः	ङ
न्ही	३	लज्जायां	जिन्हेतियवनसेवयाद्विजः	लि

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
ह्रीछि	१	लज्जायां	ह्रीछिति	
ह्रुड	१	गतौ	ह्रुडते	क ड
ह्रूड	१	गतौ	ह्रूडते	क ड
ह्रौड	१	गतौ	ह्रौडते	क ड
लहग	१	संवरणे	लहगति	म ए
लहप	१०	न्यक्तायांवाचि	लहपयति संस्कृतं मनीषी	क
लहस	१	शब्दे	लहसति	
लहाद	१	मुखे स्वने	लहादते पिता पुत्रेण आ-	ड
			लहादः	
ह्रल	१	चलने	ह्रलति ह्रैलयति	म
ह्रू	१	कौटिल्ये संवरणेच	ह्ररति खलः	
ह्रै	१	स्पर्द्धायां--वाचि	ह्रयति (वा) ह्रैयते चाणू-	व ए
			रः कृष्णं आह्वयते पुत्रं	
			पिता आह्वानं	
		सौत्राः	(सूत्राणि)	
उड	१	संहतौ	ओडति	
उड	१	आघाते	उडति	
उर	१	गतौ	ओरति	
उल	१	दोहे	ओलति	
अहश	१	गतिस्मृत्योः	अर्शति	

धातु.	गण	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
कज	१	रुहे	कंजति	इ
कप	१	चलने	कपति	
कर्क	१	हासे	कर्कति	
कुठ	१	छिदि	कोठति	
कुत	१	आस्तृतौ	कोतति	
क्षद	१	शुभे-शोभे	क्षन्दति	इ
क्षद	१	संवृतौ	क्षदति	
क्षुप	१	स्वादे	क्षोपति	
चक	१	भ्रांतौ	चंकति	इ
डिम	१	हिसे	डेमति	
तद्र	१	सादे-मोहे	तंद्रति	तंद्री इ
तल	१	गतौ	तलति	
धम	१	ध्वाने	धमति	
नट	१	साधे	नटति	
नड	१	घाते	नडति	
नूप	१	हिंसने	नूपति	
पज	१	रोधे	पंजनि	इ
पीय	१	प्रीणने	पीयति	
पुत्त	१	गतौ	पुत्तति	
मिष	१	रुग्जये	मेषति मिषजः मेषजं	
मज	१	ध्वनौ	मंजति	इ

धातु.	गण.	अर्थ.	उदाहरण.	अनुबन्ध.
मट	१	सादे	भटति	
युप	१	भजने	योषति योषित्	
रिफ	१	कुत्सने	रेफति रेफः फा फं	र
रश	१	स्वने	रशति	
लत	१	वाते	लतति	
लुल	१	विमर्द्धे	लोलति	
वट	१	स्तेये	वटति	
वड	१	आरोहणे	वडति	
विभ	१	खे	वेभते	
शल्ल	१	गतौ	शल्लति	
शिक	१	सेचने	सेकति सिकता	
सातशात	१०	मुखे	सातयति शातयति	
सुद	१	शोभे	सुन्दति सुन्दरः रा, रं	इ
स्कंभ	५-९	रोधने	स्कभ्रोति (वा) स्क- भ्राति	न ग उ
स्कुंभ	५-९	रोधने	स्कुभ्रोति (वा) स्कु- भ्राति	न ग उ
स्तंभ	५-९	रोधने	स्तभ्रोति (वा) स्तभ्राति	न ग उ
स्तुभ	५-९	रोधने	स्तुभ्रोति (वा) स्तु- भ्नाति	न ग उ

अनुबन्धसंकेतार्थसूचना.

अनुबन्ध.	अर्थ.	कौमुदी		सारस्वत.	
		वृ.	प्र.	वृ.	प्र.
अ	अङ्गितिकारलुच्चारणार्थः	२	१	२	१
आ	आकारेत्त्वंप्रफुल्लित्वादौ आदितश्चेति इङ्भावार्थम्	३	२	३	२
इ	इदित्त्वं नन्दतीत्यादौ इदितोनुम् धा- तोरितिनुमर्थम्	२	१	२	१
इरू	इरित्त्वं अच्युतत् अच्योतीत् इत्या- दौ इरितोवेति झेरङ्गविकल्पार्थम्	२	१	२	१
ई	ईदित्त्वं उन्नत्तः इत्यादौ श्वीदितो- निष्ठायां इतिङ् निषेधार्थम्	३	२	३	२
उ	उदित्त्वं शमित्वा शांत्वा इत्यादौ उ- दितोवा इतिङ् विकल्पार्थम्	३	८	३	९
ऊ	ऊदित्त्वं स्वरति सूति सूयति धृञ्- दितोवा इति सेद्धा सेधिता इत्यादौ इङ्गविकल्पार्थम्	२	१	२	१
ऋ	ऋदित्त्वं अलुल्लोक्त इत्यादौ नागो- पिशास्वृदितामिति ऋह्रस्वनिषेधार्थम्	२	१०	२	२७
ॠ	ॠदित्त्वं इतिप्यन्ते ऋह्रस्व विकल्प सूचकः संकेतः	२	१०	२	२६
लृ	लृदित्त्वं अगमत् असदत् इत्यादौ पुषादिद्युताङ्गुदितः परस्मैपदेषु इति झेरङ्गार्थम्	२	१	२	१

अनुबन्धसंकेतार्थसूचना.

अनुबन्ध.	अर्थ.	कौमुदी.		सारस्वत.	
		वृ.	प्र.	वृ.	प्र.
लृङ्	लृङिति धृतादि गण सूचनार्थः संकेतः	२	१	२	२
ए	एदित्वं अपथीत् अमथीत् इत्यादौ ह्यतःक्षणश्चसजागृणिश्च्येदितां इति वृद्धचभावार्थ	२	१	२	१
ऐ	ऐकारो भ्वादिगणे यजादित्वात्संप्रसारण सूचनार्थः संकेतः	२	१	२	१
ओ	ओदित्वं पीन इत्यादौ ओदितश्चेति-निष्ठानत्वार्थम्	३	२	३	२
औ	औकार आर्द्धधातुकेऽणनिषेधसूचनार्थः	२	१	२	१
क	क इति अंतिमस्य चुरादिगणस्य संकेतः	२	१०	२	२६
कि	कि इति प्रथमदशमगणयोः प्रयोग-विकल्पसूचनार्थः संकेतः	२	१०	२	२६
क्ष	क्ष इति अक्षादिगणसंकेतः	२	२	२	४
ग	ग इति त्रयादि गण सूचकः संकेतः	२	९	२	२३
गि	गि इति नवम गण मध्येष्वादि गण-सूचकः संकेतः	२	९	२	२३
घ	घ इति अदादिगणांतःपातिरुदादि गणसूचकः संकेतः	२	२	२	४
ङ	ङित्वमनुदात्तङित इत्यात्मने पदार्थम्	२	१	२	१

अनुबन्धसंकेतार्थसूचना.

अनुबन्ध.	अर्थ.	कौशुदी.		सारस्वत.	
		वृ.	प्र.	वृ.	प्र.
ज	ज इतिभ्वादिसंज्ञकप्रथमगणांतःपाति- ज्जलादिगणसूचकः संकेतः	२	१	०	०
झ	ञित्त्वंऊर्णेति ऊर्णुते इत्यादौस्वरित- ञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले इत्युभ- यपदार्थम्	२	१	२	१
ञि	ञीत्त्वं इद्ध इत्यादौ जीतःक्त इति वर्तमानेक्त प्रत्ययार्थम्	३	२	३	२
ट	ट इति षोडशप्रकरणरूपक कंड्वा- दिगणसूचनार्थः संकेतः	२	१६	०	०
ठ	द्वित्वंवेपथु रित्यादौ द्वितोऽथुच् इति अथुच् प्रत्ययार्थम्	३	८	३	६
ड	द्वित्वं पक्वित्रममित्यादौद्वितः क्विरि- ति प्रत्ययार्थं केचित् त्रिमक् इति वदन्ति	३	८	३	६
ण	ण इतिभ्वादिसंज्ञकप्रथमगणांतःपाति- फणादिगण सूचकः संकेतः	२	१	२	१
त	त इति अंते अकारलोपाभाव सूचकः संकेतः	२	१०	२	२६
द	द इतितनादिसंज्ञकअष्टमगण सूचकः संकेतः	२	८	२	१९

अनुबन्धसंकेतार्थसूचना.

अनुबन्ध	अर्थ.	कौमुदी.		सारस्वत.	
		वृ.	प्र.	वृ.	प्र.
ध	ध इति रुधादिसंज्ञकसप्तमगण सूचकः संकेतः	२	७	२	१६
न	न इति स्वादिसंज्ञकपंचमगणसूचकः संकेतः	२	५	२	१३
प	प इतितुदादिसंज्ञकषष्ठगणांतःपातिमुचादिगणसूचकः संकेतः	२	६	२	२०
भ	भ इति दिवादिसंज्ञकचतुर्थगणांतःपातिशमादिगणसूचकः संकेतः	२	४	२	१०
म	म इति भ्वादि संज्ञकप्रथमगणांतःपातिघटादिगणसूचकः संकेतः	२	१	२	२
मि	मि इति घटादिगणस्थत्वे विकल्पसूचकः संकेतः	२	१	०	०
य	य इति दिवादिसंज्ञकचतुर्थगण सूचकः संकेतः	२	४	२	१०
र	र इति श्रुति मात्रस्थ धातुसूचकः संकेतः	२	२	०	०
ल	ल इति अदादिसंज्ञकद्वितीयगणसूचकः संकेतः	२	२	२	४
लि	लि इति व्हादिगणसूचकः संकेतः	२	३	२	७
लु	लु इति अदादिसंज्ञकद्वितीय गणांतःपातिस्वपादिगणसूचकः संकेतः	२	२	२	४

अनुबन्धसंकेतार्थसूचना.

अनुबन्ध.	अर्थ.	कौमुदी.		सारस्वत.	
		वृ.	प्र.	वृ.	प्र.
व	व इति भ्वादिसंज्ञक प्रथम गणांतः पातिवृतादिगण सूचकः संकेतः	२	१	२	२
श	श इति तुदादिगणसूचकः संकेतः	२	६	२	२०
शि	शि इति तुदादिसंज्ञक षष्ठ गणांत पातिकुटादिगणसूचकः संकेतः	२	६	२	२१
ष	पिस्त्वं जरा त्रपा इत्यादौ स्त्रधिकारे पिङ्गिदादिभ्योऽङ् इति अङ् प्रत्य- यार्थम्	३	८	३	८

यत्र (ङ) कारोऽथवा (ञ) कारोऽनुबन्धो नागच्छेत्तत्र परस्मैपदं विज्ञेयं
यत्रगणसूचकोऽक्षरो नागच्छेत्तत्र भ्वादिगणो विज्ञेयः ये वकारवत्सु
धातुषु न ज्ञायन्ते ते वकारवत्सु विज्ञेयाः ये पकार वत्सु न ज्ञायन्ते ते
सकारवत्सु विज्ञेयाः

एतद्धातुमञ्जर्याख्यग्रन्थस्यान्ते सौत्रधातवोविज्ञेयाः

गणसंकेतार्थसूचना.

१ भ्वादि.	२ अदादि	७ रुधादि.	८ तनादि.
३ जुहोत्यादि	४ दिवादि.	९ क्रयादि.	१० चुरादि.
५ स्वादि.	६ तुदादि.	११ कङ्धादि.	

शुद्धिपत्रम्.

—*१७७*—

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१	८	अङ्गति	अङ्गति
२	२	गतिनिन्दारभजवेषु	गतिनिन्दारभजवेषु
२	२	अञ्चति	अञ्चति
॥	४	अञ्ज	अञ्च
॥	१७	अड	अह
॥	॥	अङ्गनोति	अङ्गहोति
६	११	घा	न्धा
॥	१४	अम्भते	अम्भते
४	६	याचकोऽर्थ	याचकोऽर्थ
॥	७	अर्द	अर्द
॥	८	अर्दति (वा) अर्दते	अर्दति(वा)अर्दते
॥	९	अर्दयति अर्दते	अर्दयति अर्दते
॥	॥	अर्द	अर्द
॥	११	अर्दति	अर्दति
॥	१२	नार्दति	नार्दति
॥	९	अर्द	अर्द

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
११	१०	अब्बं	अर्ब
११	११	अर्व्व	अर्व
११	१३	अर्दयति (वा) अर्द- यते	अर्दयति(वा)अर्दयते
११	१४	अर्व्वति	अर्बति
११	१५	अर्व्वति	अर्वति
५	२	केशां	केशान्
११	६	अंशः	अंश
११	९	अंश	अंशः
११	१०	दीप्तिगतिग्रहेषु	दीप्तिगतिग्रहेषु
६	१०	इच्छायां	इच्छाया
११	१४	अधिउपसर्गे	अधिउपसर्गे
७	१	इध	इन्ध
११	३	इर्प्यायां	ईर्प्यायां
११	४	इरज	इरज्
७	४	इर्प्यायां	ईर्प्यायां
८	७	इन्तति	ईन्तति
९	४		१
११	११	उच्छे	उच्छे
११	११	उच्छति	उच्छति
११	५	निवासे	निवासे

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
"	"	उछति	उच्छति
"	९	उदकः	उदकं
१०	१	आछादने	आच्छादने
"	२	उर्दते स्वर्णं	ऊर्दतेस्वर्णं
"	६	उंहति	ओहति
"	१३	आछादने	आच्छादने
११	२	ऋक्षणोति	ऋक्षिगोति
"	३	ऋच	ऋच
"	"	ऋचति	ऋचति ऋक्
"	४	ऋछ	ऋच्छ
"	७	ऋच्छति	ऋच्छति
"	८	उर्जने	उपार्जने
"	९	भर्जे	भर्जने
"	"	ऋजते	ऋज्जते
"	१६	घा घं	द्वा द्वं
"	१८	घा घं	द्वा द्वं
१२	४	ऋषिः	ऋषिः
"	१४	शोषणालर्मथयोः	शोषणालर्मथयोः
१३	७	केशं	केशान्
१४	९	काण	काणः
१५	१४	१	१०

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
११	५	कशति समूलकाशं	कपति समूलकार्षं
"	८	बध्ननयोः	बन्धनयोः
"	९	कालोपदेशे	कलोपदेशे
१६	१६	भयभीषयोः	भयभीषणयोः
१७	१६	काञ्ची	काञ्ची
"	१८	संकाच	संकोचः
१८	१	कुञ्ज	कुञ्च
"	७		१०
"	१८	कुडते	कुण्डते
१९	१०	स्मृतै	स्मृतौ
"	१४	लुभ	कुम्भ
२०	७	कृष्णाति	कुष्णाति
"	१२	वीस्मारेण	विस्मारणे
२१	११	कृञ्ज	कृञ्जते
२३	७	क्रन्दते	क्रन्दते
"	९	आप्रत्यये	अप्रत्यये
२४	१	क्रुञ्च	क्रुञ्च
"	"	कौटिल्यारूपी भावयोः	कौटिल्यारूपीभावयोः
"	"	क्रुञ्चेति	क्रुञ्चति
"	५	धा धं	द्वा द्वं
"	९	दुर्गन्धार्द्रत्वयोः	दुर्गन्धार्द्रत्वयोः

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
"	१३	क्र	कू
"	"	क्रुणाति क्रुणीते	कूनाति कूनीते
२५	२	ना नं	न्ना न्नं
"	,	परिवेदने	परिदेवने
"	<	ता तं क्लन्ति	न्ता न्तं क्लान्तिः
"	७	कीव	क्लीव
"	१९	कृच्छ्रजीवेन	कृच्छ्रजीवने
"	"	क्षञ्जयाति	क्षञ्जयाति
२६	५	शाक्तौ	शक्तौ
"	१४	क्षि	क्षी
२७	१	माचेने	मोचने
"	१७	जमः	जनः
२८	५	क्षुपधं धा धं	क्षुब्धः ष्धा ष्धं
२९	३	खच	खज
"	६	खट्टयवि	खट्टयति
३०	३	दशने	दंशने
"	"	खर्व्व	खर्व्व
"	"	खर्व्वति खर्व्वः	खर्व्वति खर्व्व
"	४	खर्व्व	खर्व्व
"	"	खर्व्वति	खर्व्वति
३२	१२	गर्ज्ज	गर्ज

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
"	"	गर्जति	गर्जति
"	१३	गर्ज	गर्ज
"	"	गर्जयति	गर्जयति
"	१४	गर्द	गर्द
"	"	गर्दति	गर्दति
"	१५	गर्दयति	गर्दयति
"	१५	गर्द	गर्द
"	१६	गर्दयति	गर्दयति
"	१७	गर्व	गर्व
"	"	गर्व	गर्वति
"	१८	गर्व	गर्व
"	"	गर्वति	गर्वति
३३	१	गर्व	गर्व
"	१६	शब्दे	अव्यक्तेशब्दे
३४	२	गुञ्जा	गुञ्जा
"	३	गुष्ठयति	गुष्ठयति
"	९	क्रोडे	क्रोडायां
"	१९	गुर्द	गुर्द
"	"	गुर्दति	गुर्दति
३५	१	गुर्द	गुर्द
"	"	निकेतने.	पूर्वनिकेतने

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	भशुद्ध.	शुद्ध.
॥	॥	गुर्दयति	गुर्दयति
॥	७	गुर्द	गुर्द
॥	७	गुर्दते (ङ) गुर्दयति	गुर्दति (वा) गुर्दयति
॥	१६	गतिचालयोः	गतिचलनयोः
३६	१	अन्वेच्छायां	अन्विच्छायां
३७	९	घग्व	घव
॥	॥	घग्वति	घवति
॥	११	घटयति	घाटयति
॥	१३	घट्टः	घट्ट
॥	१७	घर्क्	घर्व
॥	॥	घर्क्वति	घर्वति
३८	१३	शद्वे	अविशद्वे
॥	१८	घूर्णति क्षीवः	घूर्णते क्षीवः
३९	१२	व्यसने	व्ययने
॥	॥	चक्रयति	चक्कयति
४०	९	१	१०
॥	॥	चनति	चनति (वा) चान- यति
॥	१३	चपति (वा) चपयति	चम्पति (वा) चम्प- यति
४१	४	असंशये	संशये

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अंशुख.	शुख.
"	६	चर्चते	चर्चति
"	"	चर्च	चर्च
"	"	परिभाषणतर्जनयो.	परिभाषणभर्त्सनयोः
"	"	चर्चति	चर्चति
४१	७	चर्च	चर्च
"	"	चर्चयते चर्चा	चर्चयते चर्चा
"	८	चर्व	चर्व
"	"	चर्वति	चर्वति
"	९	चर्व	चर्व
"	९	चर्वति (वा) चर्वय-	चर्वति (वा) चर्वयति
"		ति चर्वणं	चर्वणं
४२	९	चययति	चययति (वा) चय-
"			यति
"	१३	संवेदने	संचेतने
"	१७	हावकृतौ	भावकृतौ
४३	१	आमर्षणे	आमर्षणे
"	८	न्यसने	न्ययने
"	११	चाटयति	चोटयति
"	२०	हावकरणे	भावकरणे
४४	६	चुव	चुव
"	७	चुर	चूर

पृष्ठांक.	पंचयंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
॥	११	हावकरणे	भावकरणे
४६	६	हानौ	हासे
॥	१०	उर्जने	ऊर्जने
॥	१६	११	१०
४७	७	चर्व	चर्व
॥	॥	परिभाषणतर्जनयोः	परिभाषणतर्जनयोः
॥	९	परिभाषणतर्जनयो.	परिभाषणतर्जनयोः
४७	९	मर्ज	जर्ज
४७	॥	परिभाषणतर्जनयोः	परिभाषणमर्त्सनयोः
॥	॥	नर्जति	जर्जति
४८	३	जंसयति	जंसयति जंसति वा
४९	४	परितर्कणे	परितर्कणे
॥	७	जूर्व	जूर्व
॥	॥	जूर्वति	जूर्वति
॥	११	न्यक्कारे	न्यक्कारे
॥	१४	जीर्ण	जीर्णः
॥	१६	जीर्णः	जीर्णः
॥	१७	जरति (वा) जरयति	जरति (वा) जारयति
६१	९	परिभाषणतर्जनयो.	परिभाषणमर्त्सनयोः
॥	११	शीर्यति	शीर्यति
॥	१२	टक्कयति टक्कःविटक्कः	टक्कयति टक्कः विटक्कः

पृष्ठांक.	पक्षयक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
५२	१९	नखति	नङ्खति
५३	९	ग्रह्शब्दे	ग्रहत्वे शब्दे च
"	१०	णर्द्ध	णर्द्ध
"	१०	नर्द्धः	नर्द्ध
५४	१	शुद्धौ	शुद्धौ
"	"	प्रणिक्ते	प्रणिक्ते
"	९	निस्ते	निस्ते
"	१२		स्यौल्यै
५५	६	तगति	तङ्गति
"	७	संकुची	संकोचने
५६	३	तपेत (वा) तापयते	तपति (वा) तापयति
"	११	तर्ज्जयते	तर्जयते
"	१३	तर्ब्ब	तर्ब्ब
"	"	तर्ब्बति	तर्ब्बति
५७	४	जिघांसायां	गतौ
"	५	जिघांसायां	गतौ
"	६	स्कन्दनेच	आस्कन्दने च
"	८	क्षमाय च	क्षमायां च
"	१६	वार्ता	वार्ता
५८	२	समाप्तौ	कर्मसमाप्तौ
"	४	गतिवृद्धिर्हिंसापूर्तेषु	गतिवृद्धिर्हिंसापूर्तेषु

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
११	१९	स्तृतौ	आवरणे
१९	४	तर्हने	तर्दने
११	७	तुपति	तुम्पति
११	११	भोजने	भोजनेन
१०	१०	चरणे	त्वरणे
११	१०	तूर्यते	तूर्यते
११	१	तर्पति (त) तर्पयति	तर्पति (त) तर्पयति
११	१०		६
११	१०	तृहति	तृंहति
१२	१०	ग्रहनिषेधेद्युतौ	ग्रहनिषेधे द्युतौ
१३	१	त्वक्षति	त्वक्षति
११	३	गतिकम्पयोः	गतिकम्पयोः
११	१५	दध	दध
११	११	दध्नाति	दध्नाति
११	१६	दण्डनीपातने	दण्डनिपातने
१४	१२	दश	दंश
११	१३	दश	दंश
११	१४		१
११	१७	दंसयते गात्रं	दंसयते दंसति वा गात्रं
१९	६	आर्जवे	आर्जवे
११	८	वर्द्धकि	वर्द्धकि।

पृष्ठांक.	पत्तयक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
६६	१३	व्रेतादेशे च	व्रतादेशे च
६७	१२	सहज्ञाय	सयज्ञाय
"	१	उपतपे	उपतापे
"	१०	आदाने	आदरे
"	"	१-१	१-१०
६८	१	दृफ	दृफ
"	"	दृफति	दृम्फति
६९	१	निद्राया	निद्रायां
"	४	द्राघ	द्राघ
"	"	द्राघते	द्राघते
"	१३	द्राहः	द्रोहः
"	१६	दृ	दृ
"	"	द्रायति. रात्रौ लोकः	द्रायति रात्रौ लोकः
७०	१	द्वेषति (वा) द्रपते	द्वेषति (वा) द्वेषते
"	६	२	३
"	"	शुद्धौ च	शुद्धौ च
७१	१	५	१
"	५	अधारे	आधारे
७१	१२	हिंसायां	हिंसायां
७२	१	कपेन	कम्पने
"	४	केसरपुष्पंजातं	केसरपुष्पजातं

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
११	११	कुंकुमे जनः	कुंकुमेन जनः
७३	४	धर्षयते	धर्षयते
११	८	कपर्दिनं	कपर्दिनं
११	१६	उत्क्षेमे	उत्क्षेपे
११	१७	ध्वणति	ध्वणति
७४	४	घाड	घ्राड
११	७	गतिस्धैर्ययोः	गतिस्धैर्ययोः
११	१९	धनुर्धन्वी	धनुर्धन्वी
७६	३	याञ्चोपतापैश्वर्यासीःपु	याञ्चोपतापैश्वर्याशीःपु
११	९	याञ्चोपतापैश्वर्याशीःपु	याञ्चोपतापैश्वर्याशीःपु
११	९	सचने	सेचने
११	१३	न	नृ
११	१४		नृ
११	२०	पतं गोगगने	पतंगो गगने
८०	८	भापद्वार्थे	भापार्थे
११	१४	ह्रीशि	ह्रीशे
८१	८	शिभुः	शिशुः
८२	८	श्रीप्स	भीप्सः
८३	७	पूप्ययति	पूप्ययति
८७	१	फक्कति	फक्कति
८८	२	वधते	वधत

पृष्ठांक.	पत्तयक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
८८	१०	बब्बे	वर्षे
"	"	बब्बेति	वर्षेति
"	"	वधौ दीप्तौ च	वधे दीप्तौ च
"	१४	दानवधनिरूपेषु	दानवधनिरूपणेषु
९०	११	ब्रूस	ब्रूस
"	१७	भज्ज	भज्ज
९२	८	दधिभांड	घाघिभाण्डं
"	१२	भयः	भयं
९५	११	मञ्जु	मञ्च
"	"	मञ्जति	मञ्जति
९८	१६	मार्ज	माज
"	"	मार्जयति मार्जारः	मार्जयति मार्जारः
९९	११	मेवाहिंसयोः	मधाहिंसयोः
१००	१७	आक्षेपप्रमर्दनयोः	आक्षेपप्रमर्दनयोः
१०१	१४	कंटेकन वार्टी	कष्टकैवार्टी
१०३	३	मृदनाति	मृदनाति
१०५	७	देवपूजासंगतिकरणदा- नेषु	देवपूजासंगतिकरण- दानेषु
"	१६	यच्छति पापात्साधुः	यच्छति पापात्साधुः
१०६	३	याज्ञायां	याज्ञायां
"	१२	युच्छति	युच्छति

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
"	२०	युध्यत	युध्यते
१०७	१	यूपपते	यूपते
१०८	९	पाशंडी	पापंडी
"	१४	रामश्य	रामस्ये
१०९	१२	रंहयति	रंहति
"	१६	राद्यतेयुध्वायवीरः	राद्यते युद्धाय वीरः
"	१४	संसिद्धौ	वृद्धौ
११०	९	रिक्तेरोगी	रिक्ते रोगी
११०	१०	कत्थनयुद्धनिन्दाहिंसा-	कत्थनयुद्धनिन्दाहिं-
		दानेषु	सादानेषु
१११	७	द्युतौ	द्युतौ
"	१७	गत्यालस्यास्तेयखोटे	गत्यालस्यस्तेयोखोटे
११२	३	गोप्यः (यथा)	गोप्यः (अथवा)
"	९	रुणद्धि	रुणद्धि
"	१२	रोहति मृत्तिकाया घटः	रोहति मृत्तिकाया घटः
११३	९	प्लवे गतौ च	प्लवगतौ
"	१९		गतौ
"	१६		गतौ
"	१८	स्वादापने	आस्वादाने
११४	८	भर्त्सने	भर्जने
"	९	भर्त्सने	भर्जने

पृष्ठांक.	पत्तयक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
११६	१	श्लेषणविलसयोः	श्लेषणविलासयोः
"	"	लपति	लसति
"	८	भर्गे च	भर्जने
"	९	भर्गे च	भर्जने
"	९	लांजते	लांजति
"	१६	१	१०
११७	१३	लुट	लुट
"	"	लुव्यति	लुव्यति
११८	२	लुट	लुष्ट
"	२	लुटति (वा) लुव्यति	लुष्टति (वा) लुष्टयति
"	१०	लण्डयति	लुण्डयति
११९	१०	स्वलने च	स्वलने च
"	११	पूर्वभावे स्वने च	पूर्वभावे स्वप्ने च
१२२	८	इप्सायां	ईप्सायां
१२३	२	वद्ध	वर्ध
"	"	पूर्तिछेदोः	पूर्तिछेदनयोः
"	"	वद्धयति	वर्धयति
१२४	१४	मुत्ताप्तिगतिसवोसु	मुत्ताप्तिगतिसेवासु
१२५	३	वाञ्छति	वाञ्छति
"	११	विच्छ	विच्छ
"	११	विच्छति	विच्छायति

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
"	१३	विष्ठ	विच्छ
"	१२	विच्छयति	विच्छयति
"	१३	विवेक्ति	वेवेक्ति
१२६	१२	विप्र	विष्ठ
"	१२	विवेप्रयति	वेच्छयति
१२७	७	वीरयति	वीरयते
१२८	६	वृणुते	वृणुते
१२८	८	संभक्तो	वरणे
१२०	२	व्यचति	विचति
"	१५	संस्कृतौ गतौ त्यागेच	मार्गसंस्कारगत्योः त्या- गे च
"	"	त्रि	त्रो
१२१	७	वृीनाति	वृिनाति
"	१४	शर्वति	शर्वति
१२२	४	संस्कारगत्योः	असंस्कारगत्योः
१२३	२	सवुः	संवुः
१२५	५	शिखति	शिखति
१३६	१७	शुश्वः	शुद्धः
१३७	५	शुप	शुप
"	१०	सस्या नविनांवु वाहं	सम्यानि विनांवुवाहं
१३८	२	जलन	जलेन

पृष्ठांक.	पञ्चयंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
११	१५	श्मील	स्मील
११	११	श्मीलति	स्मीलति
१४०	१०	श्रवत्यामद्यटाज्जलं	श्रुणोति
१४२	६	ष्वग	पग
११	१०	सेचते	सचते
१४३	३	सघ्नोति	सघ्नोति
११	८	वैक्लव्ये	अवैकल्ये
१४५	४	भैस्ययोः	ऐश्वर्यदीप्त्योः
११	६	प्राणि गर्भविमोचने	प्राणिगर्भविमोचने
११	९	क्षेपे	प्ररणे
११	१०	क्षणे	क्षरणे
११	१३	पूर्य (वा) शूर्य	पूर्य (वा) पूर्य
११	१७	चालगत्योः	चलनगत्योः
१४६	८	वैक्लव्ये	अवैकल्ये
११	९	वैक्लव्ये	अवैकल्ये
११	१०	ष्टल	ष्टल
११	१६	आर्दीभावे	आर्दीभावे
११	१८	आर्दीभावं	आर्दीभावे
१४७	१	स्तौवि (वा) स्तुते स्ववः	स्तौवि- (वा) स्तुतेवः
११	२	प्रसदे	
११	७	ष्टेव	

पृष्ठांक.	पञ्चयंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
११	७	ष्टेवति	ष्टेवति
११	१२	स्थसति	स्थस्थति
१४८	१६	गात्रप्ररक्षणे	गात्रप्रक्षरणे
११	१९	धैमण	धैमण
१४९	८	सठ स्वठ	सठ स्वठ
११	९	सन्तान क्रियायां	सन्तानक्रियायां
११	११	सर्ज	सर्ज
११	११	अर्जने	अर्जने
११	११	सर्जति	सर्जति
११	१७	सर्व	सर्व
११	११	सर्वति	सर्वति
१९१	५	ऐश्वर्य्य दीप्तयोः	ऐश्वर्य्यदीप्त्योः
११	७	सूक्ष	सूक्ष
११	११	सूक्षति	सूक्षति
११	१०	सूत्रणे	सूत्रेण
१९२	१	आपवे उद्धतै	आप्लवे उद्धतौ
११	९	बाणरैर्जुनः	बाणैर्जुनः
११	११	स्कुन्दते शाखा मृगोवृ-	स्कुन्दते शाखामृगो वृ-
		क्षादृक्षान्तरं	क्षादृक्षान्तरं
११	१२	विदारे	विदारणे
११	१३	चथच लयोः	संचलने

पृष्ठांक.	पंचयंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
॥	१९	इमील	स्मील
॥	॥	इमीलति	स्मीलति
१४०	१०	श्रवत्यामद्यटाज्जलं	श्रुणोति
१४२	६	प्वग	पग
॥	१०	सेचते	सचते
१४३	३	सघोति	सघोति
॥	८	वैक्लव्ये	अवैकल्ये
१४५	४	भैस्ययोः	ऐश्वर्यदीप्त्योः
॥	६	प्राणि गर्भविमोचने	प्राणिगर्भविमोचने
॥	९	क्षेपे	प्रेरणे
॥	१०	क्षणने	क्षरणे
॥	१३	पूर्य्य (वा) शूर्य्य	पूर्य्य (वा) पूर्य्य
॥	१७	चालगत्योः	चलनगत्योः
१४६	८	वैक्लव्ये	अवैकल्ये
॥	९	वैक्लव्ये	अवैकल्ये
॥	१०	ष्टल	ष्ठल
॥	१६	आर्दीभावे	आर्दीभावे
॥	१८	आर्दीभावे	आर्दीभावे
१४७	१	स्तौवि (वा) स्तुते स्ववः	स्तौति (वा) स्तुतेवः
॥	२	प्रसादे	प्रसादे
॥	७	ष्टेव	ष्टेव

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
"	७	ष्टेवति	ष्टेवति
"	१२	स्थसति	स्थस्यति
१४८	१६	गात्रप्ररक्षणे	गात्रप्रक्षरणे
"	१९	धर्मेण	धर्मेण
१४९	८	सठ स्वठ	सठ स्वठ
"	९	सन्तान क्रियायां	सन्तानक्रियायां
"	११	सर्ज	सर्ज
"	"	अर्जने	अर्जने
"	"	सर्जति	सर्जति
"	१७	सर्व	सर्व
"	"	सर्वति	सर्वति
१९१	५	ऐश्वर्य्य दीप्तयोः	ऐश्वर्य्यदीप्तयोः
"	७	सूक्ष	सूक्ष
"	"	सूक्षति	सूक्षति
"	१०	सूत्रणे	सूत्रेण
१९२	१	आपवे उद्धतै	आप्लवे उद्धतौ
"	९	बाणैरर्जुनः	बाणैरर्जुनः
"	११	स्कन्दते शाखा मृगोवृ-	स्कन्दते शाखामृगो वृ-
"		क्षादृक्षान्तरं	क्षादृक्षान्तरं
"	१२	विदारे	विदारणे
"	१३	चथच लयोः	संचलने

पृष्ठांक.	पञ्चयंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१५३	३	स्तृणुतेया सप्ता देहं	स्तृणुते या सप्तदेहं
"	४	आछादने	आच्छादने
"	१४	संचयं-स्थाने	संचये स्थाने च
"	५	स्तृणानि	स्तृणाति
१५४	१०	स्फूर्तौ	स्फूर्तौ
"	११	स्फूर्तौ	स्फूर्तौ
१५५	२	विकशने	विकसने
"	३	विसरणे	विशरणे
"	४	विसरणे	विशरणे
"	८	विकशने	विकसने
"	१०	स्फुटयति	स्फुटति
"	१३	स्फूर्ज	स्फूर्ज
१५६	६	स्पन्द	स्यन्द
१५६	६	स्पन्दत	स्यन्दते
"	७		१
"	"	ध्वनने	शब्दे
"	८	स्यम	स्यम
१५७	५	स्वेकते	स्वेकते
"	११	पयोयतिः	पयो यतिः
"	१७	केशं कुंकुमेने नारी	केशान् कुंकुमेन नारी
१५८	१	आतके	आतंके

पृष्ठांक.	पंक्त्यंक.	अशुद्ध.	शुद्ध.
"	७	त्विष्वि	त्विषि
"	८	हट	हठ
"	"	हंटतिराजा	हठति राजा
"	१०		
१९९	३	चोर भयान्नरः	चोरभयान्नरः
"	९	हावकरणे	भावकरणे
"	१०	दानादनयोः	दानादानयोः
"	१२	सर्वप्रलयाग्निः	सर्व प्रलयाग्निः
"	११	वेर्णच	वरेण च
१९०	३	हृश्यति	हृष्यति